फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 75 संख्याः 116 प्रभात जयपुर, बुधवार 27 नवम्बर, 2024 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

Hounded around the world, the first 'man-made man' took refuge in India

Michael Dillon was the first person to undergo gender confirmation surgery and transition from female to male. His story still holds many lessons.

Toddlers get the idea of possibility

29 नवम्बर को कांग्रेस मंथन करेगी, हरियाणा व महाराष्ट्र की हार के बारे में

उस दिन आहूत सी.डब्ल्यु.सी. की बैठक में राहुल गांधी पर दबाव होगा कि वे कांग्रेस की भावी नीति के बारे में दिशा व राह तय करके बतायें

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 नवम्बर। कांग्रेस 29 नवम्बर को हरियाणा और महाराष्ट्र में अपनी हार पर मंथन एवं चिन्तन करेगी। इन दोनों राज्यों में अपनी जबरदस्त हार एवं वहाँ की राजनैतिक स्थिति पर चर्चा करने के लिये कांग्रेस वर्किंग कमेटी की मीटिंग में इन बिन्दुओं पर चर्चा होनी है।

इस समय राहुल गांधी पर भारी दबाव है कि व पार्टी के आगे के रास्ते की रुपरेखा प्रस्तुत करें तथा बतायें कि पराजयों को रोकने तथा विभिन्न समस्याओं का सामना करने के सम्बंध में पार्टी की क्या योजनाएं हैं।

सूत्रों का कहना है कि राहुल गांधी इस बात से पूरी तरह सहमत नहीं है कि विभिन्न राज्यों तथा लोकसभा चुनावों में एक के बाद एक हुई हारों के पीछे असली दोषी ई.वी.एम. हैं।

लेकिन प्रतिष्ठा बचाने के लिये, उन्हें सलाह दी जा रही है कि वे ई.वी.एम. के मुद्दे को न केवल उठायें, बल्कि आगे भी बढ़ायें।

शनिवार को, महाराष्ट्र के चुनाव परिणाम आने के बाद, जयराम रमेश और पवन खेड़ा ने एक प्रैस कॉन्फ्रेंस आयोजित की तथा उन्होंने आधे-अधूरे मन से ई.वी.एम. पर दोषारोपण किया। लेकिन इसके बाद यह निर्णय लिया गया कि पार्टी साफ तौर पर एक रुख अपनाये, जो चाहे इधर हो या उधर, तथा अपनी आदत के अनुसार, ढुलमुल बातें करने में अपना समय बर्बाद न करे।

इस संदर्भ में, यह याद दिलाना उचित होगा कि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने आज एक सुस्पष्ट बयान दिया कि पार्टी को ई.वी.एम. पर जरा भी विश्वास नहीं है तथा चुनाव मतपत्रों के जरिये होने चाहिये।

पार्टी का यही रुख नजर आ रहा है तथा इसकी गूँज 29 नवम्बर को सी.डब्ल्यू.सी. की मीटिंग में सुनाई दे सकती है।

इंडिया गठबंधन के अखिलेश यादव तथा शरद पवार जैसे नेता का यह विचार पहले से ही है तथा ऐसी संभावना दिखाई दे रही है कि पार्टी इस मामले में गठबंधन के अन्य पार्टनरों के साथ गंभीरता से चर्चा कर सकती है।

उधर, ममता बनर्जी तथा टी.एम.सी. नेता कल्याण बनर्जी राहुल गांधी तथा कांग्रेस पर खुलकर कटाक्ष कर रहे हैं।

साफ बात यह है कि ममता इंडिया गठबंधन की नेता बनना तथा गठबंधन में अपनी चलाना चाहती हैं।

राहुल इस हार के बाद खामोश हैं तथा प्रियंका गांधी ने भी महाराष्ट्र को लेकर कोई बयान नहीं दिया है।

ये हार गठबंधन के अन्दर राहुल गांधी की स्थिति तथा सोच को कमजोर कर रही हैं। पार्टी नेताओं ने उन्हें सलाह दी है कि वे दृढ़ और दूरगामी निर्णय लें, पुराने निक्रिय नेताओं को हटायें, अच्छा प्रदर्शन न करने वाले (नॉन फरफॉर्मर्स)

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- उन पर यह भी दबाव है, कि पार्टी की हार का ठीकरा ई.वी.एम. के माथे पर फोड़ें, इसीलिए जयराम रमेश व पवन खेड़ा ने प्रेस कांफ्रेंस आयोजित कर यह थ्योरी चलाई थी। पर राहुल इस सोच के बारे में पूर्णतया सहमत नहीं लगते हैं।
- पर, मंगलवार को पार्टी अध्यक्ष खड़गे ने बेबाक यह कहा है कि, पार्टी को ई.वी.एम. मशीन पर विश्वास नहीं है। यह ही पार्टी का अधिकृत सोच बनता नज़र आ रहा है, और राहुल को भी यह सोच प्रतिपादित करनी होगी, मन से या बेमन से।
- जैसा कि स्पष्ट नज़र आ रहा है, महाराष्ट्र की हार के बाद राहुल व प्रियंका लगभग चुप ही हैं, इस हार के मुद्दे पर। पर राहुल को अब सख्त निर्णय लेने ही पड़ेंगे, जिससे पार्टी जीवित रह सके। अब ये सख्त निर्णय ज्यादा दिन नहीं टाले जा सकते।

सोरेन 28 नवम्बर को मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे

-जाल खंबाता -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 नवम्बर। झारखंड के राज्यपाल सन्तोष कुमार गंगवार ने मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन 28 नवम्बर को राँची में मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के लिये आमंत्रित किया है। यह मुख्यमंत्री के रूप में उनका तीसरा कार्यकाल होगा क्योंकि फरवरी 2024 में अपनी गिरफ्तारी के बाद, उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया था तथा सत्ता की बागडोर चम्पई सोरेन को सौंप दी थी। लेकिन वे जुलाई 2024 में फिर से मुख्यमंत्री बन गये थे।

- हेमंत सोरेन ने मंगलवार को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात की और उन्हें शपथ ग्रहण कार्यक्रम में आमंत्रित किया।

अपनी पार्टी झारखंड मुक्ति मोर्चा (जे.एम.एम.) की चुनावी सफलता के बाद, हेमन्त ने सरकार बनाने का दावा पेश कर दिया था। उन्होंने अपने शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने के लिये प्रधानमंत्री मोदी को आमंत्रित किया है। उन्होंने मंगलवार को यहाँ प्रधानमंत्री मोदी और केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह से भेंट की।

वे अपने मंत्रालय में मंत्री पदों के लिये कांग्रेस तथा लालू प्रसाद के राष्ट्रीय जनता दल (आर.जे.डी.) के वरिष्ठ नेताओं से बात कर रहे हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'पूर्व सी.जे.आई. चन्द्रचूड की वजह से एम.वी.ए. की हार हुई'

शिवसेना प्रवक्ता संजय राउत ने आरोप लगाया है कि भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश ने अपने एक्शन से दल बदल का रास्ता खुला छोड़ दिया

-श्रीनंद झा -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 नवम्बर। शिवसेना (यू.बी.टी.) का मानना है कि हाल ही में संपन्न हुए राज्य विधानसभा चुनावों में महाराष्ट्र विकास अघाड़ी (एम.वी.ए.) का एक महत्वपूर्ण कारण यह था कि पार्टी में विभाजन के बाद, संयुक्त सेना विधायकों को अयोग्य ठहराए जाने की याचिकाओं पर जस्टिस डी.वाय. चन्द्रचूड़ ने निर्णय नहीं लिया। पार्टी प्रवक्ता संजय राउत ने आरोप लगाया कि "अपने एक्शन से भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश ने राजनीतिक दलबदल के लिए दरवाजे खुले छोड़ दिए और राजनेताओं के मन से कानून का भय खत्म कर दिया।"

जस्टिस चंद्रचूड़ ने इस बात की प्रतिक्रिया में कहा है, "पूरे वर्ष हम मौलिक संवैधानिक मामलों से निपटते है, जिनमें से कुछ 20 साल से लंबित हैं। नौ जजों, सात या पांच जजों की बैंच इन केसों पर फैसला लेने के लिए बैठती हैं। अब, क्या किसी राजनीतिक दल को यह निर्णय लेना चाहिए कि सुप्रीम कोर्ट किस केस की सुनवाई करे? सॉरी, यह चॉइस सुप्रीम कोर्ट की है।"

जनवरी 2022 में, अविभाजित शिवसेना में एकनाथ शिंदे घटक के विद्रोह के बाद विभाजन हो गया और उद्धव ठाकरे को हटा कर शिंदे मुख्यमंत्री बन गए। ठाकरे ने दलबदल करने वाले विधायकों को अयोग्य ठहराए जाने के लिए याचिका दायर की,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- संजय राउत ने कहा कि इससे नेताओं में कानून का डर खत्म हो गया।
- पूर्व सी.जे.आई. चन्द्रचूड ने इस पर कड़ी प्रतिक्रिया दी और कहा कि क्या अब राजनैतिक दल तय करेगा कि सुप्रीम कोर्ट किस केस की सुनवाई करे, माफ कीजिए यह "चॉइस" सुप्रीम कोर्ट की है।
- ज्ञातव्य है कि, जनवरी 2022 में जब शिवसेना का विभाजन हुआ था तब उद्धव ठाकरे ने बागी विधायकों को अयोग्य ठहराने के लिए सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी, और सुप्रीम कोर्ट ने महाराष्ट्र विधानसभा स्पीकर से फैसला करने को कहा था, जिन्होंने इस वर्ष जनवरी में शिंदे गुट को असली शिवसेना घोषित कर दिया था।

'अजित पवार से गठबंधन कर सरकार बनाएं'

भाजपा नेतृत्व ने देवेन्द्र फड़नवीस को स्पष्ट निर्देश दिया

-जाल खंबाता -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 नवम्बर। भारतीय जनता पार्टी के केन्द्रीय नेतृत्व ने मंगलवार को अपने नेता देवेन्द्र फड़नवीस से कहा कि अगर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिन्दे पद से हटने से इन्कार करें, तो वे (फड़नवीस) मुख्यमंत्री पद के लिये अपना दावा प्रस्तुत कर दें। पार्टी नेतृत्व ने उन्हें सलाह दी कि वे अजित पवार के नेतृत्व वाली नैशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी (एन.सी.पी.) से गठजोड़ कर लें।

पार्टी सूत्रों ने कहा कि अजित पवार ने इस आइडिया को मान लिया है, क्योंकि भाजपा 132 सीटें जीत कर मजबूत स्थिति में है तथा वह अजित पवार गुट के समर्थन से बहुमत का आँकड़ा, जो 145 सीटों का है, प्राप्त कर सकती है। सूत्रों ने कहा कि अन्य पार्टियों के कुछ "मूक" समर्थक भी फड़नवीस को समर्थन दे सकते हैं।

फड़नवीस पहले 2014 से 2019 तक महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री रह चुके हैं तथा 2019 में भी अजित पवार के साथ हुये अल्पकालिक गठबंधन के साथ वे बहुत कम समय के लिए मुख्यमंत्री रहे थे। राज्य में हुये इन चुनावों, जिनमें भाजपा ने रिकॉर्ड-तोड़ प्रदर्शन किया है, में उनके नेतृत्व को पार्टी की रणनीति के एक निर्णायक कारक होने का श्रेय दिया जा रहा है।

गठबंधन के अन्दर पैदा हो रही चिन्ताओं का समाधान करने के लिये, ऐसी अपेक्षा की जा रही है कि भाजपा शिन्दे तथा पवार, दोनों को ही उपमुख्यमंत्री पद की पेशकश करेगी। लेकिन, मंत्री पद के लिये विभागों और संसाधन आवंटन से सम्बन्धित मुद्दों का अभी समाधान नहीं हुआ है तथा इस दिशा में बातचीत चल रही है। शिन्दे-समर्थक महत्वपूर्ण मंत्रालयों के लिये दबाव बना रहे हैं।

- चर्चा है कि महायुति गठबंधन में दरार पड़ गई है। एकनाथ शिंदे मुख्यमंत्री के पद पर दावा छोड़ने को तैयार नहीं हैं।
- अगर भाजपा अजित पवार की एन.सी.पी. के साथ ही गठबंधन करके सरकार बनाती है, तो भी उसके पास पूर्ण बहुमत है।
- अजित पवार ने यह बात मान ली है कि भाजपा के पास बहुमत है तो गठबंधन को वही लीड करेगी।

जे.डी.सी. आनंदी के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी

जयपुर, 26 नवंबर। जिला उपभोक्ता आयोग, द्वितीय ने आयोग के आदेश की पालना नहीं करने पर जयपुर विकास प्राधिकरण की आयुक्त, आई.ए.एस. आनंदी के गिरफ्तारी वारंट जारी किए हैं। आयोग ने पुलिस कमिश्नर को आदेश दिए हैं कि वह आनंदी को गिरफ्तार कर 18 दिसंबर तक आयोग के समक्ष पेश करे। आयोग अध्यक्ष ग्यारसी लाल मीणा और सदस्य हेमलता अग्रवाल ने यह आदेश राज सिंह अजमेरा के प्रार्थना पत्र पर सुनवाई करते हुए दिए।

- जिला उपभोक्ता आयोग ने 10 नवम्बर 2023 के निर्देश की पालना नहीं करने पर जे.डी.सी. के खिलाफ गिरफ्तारी वारन्ट जारी किया है।

सुनवाई के दौरान, जे.डी.ए. की ओर से प्रार्थना पत्र पेश कर आदेश की पालना के लिए समय मांगा गया, जिसे आयोग ने खारिज करते हुए जे.डी.सी.

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कनक भवन के मालिकाना हक से जुड़े मामले में महाराज पद्मनाभ को राहत दी सुप्रीम कोर्ट ने

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि इस संपत्ति से जुड़े किसी भी मुकदमे की सुनवाई हाईकोर्ट में नहीं होगी

-यादवेंद्र शर्मा-

जयपुर, 26 नवम्बर। सेंट्रल पार्क में लक्ष्मी निवास होटल के भीतर निर्मित कनक भवन के मालिकाना हक को लेकर अदालतों में चल रहे विवाद पर सुप्रीम कोर्ट ने ये आदेश पारित किये हैं कि राजस्थान हाईकोर्ट उक्त मामले में दायर अपीलों और आवेदनों पर सुनवाई न करे। न्यायाधीश जे.बी.पारदीवाला और न्यायाधीश आर.महादेवन ने यह आदेश महाराज पद्मनाभ की ओर से विशेष अनुमति याचिका (एस.एल.पी.) पर सुनवाई करते हुए दिये। इस मामले में याचिकाकर्ता महाराज पद्मनाभ की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता सौरभ मिश्रा और एडवोकेट ऑन रिकॉर्ड वंशजा शुक्ला और सहायक वकील शाश्वत पुरोहित की ओर से पैरवी की गई।

मामले के तथ्यों के अनुसार, वर्ष 2003 में मृदुला गुप्ता व रामशरण गुप्ता की ओर से सैशन जज के समक्ष कनक भवन के 1986 में बेचान को लेकर सेल डीड की क्रियान्विति के लिये मामला दायर किया गया। परंतु वर्ष 2005 में निचली अदालत ने इस मामले को खारिज करते हुए कहा कि हाईकोर्ट 1993 में इस संपत्ति के बेचान के अनुबंध को निरस्त कर चुका है। इस बीच, राजस्थान हाईकोर्ट में वर्ष 2003 में एक जनहित याचिका दायर की गई, जिसमें उक्त संपत्ति (कनक भवन) पर से अतिक्रमण हटाने की गुहार की गई। परंतु वर्ष 2010 में इस जनहित याचिका को खारिज करते हुए, अदालत ने पुनः अपने आदेश को दोहराया कि 1986 में किया गया बेचान का अनुबंध अमान्य है।

तत्पश्चात, रामशरण गुप्ता व अन्य ने हाईकोर्ट के 2010 के आदेश से आहत होकर सुप्रीम कोर्ट में विशेष अनुमति याचिका दायर की। उल्लेखनीय है कि इस याचिका के लंबित रहने के दौरान ही वर्ष 2011 में, इस संपत्ति के पूर्व मालिक ब्रिगेडियर सवाई भवानी सिंह का निधन हो गया।

पाठकों को बता दें कि कनक भवन तथा लक्ष्मी विलास होटल और सैंट्रल पार्क की संपत्ति राज पुताना के सामंती

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- जैसा कि विदित है कि कनक भवन तथा लक्ष्मी विलास होटल और सैंट्रल पार्क की संपत्ति जयपुर के भारत में विलय के बाद सरकारी संपत्ति बन गई थी। वहीं रामबाग, लिलिपूल और उसके आसपास की संपत्ति "कोवोनेंट" के अनुसार राजपरिवार की संपत्ति है।
- उल्लेखनीय है कि कनक भवन के बेचान से संबंधित विवाद कई बार निचली अदालत, हाईकोर्ट व सुप्रीम कोर्ट तक गये हैं, परंतु सुप्रीम कोर्ट ने वर्ष 2017 में आदेश में यह स्पष्ट रुप से कह दिया कि इस संपत्ति के बेचान के लिये अनुबंधन अमान्य है।
- वकीलों का कहना है कि हाईकोर्ट में इस केस में रामशरण गुप्ता व अन्य की ओर से संपत्ति के मूल मालिक ब्रिगेडियर भवानी सिंह के वंशजों को जोड़ने के लिये आवेदन इसलिये पेश किया गया ताकि उनके निधन और सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बावजूद यह मामला निष्फल या निरस्त ना हो

बांग्लादेश में इस्कॉन प्रमुख चिन्मय प्रभु गिरफ्तार

ढाका, 26 नवंबर। बांग्लादेश में एक बार फिर हिंसा भड़क उठी है। चटगांव इस्कॉन पुंडरीक धाम के अध्यक्ष चिन्मय कृष्णन दास की गिरफ्तारी के बाद हालात बिगड़ते जा रहे हैं। चिन्मय प्रभु की गिरफ्तारी के विरोध में हिंदू समाज के लोग सड़कों पर उतर आए, तो बांग्लादेश नैशनलिष्ट पार्टी और जमात के कार्यकर्ताओं ने उन पर हमला कर दिया। इस हमले में हिंदू समुदाय के 50 से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। ढाका के शाहबाग में शांतिपूर्ण सभा के दौरान

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- हिंदू समुदाय ने सड़कों पर विरोध जताया तो जमात और बांग्लादेश नैशनलिस्ट पार्टी के लोगों ने उन पर हमला किया, हमले में 50 से ज्यादा हिन्दू घायल हो गए।

तेलंगाना सरकार ने फटाफट अडानी ग्रुप का सौ करोड़ रुपये का चैक लौटाया

यह चैक गौतम अडानी ने तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवन्त रेड्डी को दान के रूप में दिया था, तेलंगाना "स्किल डवलपमैंट युनिवर्सिटी" बनाने के लिए

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 नवम्बर। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी अडानी के मुद्दे पर एक भी इंच पीछे हटने को तैयार नहीं हैं और इसका स्पष्ट संकेत तब मिला, जब तेलंगाना सरकार ने अडानी से 100 करोड़ रु. का दान स्वीकार करने से इन्कार कर दिया, जो अडानी ने स्किल डवलपमैंट युनिवर्सिटी के निर्माण के लिए दिया था। तेलंगाना सरकार ने औपचारिक रुप से 100 करोड़ रु. की फंडिग को ठुकरा दिया है क्योंकि अडानी ग्रुप पर अमेरिकन कोर्ट में रिश्वत का केस दर्ज हुआ है। मुख्यमंत्री रैवंत रेड्डी ने कहा कि उनकी सरकार यंग इंडिया स्किल डवलपमैंट युनिवर्सिटी के लिए किसी से भी अनुदान नहीं लेगी, इसमें अडानी की कम्पनी भी शामिल है।

सोमवार को राज्य सरकार ने अडानी ग्रुप को लिखा था कि उनकी सरकार स्किल युनिवर्सिटी के लिए उनका 100 करोड़ रु. का अनुदान स्वीकार नहीं करेगी। मुख्यमंत्री ने पत्रकारों को बताया कि यह अनुबंध एक पारदर्शी और लोकतांत्रिक प्रक्रिया के जरिए राज्य में ही दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी ने कहा है कि राज्य सरकार या केन्द्र सरकार द्वारा निविदा जारी की जानी चाहिए। एक सही व्यवस्था व लोकतांत्रिक तरीके से टैंडर दिए जाने चाहिए, चाहे ये अंबानी को मिले या अडानी या टाटा को।

स्किल युनिवर्सिटी के लिए अडानी ग्रुप की ही तरह कई अन्य कम्पनियों ने भी फंड देने की पेशकश की थी। उन्होंने कहा कि "मैं यह निर्णय दोहराता हूँ कि राज्य सरकार अडानी ग्रुप से 100 करोड़ रु. का फंड नहीं लेगी।"

तेलंगाना के स्पेशल चीफ सैक्रेटरी और इंडस्ट्रियल प्रमोशन के सरकारी आयुक्त जयेश रंजन ने अडानी फाउण्डेशन की अध्यक्ष डॉ. प्रीति अडानी को सूचना दी है कि राज्य यंग इंडिया स्किल युनिवर्सिटी के लिए 100 करोड़ रु. का अनुदान देने की पेशकश के लिए आपका आभारी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- चैक वापसी का निर्णय इस बात का प्रमाण है, कि राहुल गांधी व कांग्रेस अडानी ग्रुप के खिलाफ अपना विरोध और तीव्र करेंगे, संसद व उसके बाहर भी।
- विपक्ष ने, विशेषकर बी.आर.एस. के कार्यकारी अध्यक्ष के.टी. रामाराव ने कटाक्ष किया, एक तरफ तो राहुल गांधी, मोदी व अडानी के गहरे सम्बंधों को "मोडानी" कहकर खिल्ली उड़ाते हैं, दूसरी और तेलंगाना के कांग्रेस पार्टी के मुख्यमंत्री रेवन्त रेड्डी, अडानी से मित्रता करके सौ करोड़ रुपये का दान लेते हैं, तो क्या नये प्रेम को "रेवडानी" और इस मित्रता को राहुल गांधी का प्रश्रय प्राप्त है, अतः क्या राहुल अडानी सम्बन्धों के "रागाडानी" नहीं कहना चाहिए।

सड़कों पर उतरे इमरान समर्थक

इस्लामाबाद, 26 नवंबर। जेल में बंद पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के समर्थकों द्वारा किए गए प्रदर्शन के हिंसक हो जाने के कारण अर्धसैनिक बल के चार जवान और दो पुलिसकर्मी मारे गए। हिंसा में 100 से अधिक सुरक्षाकर्मी घायल भी हुए हैं। इस हिंसा के कारण, सरकार ने राजधानी में सेना तैनात करने के साथ ही, आदेश दिए गए हैं कि उपद्रवियों को देखते ही गोली मार दी जाए।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- इमरान खान की रिहाई को लेकर सड़कों पर उतरे लोगों ने हिंसक प्रदर्शन किया, सरकार ने सेना तैनात की और उपद्रवियों को गोली मारने का आदेश दिया।

विचार बिन्दु

दुःख और वेदना के अथाह सागर वाले इस संसार में प्रेम की अत्यधिक आवश्यकता है। –डॉ. रामकुमार वर्मा

हम कितना जानते हैं और हमारे पास कितना ज्ञान है का फ़र्क!

एक कहावत है नॉलेज इज़ पॉवर – ज्ञान ही ताकत है। ज्ञान अर्थात जानना। इसलिए गंभीरता से यह जानना जरूरी है कि हम कितना जानते हैं? तभी हम जान पाएंगे कि हमारे पास कितनी ताकत है। यदि नॉलेज इज़ पॉवर है तो जितना जानेंगे उतनी ही ताकत भी होगी। इसीलिए यह प्रश्न कोई कम महत्व का नहीं है कि हम कितना जानते हैं या हमारे पास कितना ज्ञान है? जानने की इस खोज के रास्ते पर निकलने पर सबसे पहला सवाल तो यही खड़ा हो जाता है कि वह ज्ञान क्या है जो हमें लगातार जानते रहने तथा साथ में कुछ नया जानने की ताकत देता है? क्या ज्ञान सिर्फ जानकारी का भंडार होता है? क्या जिसके पास जितनी अधिक जानकारी है वह उतना अधिक ज्ञानी माना जा सकता है? सीधे-सीधे यह भी पूछा जा सकता है कि क्या जानकार होना और ज्ञानी होना एक समान माना जा सकता है? इक्कीसवीं सदी में आई नई डिजिटल यंत्र प्रौद्योगिकी ने जानकारी रखने के मामले में सबको बराबर कर दिया है। अब जानकारी के भंडार की कुंजी चाहे जिसे मिल सकती है। कोई यह नहीं कह सकता कि अमुक जानकारी सिर्फ मेरे पास है। अंतर्जाल पर सर्च इंजिन के जरिए कोई भी कैसी भी जानकारी, उसके सारे पहलुओं समेत, कंप्यूटर की स्क्रीन पर एक क्षण में पा सकता है। एआई अर्थात कृत्रिम बुद्धि अब हमारी जरूरत की सामग्री ज्ञान के अथाह भंडार से निकाल कर तुरंत उपलब्ध करा देती है। जिसके पास भी इंटरनेट से जुड़ा कम्प्यूटर, लैपटॉप, आईपेड या स्मार्टफोन है और उसे अंतर्जाल में खोजने की सुविधा है तो क्या वह सबसे बड़ा ज्ञानी माना जा सकता है? इसके जवाब में स्वाभाविक ही विद्वान लोग कहेंगे कि केवल जानकारी का किसी के पास होना ज्ञानी होना नहीं हो सकता। विज्ञान भी हमें नई-नई जानकारियां देता है, लेकिन ऐसा भी नहीं है कि विज्ञान की जानकारियां रखने वाले सभी लोग विज्ञानी मान लिये जाएं। विद्वान कहते हैं ज्ञान और जानकारी का फ़र्क हम चेतना के स्तर पर कर सकते हैं। इस पर फिर नया सवाल उठ खड़ा होता है कि चेतना क्या होती है? क्या चेतना के भी कई स्तर होते हैं? यदि ऐसा है तो क्या मानव चेतना का भी विकास हुआ है और भविष्य में उसके और विकसित होने की संभावनाएं हैं? क्या मन को चेतना माना जा सकता है? कहा जाता है कि हमें अनुभव आत्मा से होता है। तो क्या मन ही आत्मा है? स्वयं अपना अनुभव हम अपनी आत्मा से करते हैं, तो क्या आत्मा ही चेतना है? जो चेतन नहीं है वह जड़ है। जो जड़ है वह निर्जीव है। मगर साथ ही यह भी कहा जाता है कि समस्त सृष्टि एक है? हजारों वर्ष पहले वेदिक ऋषियों ने यह कैसे कह दिया कि समस्त चराचर जगत एक है? उन्होंने जो कहा उसे आधुनिक विज्ञान ने भौतिक प्रयोगों से सिद्ध भी कर दिखाया है। प्रत्येक सजीव और जड़ पदार्थ की सूक्ष्मतम इकाई अणु में भी वैज्ञानिकों ने गतिमान और स्थिर अंश पाये। प्रत्येक अणु एक प्रकार से अपने अंदर एक सम्पूर्ण सूक्ष्म ब्रह्मांड लिये मौजूद होता है। विज्ञान की नई खोजों के साथ आज हम क्वांटम भौतिकी तक पहुंच गये हैं। वैज्ञानिक ऋषि परंपरा विस्मृत हो गई तो हम भारत के लोगों ने कभी भौतिक प्रयोगों से इसे जानने या सिद्ध करने का कोई प्रयास नहीं किया। मगर पश्चिम के लोगों ने आधुनिक भौतिक विज्ञान के जरिए इसे साबित कर दिया है। सभी पदार्थ, अणु, परमाणु, नाभिक, सर्वदा गतिमान पॉजिटिव व निगेटिव एलेक्ट्रोन और उनके साथ में फोटोन का ब्रह्मांड लिए हुए होते हैं। सजीव और जड़ में यही फरक है कि सजीव प्रजनन से संतानोत्पति करते हैं, जड़ ऐसा नहीं करते हैं। मगर दोनों में अणुओं की संरचना एक सी होती है। वैज्ञानिकों ने इन्हें जाना तो उन्हें ज्ञान हुआ कि अभी तो जानने की संभावनाएं अनंत हैं। इसलिए इस सवाल को यदि यूं पूछा जाय कि हम वास्तव में कितना जानते हैं, या जान सकते हैं तो मुश्किल खड़ी हो जाती है। सवाल फिर वहीं का वहीं रह जाता है कि ज्ञान क्या है? क्या ज्ञान एक तर्कसंगत समझ है या इंद्रियों का अनुभव जो हमें यथार्थ तथा प्रकृति को जानने की क्षमता देता है। जानना देखने से आता है। इसीलिए जानने की बात आती है तो प्रमाण की बात भी आती है।

महादेवी वर्मा ने यह भी कहा कि विज्ञान तो विश्लेषण करता है और साहित्य संश्लेषल करता है। जैसे एक वैज्ञानिक किसी फूल को समझने के लिये उसकी एक एक पंखुड़ी अलग करके जांचेगा, उसके अन्य हिस्सों को काट के देखेगा वहीं दूसरी तरफ साहित्यकार चीजों को जोड़ कर देखता है। इसीलिए मानव जाति के विकास में उसकी चेतना के विकास को कम करके नहीं आंका जा सकता।

किसी ने उचित ही कहा है कि ज्ञान क्या है, इसकी जांच नीचे से शुरू करना बेहतर तरीका हो सकता है। अवधारणात्मक ज्ञान के मुख्य प्रतिमान सामान्य जीवन और भाषा होते हैं और दोनों में पहले समझ पैदा करनी पड़ती है। क्या यह इंद्रिय अनुभव है जिसने दर्शनशास्त्र को प्रमाण की धारणा दी? या क्या यह खुद अपने अंदर इतना स्पष्ट है कि उसे प्रमाण की कोई आवश्यकता नहीं होती है? मगर कुछ व्याख्या तो की ही जा सकती है। जैसे ज्ञान की धारणा में पहली बात तो यह निहित है कि ज्ञान आवश्यक रूप से सत्य होता है। मगर सत्यता में विश्वास तथा सत्यता के लिए पर्याप्त प्रमाण भी जरूरी है। विद्वान बताते है कि एक प्रकार का ज्ञान वह है जो अनुभव के पश्चात् प्राप्त होता है। ऐसा ज्ञान वैदिक ऋषियों ने प्राप्त किया। दूसरे प्रकार का वह ज्ञान होता है जो ऐसे प्रयोग, निरीक्षण तथा अनुभव पर केन्द्रित होता है जिसे अकादमिक लोग अन्यों के पाठों के अध्ययन से विकसित करते हैं। तीसरे प्रकार का ज्ञान अनुभव से परे का होता है। उसे समझ पाना थोड़ा मुश्किल होता है। इस प्रकार के ज्ञान के सम्बन्ध में यह धारणा भी है कि अनुभव केवल तथ्य ही देता है परन्तु तथ्य किसी बात को सिद्ध नहीं करते। उनसे सत्य का ज्ञान उस समय तक नहीं हो सकता जब तक कि उनको संगठित न किया जाए। वे तर्क द्वारा संगठित किये जाते हैं। इस प्रकार तर्क या बुद्धि से अनुभव ज्ञान में परिवर्तित होता है। अनोखी बात यह है कि हर बार ज्ञान की खोज में एक ऐसी सीमा आ जाती है जब उसके आगे जो है वह अज्ञेय रह जाता है। महान लेखिका महादेवी वर्मा का कहना था कि नया जानना निरंतर रहता है। उसका कोई अंत नहीं होता। जो-जो जान लिया जाता है वह विज्ञान होता चला जाता है। जानने के बाद भी जो अज्ञेय रह जाता है उसकी खोज जारी रहती है। लेकिन महादेवी वर्मा ने यह भी कहा कि विज्ञान तो विश्लेषण करता है और साहित्य संश्लेषल करता है। जैसे एक वैज्ञानिक किसी फूल को समझने के लिये उसकी एक एक पंखुड़ी अलग करके जांचेगा, उसके अन्य हिस्सों को काट के देखेगा वहीं दूसरी तरफ साहित्यकार चीजों को जोड़ कर देखता है। इसीलिए मानव जाति के विकास में उसकी चेतना के विकास को कम करके नहीं आंका जा सकता। यदि इस वैज्ञानिक अवधारणा को मान लिया जाए कि जीव जगत में मानव सीधे नहीं उतरा बल्कि उसका विकास हुआ है – इवॉल्यूशन के सिद्धांत की बात हो – तब यह सवाल होना स्वाभाविक ही है कि जब मानव के शरीर का विकास हुआ, उसके मस्तिष्क का विकास हुआ, तब क्या मानव चेतना का भी विकास हुआ माना जाना चाहिए? इस जटिल विषय पर भारतीय साहित्य के बड़े हस्ताक्षर सच्चिदानद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय के नेतृत्व में कुछ दशकों पहले जयपुर में एक राष्ट्रीय गोष्ठी में गहन विमर्श हुआ था जिसमें साहित्य, मनो और चिकित्सा विज्ञान के विशेषज्ञों ने लंबी चर्चाएं की थी।

चेतना के विकास को बुद्धि का विकास भी कह सकते हैं। बहुतेरे लोग यह मानते हैं कि इसमें कुछ भी रहस्यमय नहीं है। बुद्धिमान जीव आम तौर पर बेहतर जीवन व्यतीत करते हुए अपनी जीवनयात्रा पूरी करते हैं और वे अन्यों की तुलना में अधिक संतानों वाले होते हैं। हालांकि ऐसा निश्चित रूप से परिस्थितियों पर निर्भर करता है। एक बार जब बुद्धिमान प्राणी प्रौद्योगिकी विकसित करते हुए अपनी ही प्रजाति के आत्म-विनाश की क्षमता हासिल कर लेते हैं, तो ज्ञान का लाभ अनिश्चित हो जाता है। दिमाग और बुद्धि के विकास से जो ज्ञान हासिल होता है वह प्रकृति के नियमों से निपटने के लिए मानव को तेजी से सक्षम बनाता है। कुछ वैज्ञानिक तो यह मान कर भी चलते हैं कि प्रकृति विकासशील नहीं विनाशकारी होती है। उनका तर्क है कि प्राकृतिक आपदाओं के कारण पृथ्वी ने अपने जीवनकाल में अब तक पांच बार प्रलय को भुगता है, जब इस धरती पर से जीवन पूरी तरह समाप्त हो गया। मगर यह ज्ञान अब भी अज्ञेय बना हुआ है कि पहला चेतन जीवन कैसे बना? हालांकि बीसवीं सदी के महान वैज्ञानिक आइंस्टीन ने कहा था कि, ब्रह्मांड की सबसे अतुलनीय संपत्ति यह है कि यह इतना समझ में आने योग्य है। किन्तु अनुभव बताता है कि ब्रह्मांड को जितनी गहराई तक पहुंचा जा रहा है उससे उसकी उत्पत्ति की कोई एकीकृत समझ निकट आती नज़र नहीं आ रही है। ज्ञान और विज्ञान में एक समानता जरूर है कि दोनों में संशय का महत्व होता है, उसकी मान्यता होती है। संशय ही आगे की खोज को प्रेरित करता है। चाहे वह अंदर का ज्ञान – अध्यात्म – हो या बाहरी भौतिक जगत का विज्ञान हो। इसलिए ज्ञान और विज्ञान दोनों ही मानव की समझ और प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ज्ञान और विज्ञान के बीच अंतर और समानता को पहचानना ही जीवन के मूल्यों को बेहतर ढंग से समझना हो सकता है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

डबल इंजन सरकार का करिश्मा

कांग्रेस के फेक नैरेटिव को ध्वस्त कर उपचुनावों में ऐतिहासिक जीत दिलाई

राजेन्द्र राठौड़

राजस्थान के इतिहास में पहली बार किसी सत्तारूढ़ दल ने उपचुनाव में अधिकांश सीटों पर विजय प्राप्त की है। 7 विधानसभा सीटों में से 5 विधानसभा सीटों में भाजपा के पक्ष में ऐतिहासिक परिणाम साधारण पृष्ठभूमि से ताल्लुक रखने वाले, भाजपा के जमीनी कार्यकर्ता से लेकर विधायक और फिर मुख्यमंत्री तक का सफर तय करने वाले मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा जी के कुशल नेतृत्व और संगठन के अथक प्रयासों का प्रमाण है। महज 11 महीने के कार्यकाल में जनता का सरकार के प्रति बढ़ता विश्वास यह दर्शाता है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने इस उपचुनाव में स्वयं को "आम आदमी का मुख्यमंत्री" साबित किया है।

राजस्थान विधानसभा उपचुनाव में सलूंबर, खींवसर, झुंझुनूं, देवली उनियारा, और रामगढ़ यानी 5 सीटों पर भाजपा की शानदार जीत का श्रेय डबल इंजन की सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों, योजनाओं व सत्ता-संगठन के सुदढ़ तालमेल को जाता है।

यह जीत न केवल ऐतिहासिक है बल्कि यह दर्शाती है कि कैसे एक सत्तारूढ़ दल ने शानदार रणनीति अपनाते हुए विपक्ष द्वारा बनाए गए फेक नैरेटिव को ध्वस्त कर जनता के बीच अपना विश्वास और समर्थन स्थापित करके विपक्ष को करारा जवाब दिया है। राजस्थान उपचुनावों के दौरान कांग्रेस नेतृत्व जनता के मुद्दों पर चर्चा करने के बजाय़ मनोरंजन और डांस करने में व्यस्त नजर आया जो जनता को बिल्कुल पसंद नहीं आया और इसका फायदा भी भाजपा को मिला। भाजपा संगठन ने एकमुखी-एकजुट होकर विधानसभा सीटों पर पैनी नजर रखी, छोटे-बड़े कार्यकर्ताओं, भाजपा नेताओं, विधायकों व मंत्रियों को फील्ड में उतारकर कांग्रेस की तमाम रणनीतियों को विफल साबित कर दिखाया।

कांग्रेस द्वारा लगाए गए निराधार आरोपों और पिछले कार्यकाल में जनता के बीच बिगड़ी साख का भाजपा ने पूरी मजबूती से जवाब दिया। प्रदेश की जनता को विश्वास हो गया है कि जो कार्य विगत 5 साल में कांग्रेस ने कभी नहीं किये, वो राज्य सरकार ने 11 माह के अल्पकाल में कर दिखाये हैं जैसे संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चंबल-ईआरसीपी पर एमओयू हो या 30 वर्ष बाद बहु प्रतीक्षित यमुना जल बंटवारा समझौते पर एमओयू हो, मात्र 450 रुपये में गैस सिलेंडर हो, गेहूं के न्यूनतम समर्थन मूल्य पर 125 रुपये प्रति क्विटंल का बोनस हो या पीएम किसान सम्मान निधि में 2 हजार रुपये की बढ़ोतरी हो या पेपरलीक माफियाओं पर कड़ी कार्रवाई हो। ऐसे तमाम फैसलों से स्पष्ट है कि भाजपा सरकार का लक्ष्य जनता की सेवा करना है। सत्ता में आते ही राज्य सरकार ने विगत कांग्रेस सरकार में बिगड़ी हुई बुनियादी व्यवस्थाओं को व्यवस्थित करने के लिए व्यापक रोडमैप बनाया और जनता के हित में कई कड़े व सख्त कदम लिये।

कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में हुई 17 पेपरलीक होने से युवाओं का सरकार पर विश्वास उठ गया था। राज्य सरकार ने आते ही इन मामलों की जांच के लिए एसआईटी का गठन किया और 100 से ज्यादा पेपर माफियाओं को सलाखों के पीछे पहुंचाया। इसके साथ ही, नई युवा नीति लाने की घोषणा और आगामी 2 वर्षों के लिए परीक्षा तिथि व परिणामों के साथ भर्ती परीक्षाओं के लिए एक विस्तृत कैलेंडर जारी करके सरकार ने युवाओं को आश्वस्त किया कि अब उनकी मेहनत के साथ कोई खिलवाड़ नहीं होगा। इसके साथ ही अगले 5 साल में 4 लाख सरकारी नौकरियां देने का जो लक्ष्य रखा है, वह युवाओं के भविष्य को उज्जवल बनाने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। गत कांग्रेस सरकार ने राजस्थान की अर्थव्यवस्था का बंटाधार करते हुए भाजपा सरकार को 5.79 लाख करोड़ रुपये का कर्ज विरासत के रूप में दिया जिसे अब राज्य सरकार कम करने में लगी है। राज्य सरकार ने अपने पहले पूर्णकालिक बजट 2024-25 में विकसित राजस्थान 2047 का लक्ष्य प्रस्तुत करते हुए हर वर्ग-युवाओं, महिलाओं, किसानों, व्यापारियों और युवाओं के लिए अहम योजनाएं पेश की। पहली बार राज्य के बजट में कोई नया कर नहीं लगाया गया, जिससे महंगाई से जूझ रही जनता को राहत मिली। सरकार ने बुनियादी सुविधाओं जैसे पानी, बिजली, सड़क के विकास पर विशेष ध्यान दिया।

आज हिन्दुस्तान की इकोनॉमी में राजस्थान का भी अहम योगदान है। बजट में 350 बिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का खाका खींचा गया है, जो राजस्थान को विकसित राज्यों की श्रेणी में ले जाने की सरकार की स्पष्ट मंशा को दर्शाता है।राजस्थान में प्रति व्यक्ति आय़ करीब 1.67 लाख रुपये सालाना है जिसे बढ़ाने के लिए सरकार निरंतर प्रतिबद्ध है। राज्य सरकार के पहले 5 माह के अल्पकाल में ही राज्य की जीएसडीपी जो राज्य के विकास का सूचकांक है, दिसंबर 2023 में 11.58 प्रतिशत थी अब बढ़कर 12.56 प्रतिशत हो गई है। यह अल्पकालिक सफलता दर्शाती है कि राज्य अब विकास की दिशा में तेजी से अग्रसर है। राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट 2024 जैसे आगामी आयोजनों के माध्यम से सरकार ने निवेश के लिए एक नया वातावरण तैयार किया है। इस समिट में 25 देशों के प्रतिनिधियों की भागीदारी राज्य के लिए बड़ी उपलब्धि साबित होगी। हाल ही में राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट 2024 के तहत ऊर्जा विभाग की प्री-समिट में अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में निवेश के लिए लगभग साढ़े 6 लाख करोड़ के एमओयू साइन किए गए जो ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होते राजस्थान को दिखाता है। राजस्थान की भौगोलिक स्थिति और प्राकृतिक संसाधन उसे नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में अग्रणी बनाते हैं। यहां पर सबसे अधिक सूर्य दिवस हैं, जिसके कारण राज्य सौर ऊर्जा उत्पादन में अद्वितीय स्थिति में है। राज्य सरकार ने केवल योजनाएं बनाकर नहीं बल्कि उन्हें जमीनी स्तर पर लागू करके यह सुनिश्चित किया कि डबल इंजन की सरकार का फायदा बिना किसी बाधा के राज्य के हर नागरिक मिले। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के सपनों के आत्मनिर्भर भारत के संकल्प में राजस्थानभी अहम भूमिका निभा रहा है। आज के परिप्रेक्ष्य में नई युवा नीति, नई खनन नीति और नई औद्योगिक नीति निश्चित तौर पर राजस्थान को आगे बढ़ाने में मील का पत्थर साबित होगी।

राज्य सरकार के इतने अल्प समय मे लिये गये ऐतिहासिक निर्णयों से घबराई कांग्रेस ने 'पर्ची सरकार' का आरोप लगाकर अपनी विफलताओं को छुपाने की कोशिश की है लेकिन उनके इस आरोप को जनता ने इन उप चुनावों में वोट की चोट से पूरी तरह खारिज कर दिया। राज्य सरकार ने अपने 11 महीने के कार्यकाल में ऐसा कोई भी निर्णय नहीं लिया जो बंद दरवाजों के पीछे या पक्षपातपूर्ण तरीके से लिया गया हो। हर योजना और नीतिगत निर्णय जनता के सामने खुले मंच पर रखा गया।उपचुनाव की यह जीत केवल भाजपा नेतृत्व के साथ उन लाखों कार्यकर्ताओं और समर्थकों की भी है जिन्होंने दिन-रात कड़ी मेहनत की।

राजेन्द्र राठौड़, पूर्व नेता प्रतिपक्ष।

प्रवासियों का दृष्टिकोण : उलाहना मत दीजिए

उलाहना देना भारतीय समाज का एक अनोखा हिस्सा है, यह हमारे रिश्तों की गहराई और हमारे संवाद की जटिलता को दिखाता है

डॉ. पंकज राजवंशी

कभी आपने ग़ौर किया है कि जब आप किसी पुराने दोस्त को फोन करते हैं, तो उसकी पहली प्रतिक्रिया क्या होती है? अक्सर, यह एक हल्की शिकायत या मज़ाक में लिपटी टिप्पणी होती है। "अरे, अब तो तुम बड़े आदमी हो गए हो। फोन करना ही भूल गए। आज कैसे याद किया?" सुनने में यह वाक्य सामान्य हंसी-मजाक जैसा लगता है, लेकिन यह केवल मजाक नहीं है। इसके पीछे गहरी भावनाएं और एक ख़ास तरह की आदत छिपी होती है।

यह आदत सिर्फ़ दोस्ती तक सीमित नहीं है। भारत में, रिश्तेदारों, दोस्तों, यहां तक कि पड़ोसियों के बीच बातचीत में भी ऐसा ही देखने को मिलता है। कोई सीधे यह नहीं कहता, "बहुत खुशी हुई तुम्हारा फोन आया," बल्कि हमेशा शिकायत या उलाहने का सहारा लिया जाता है। यही आदत हमारे समाज में इतनी गहराई से जड़ें जमा चुकी है कि हम इसे सामान्य मानने लगे हैं।

मनोविज्ञान के नज़रिए से देखें तो उलाहना देना हमारे मन में छिपी असुरक्षा या रक्षात्मकता को व्यक्त करने का तरीका हो सकता है। जब हम ख़ुद को कमतर महसूस करते हैं, या जब हमें लगता है कि कोई हमें उतनी अहमियत नहीं दे रहा जितनी हम चाहते हैं, तो हमारी यह भावना अक्सर शिकायत के रूप में बाहर आती है। उदाहरण के लिए, अगर कोई दोस्त कहता है, "तुम तो अब फोन ही नहीं करते," तो वह अनजाने में यह व्यक्त कर रहा होता है कि उसे डर है कि शायद आप उसे भूल गए हैं। वह इसे सीधे तौर पर स्वीकार नहीं कर पाता, इसलिए शिकायत को अपनी बात कहने का जरिया बना लेता है।

कुछ ऐसा ही व्यवहार रिश्तेदारों के बीच भी होता है। अगर कोई रिश्तेदार विदेश में रहने वाले परिवार के पास आता है, तो वह यह कहेगा, "यहां तो सब सुख-सुविधाएं हैं, हमारे यहां तो कुछ नहीं है।" यह सिर्फ उनके जीवन की कठिनाइयों की बात नहीं है, बल्कि कहीं न कहीं वे अपने जीवन और आपकी स्थिति के बीच तुलना कर रहे होते हैं। उनकी यह टिप्पणी असुरक्षा, तुलना, और कभी-कभी ईर्ष्या का मिश्रण होती है।

भारतीय समाज में इस आदत की जड़ें हमारी सांस्कृतिक परंपराओं में हैं। भारत में रिश्तों और परिवार को बहुत महत्व दिया जाता है। यह समाज सामूहिकता पर आधारित है, जहां एक व्यक्ति का जीवन उसके रिश्तों और समाज से गहराई से जुड़ा होता है। लेकिन, इसके साथ ही, हमारी संस्कृति में खुलकर अपनी भावनाएं व्यक्त करने की आदत कम ही है। लोगों को सीधे तौर पर अपनी खुशी, कृतज्ञता या यहां तक कि असहमति व्यक्त करने में झिझक महसूस होती है। अक्सर इसे अप्रत्यक्ष तरीकों, जैसे उलाहनों या हल्की-फुल्की शिकायतों के जरिए व्यक्त किया जाता है।

अगर आप लंबे समय तक अमरीका जैसे देशों में रहें, तो इस आदत का अंतर और साफ नज़र आता है। वहां लोग सीधे तौर पर अपनी भावनाएं व्यक्त करते हैं। अगर कोई दोस्त आपको फोन करता है, तो वह कहेगा, "It's so nice to hear from you!" यानी, "तुमसे बात करके बहुत अच्छा लगा।" लेकिन भारत में, यही भावना व्यक्त करने का तरीका उलट होता है। यहां लोग कहेंगे, "अब तो तुम हमको भूल ही गए हो।" इस रवैये के पीछे कहीं न कहीं यह उम्मीद होती है कि आप अधिक ध्यान देंगे, उन्हें यह महसूस कराएंगे कि वे आपके लिए ख़ास हैं। यह आदत मनोवैज्ञानिक कारणों से भी पैदा होती है। एक बड़ी वजह है आत्मसम्मान। जब लोग अपनी तुलना दूसरों से करते हैं और यह महसूस करते हैं कि सामने वाला उनसे बेहतर स्थिति में है, तो वे खुद को असुरक्षित महसूस करते हैं। यह असुरक्षा शिकायत और उलाहनों के रूप में बाहर आती है।

इस आदत को समझने के लिए एक और अहम पहलू है सामाजिक तुलना। भारत जैसे समाज में लोग अपनी स्थिति, उपलब्धियों और जीवनशैली की तुलना दूसरों से लगातार करते रहते हैं। जब वे देखते हैं कि कोई और उनके मुकाबले बेहतर स्थिति में है, तो उनकी प्रतिक्रिया अक्सर एक हल्के उलाहने के रूप में आती है। उदाहरण के तौर पर, अगर कोई कहता है, "तुम तो विदेश में रहते हो, तुम्हारे लिए सब आसान है," तो इसके पीछे यह भावना हो सकती है कि "काश मैं भी ऐसा कर पाता।"

लेकिन, इसमें एक और दिलचस्प बात है। रिश्तों में इस तरह का व्यवहार अक्सर एकतरफा होता है। अगर कोई आपसे यह उम्मीद करता है कि आप हमेशा उनका हालचाल लें, उन्हें फोन करें, या उनकी परेशानियों में रुचि दिखाएं, तो इसका मतलब यह नहीं कि वे भी ऐसा ही करेंगे। यह 'रिश्तों में अधिकार' की भावना का हिस्सा है, जो भारतीय समाज में बहुत गहराई से मौजूद है। लोग यह उम्मीद करते हैं कि आप उन्हें प्राथमिकता देंगे, लेकिन वे ख़ुद वैसा करने की जिम्मेदारी शायद ही कभी निभाते हैं। उदाहरण के लिए, जो रिश्तेदार यह शिकायत करते हैं कि आप फोन नहीं करते, वे खुद शायद ही कभी आपको फोन करते होंगे। यह आदत केवल रिश्तों को जटिल बनाती है। बार-बार शिकायतों और उलाहनों से रिश्तों में एक दूरी पैदा हो सकती है। सामने वाला व्यक्ति ऐसा महसूस कर सकता है कि उसकी हर बात को लेकर कोई न कोई आलोचना की जाएगी। यह बात धीरे-धीरे रिश्ते की सहजता को खत्म कर सकती है। इस आदत को बदलना आसान नहीं है, क्योंकि यह हमारी संस्कृति और हमारे संवाद के तरीकों में गहराई से रची-बसी है। लेकिन, बदलाव संभव है। सबसे पहले, यह समझना जरूरी है कि रिश्ते सकारात्मकता और खुलेपन से मजबूत होते हैं। अगर कोई दोस्त आपको फोन करता है, तो यह कहना कि, "बहुत अच्छा लगा तुम्हारा फोन आया," रिश्ते को और मजबूत बना सकता है।

दूसरी बात यह है कि रिश्तों में जरूरत से ज्यादा उम्मीदें न पालें। हर रिश्ता बराबरी का नहीं होता, और हर व्यक्ति एक ही तरह से अपना समय या ध्यान नहीं बांट सकता। अगर हम दूसरों पर ज्यादा उम्मीदें लगाना कम करें, तो शिकायतें अपने आप कम हो जाएंगी।

तीसरी बात यह है कि अपनी भावनाओं को सीधे शब्दों में व्यक्त करना सीखें। अगर आप खुश हैं, तो बिना झिझक सामने वाले को बताएं। अगर कोई बात परेशान कर रही है, तो उसे उलाहनों में छिपाने के बजाय साफ-साफ कहें।

उलाहना देना भारतीय समाज का एक अनोखा हिस्सा है। यह हमारे रिश्तों की गहराई और हमारे संवाद की जटिलता को दिखाता है। लेकिन, इसे कम करने की जरूरत है। जब हम अपनी असुरक्षाओं को पहचानेंगे और उन्हें स्वस्थ तरीके से व्यक्त करना सीखेंगे, तो रिश्ते और मजबूत होंगे। तो अगली बार, जब कोई दोस्त कहे, "आज कैसे याद किया?" तो मुस्कुराकर जवाब दें, "याद किया, क्योंकि तुम्हारी याद आ गई थी।" यही बदलाव की शुरुआत होगी। रिश्ते हल्के-फुल्के मजाक और उलाहनों से बाहर निकलकर, सच्ची भावनाओं पर आधारित होंगे। यही वह भारतीय संस्कृति होगी, जो अपने रिश्तों की गहराई और खुलेपन का सही अर्थ समझेगी।

डॉ. पंकज राजवंशी, सिएटल (अमरीका) में एक गैस्ट्रो एंटेरोलॉजिस्ट हैं, जो चिकित्सा के क्षेत्र में अपने योगदान के साथ-साथ सामाजिक मुद्दों पर गहरी रुचि रखते हैं।

श्रद्धालुओं ने पुष्कर सरोवर में आस्था की डुबकी लगाई, पुण्य कमाया

पुष्कर, (निसं)। उत्पति एकादशी के पावन पर्व पर मंगलवार को श्रद्धालुओं ने पुष्कर तीर्थ सरोवर में आस्था की डुबकी लगाकर पुण्य कमाया और ब्रह्मा मंदिर में दर्शन कर सुख समृद्धि की प्रार्थना की। ब्रह्मा मंदिर, रंगनाथ बैकुंठ मंदिर, पुराने वेणुगोपाल मंदिर, वराह मंदिर सहित विभिन्न मंदिरों में धार्मिक आयोजनों के महाआरती हुई तथा प्रतिमाओं का श्रृंगार कर फूल बंगला सजाया गया। उत्पति एकादशी पर्व पर देवी शक्ति के प्रतीक जोगणिया धाम में विराजित सातु बहना का उपासक भंवर लाल वर्मा के सानिध्य में वेद मंत्रोच्चार के साथ पंचामृत अभिषेक व पूजन किया गया। मनमोहक श्रृंगार के बाद महाभोग लगाया गया देर शाम को आरती हुई। पंडित कैलाशनाथ दाधीच ने बताया कि धार्मिक ग्रंथों में 12 एकादशी का जन्म उत्पत्ति एकादशी को बताया गया है, इसी दिन से एकादशी व्रत का शुभारंभ करने का उल्लेख मिलता है। सरोवर के बद्री घाट पर एकादशी महाआरती संघ के सानिध्य में सरोवर की पूजा अर्चना अभिषेक दीपदान के बाद पंडित शशांक पाराशर द्वारा महाआरती की गई। गायक कलाकार रामपाल काला मंडली द्वारा भजन संर्कीतन किया गया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 27 नवम्बर, 2024

मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, चित्रा नक्षत्र गुरूवार प्रातः 7:36 तक, आयुष्मान योग दिन 3:13 तक, कौलव करण सायं 5:06 तक, चन्द्रमा आज 6:07 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-धनु, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में। आज विवाह मुर्हत चित्रा में है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:37 तक, शुभ 10:56 से 12:14 तक, चर 2:52 से 4:10 तक, लाभ 4:10 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:00, सूर्यास्त 5:29

मेष

परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

वृष

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी।

मिथुन

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

सिंह

आर्थिक/वित्तीय मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। धन हानि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धन प्राप्त होगा। शुभ कार्यों में भाग ले सकते हैं।

तुला

व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

वृश्चिक

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

धनु

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मकर

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कुंभ

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मीन

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

पासपोर्ट प्राधिकरण पुलिस रिपोर्ट मानने के लिए बाध्य नहीं है : हाईकोर्ट

'प्रतिकूल पुलिस रिपोर्ट अपने आप में पासपोर्ट लेने से नहीं कर सकती वंचित'

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने कहा है कि प्रतिकूल पुलिस सत्यापन रिपोर्ट अपने आपमें किसी नागरिक को पासपोर्ट प्राप्त करने के उसके कानूनी अधिकार से वंचित नहीं कर सकती। इसके अलावा पासपोर्ट प्राधिकरण पुलिस की प्रतिकूल सत्यापन रिपोर्ट मानने के लिए ही बाध्य नहीं है। इसके साथ ही अदालत ने केन्द्र सरकार और पासपोर्ट अधिकारी को कहा है कि वह याचिकाकर्ता के पासपोर्ट नवीनीकरण का प्रार्थना पत्र 8 सप्ताह में तय करे। हालांकि अदालत ने पासपोर्ट विभाग को छूट दी है कि यदि मामले में कुछ प्रतिकूल मिले तो वे विधिनुसार कार्रवाई के लिए स्वतंत्र हैं। जस्टिस अनूप ढंड की एकलपीठ ने यह आदेश सावित्री शर्मा की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए। अदालत ने अपने आदेश में कहा कि किसी भी भारतीय नागरिक को उसके पासपोर्ट प्राप्त करने या नवीनीकरण करने के कानूनी अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता। पासपोर्ट या यात्रा दस्तावेज जारी करने का निर्णय केवल पासपोर्ट प्राधिकरण की ओर से ही लिया जाना चाहिए।

याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता राकेश चंदेल ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता का पासपोर्ट मई, 2022 तक वैध था। ऐसे में उसने पासपोर्ट नवीनीकरण के लिए विभाग में आवेदन किया, लेकिन पुलिस सत्यापन जांच रिपोर्ट में संदेह होने पर उसका आवेदन अस्वीकार कर दिया। इसे हाईकोर्ट में चुनौती देते हुए पासपोर्ट नवीनीकरण का आग्रह किया गया। जवाब में विभाग की ओर से अधिवक्ता मनजीत कौर ने बताया कि क्षेत्रीय पासपोर्ट ऑफिस, नई दिल्ली ने याचिकाकर्ता की पुलिस सत्यापन जांच करवाई थी। इसमें उसकी राष्ट्रीयता संदेहपूर्ण व नेपाली आई है। इस रिपोर्ट पर ही उसके पासपोर्ट का नवीनीकरण नहीं किया। इसके जवाब में याचिकाकर्ता ने कहा कि उसके दादा नेपाल में रहते थे, लेकिन याचिकाकर्ता का जन्म भारत में हुआ है। उसकी शादी 2017 में यहीं हुई है। उसके दो बच्चे हैं और वह भारत की नागरिक है। इसलिए केवल पुलिस की प्रतिकूल जांच रिपोर्ट पर उसके पासपोर्ट नवीनीकरण से मना नहीं कर सकते। जिस पर सुनवाई करते हुए अदालत ने पुलिस जांच रिपोर्ट के प्रतिकूल होने मात्र से पासपोर्ट से वंचित नहीं करने को कहा है।

कांस्टेबल भर्ती परीक्षा-2023 को लेकर बहस पूरी

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने पुलिस कांस्टेबल भर्ती-2023 में पदों के 15 गुणा अभ्यर्थियों को बुलाने से जुड़े मामले में दायर याचिका पर बहस पूरी हो गई है। अदालत ने दोनों पक्षों की बहस सुनकर मामले में अपना फैसला सुरक्षित रख लिया है। जस्टिस समीर जैन की एकलपीठ ने यह आदेश अर्जुन सिंह शेखावत व अन्य की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता रघुनंदन शर्मा ने अदालत को बताया कि राज्य सरकार की ओर से पुलिस कांस्टेबल के पदों पर गत वर्ष भर्ती निकाली गई। जिसमें सीनियर सैकण्डरी स्तर की समान पात्रता परीक्षा में पास हुए अभ्यर्थियों को कांस्टेबल भर्ती के विज्ञापित कुल पदों के मुकाबले 15 गुणा को बुलाना था।

दिया कुमारी ने केंद्र से 900 नये आंगनबाड़ी भवनों की मांग की

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने मंगलवार को केन्द्रीय मंत्री अन्नपूर्णा देवी से मुलाक़ात की।

जयपुर। देश के सभी राज्यों के महिला एवं बाल विकास विभाग का एक राष्ट्रीय चिंतन शिविर जनवरी माह में उदयपुर में आयोजित किया जायेगा। इस चिंतन शिविर में केन्द्रीय मंत्री समेत सभी राज्यों के महिला एवं बाल विकास मंत्री भाग लेंगे तथा आँगनबाड़ी केन्द्रों, पोषाहार तथा महिला एवं बाल विकास से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विस्तार से चर्चा कर और राज्यों की आवश्यकतानुसार एक रोडमैप तैयार करेंगे।

- **उदयपुर में तैयार होगा महिला एवं बाल विकास का रोडमैप, जनवरी में होगा राष्ट्रीय चिंतन शिविर**

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने मंगलवार को दिल्ली में केंद्रीय मंत्री अन्नपूर्णा देवी से मुलाकात की और विभाग से संबंधित सभी मुद्दो पर विस्तार से चर्चा की। दिया कुमारी ने केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी से माँग की है कि विभाग की विभिन्न योजनाओं में केन्द्र से मिलने वाले अनुदान की राशि को एकमुश्त जारी किया जाये, जिससे आंगनबाडी कार्यकर्ताओं को उनका मानदेय हर माह प्राप्त हो सके। उपमुख्यमंत्री ने अपने पत्र में माँग की कि पूरक पोषाहार दरों को बढ़ाया जाये। उन्होंने कहा कि पूरक पोषाहार की दरों का 2017 में पुनर्निधारण किया गया था, जिसके युक्तियुक्त पुनर्निधारण की आवश्यकता है।

दिया कुमारी ने राज्य में नये 900 आंगनबाड़ी भवनों की माँग करते हुए कहा कि ये प्रस्ताव केंद्र को भिजवा दिये गये है, जिन पर कार्यवाही अपेक्षित है। उन्होंने केन्द्र सरकार से आंगनवाड़ी भवनों के हर पाँच साल में जारी होने वाली 3000 रुपये की मरम्मत राशि को भी जरुरत के अनुसार बढ़ाने की मांग की। उन्होंने कहा कि आंगनबाड़ी केन्द्रों की मरम्मत की लागत 50 हज़ार से एक लाख तक हो सकती है।

उपमुख्यमंत्री ने अपने पत्र में वर्ष 2023-24 के 34.38 करोड़ के केन्द्रांश तथा किशोरी बाल योजना के अन्तर्गत तीसरी त्रैमासिक अनुदान की किस्त जारी करने और 340 आँगनबाड़ी केन्द्रों को सक्षम आंगनबाड़ी केंद्रों के रूप में विकसित करने की स्वीकृति जारी करने की भी मांग की। दिया कुमारी ने केन्द्रीय मंत्री से माँग करते हुए कहा कि राज्य को एकमुश्त राशि मिलने से आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को हर महीने मानदेय का भुगतान सुनिश्चित किया जा सकेगा।

आर.सी.डी.एफ. को दिल्ली में मिले दो बड़े पुरस्कार

राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के अवसर पर नई दिल्ली में भारत सरकार की ओर से आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में प्रतापपुरा दुग्ध उत्पादक समिति को श्रेष्ठ डेयरी सहकारी समिति के अवार्ड से नवाजा गया। वहीं दूसरी ओर हनुमानगढ़ दुग्ध संघ के दो कर्मचारी राजेन्द्र कुमार और वीरेन्द्र कुमार सैनी को बेस्ट एआई टैक्नीशियन अवार्ड देकर सम्मानित किया गया।

नई दिल्ली/जयपुर। राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के अवसर पर नई दिल्ली में भारत सरकार द्वारा आयोजित पुरुस्कार वितरण समारोह में आरसीडीएफ की धूम रही। एक ओर जहां, आरसीडीएफ से सम्बद्ध भीलवाड़ा दुग्ध संघ की प्रतापपुरा दुग्ध उत्पादक समिति को श्रेष्ठ डेयरी सहकारी समिति के अवार्ड से नवाजा गया। वहीं दूसरी ओर हनुमानगढ़ दुग्ध संघ के दो कर्मचारी राजेन्द्र कुमार और वीरेन्द्र कुमार सैनी को बेस्ट एआई टैक्नीशियन अवार्ड देकर सम्मानित किया गया।

आरसीडीएफ की प्रशासक और प्रबन्ध संचालक श्रुति भारद्वाज ने प्रतापपुरा दुग्ध समिति के सचिव नानूराम कुमावत और हनुमानगढ़ दुग्ध संघ के कर्मचारियों के साथ ये पुरुस्कार प्राप्त किये। पुरुस्कार स्वरुप तीन-तीन लाख रुपये नगद और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर राजस्थान के गृह एवं डेयरी राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढ़म ने भी विशिष्ठ अतिथि के रुप में कार्यक्रम में शिरकत की और राष्ट्रीय स्तर के इन पुरुस्कारों के लिये आरसीडीएफ और दुग्ध संघों के पदाधिकारियों को बधाई देते हुए उनका मनोबल बढ़ाया। भारत सरकार के पशुपालन एवं डेयरी मंत्री राजीव रंजन सिंह ने आज यहा नई दिल्ली स्थित मानेकशा सेन्टर में आयोजित राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के अवसर पर आयोजित एक भव्य समारोह में यह पुरुस्कार वितरित किये। पशुपालन और डेयरी विकास के क्षेत्र में गोपाल रत्न राष्ट्रीय अवार्ड एक प्रतिष्ठित अवार्ड है। विजेताओं का चयन देशभर से 2574 ऑनलाईन आवेदकों में से किया गया था। आरसीडीएफ की प्रशासक और प्रबन्ध संचालक श्रुति भारद्वाज ने राष्ट्रीय स्तर के इन पुरुस्कारों के लिये प्रदेश की सहकारी डेयरियों से जुड़े दुग्ध उत्पादकों और डेयरी कर्मचारियों को बधाई देते हुए इसे उनके द्वारा की गई कड़ी महनत का फल बताया है। उन्होंने कहा कि इससे पहले भी आरसीडीएफ एवं इससे सम्बद्ध जिला दुग्ध संघों को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हाल ही में केन्द्रीय गृह एवं सहकारित मंत्री अमित शाह ने अहमदाबाद में आयोजित एक समारोह में भीलवाड़ा की दुग्ध उत्पादक लाभार्थी माया देवी और आरसीडीएफ की एमडी श्रुति भारद्वाज को कार्बन क्रेडिट की पहली किस्त सौंपी थी। भीलवाड़ा में फलैक्सी बॉयोगेस के पायलेट प्रोजेक्ट में कार्बन क्रेडिट अर्जित करने और पर्यावरण सुरक्षा के काम की राष्ट्रीय स्तर पर सराहना की गई थी। उन्होंने कहा कि हाल ही में आरसीडीएफ एवं जिला दुग्ध संघों द्वारा दूध एवं दुग्ध उत्पादों की उच्च गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिये सरस अमृतम अभियान चलाया गया है। इसी प्रकार युवा, महिला और स्वयं सहायता समुहों के लिये सरस स्वरोजगार योजना 2024 लागू की गई है जिसके अन्तर्गत डेयरी बूथ, शॉप एजेन्सी, सरस कैफे और सरस पार्लर के लिये ऑनलाईन आवेदन आमंत्रित किये गये है। हाल ही में दीपावली के अवसर पर राज्यभर में 125 मेट्रिक टन से अधिक शुद्ध सरस दूध और घी से बनी मिठाईयां बेची गई जिनमें उपभोक्ताओं द्वारा अलवर का मिल्क केक और बीकानेर का रसगुल्ला सबसे ज्यादा पसंद किया गया। उन्होंने कहा कि राजस्थान राज्य में डेयरी विकास के क्षेत्र में नवाचारों का यह सिलसिला जारी रहेगा।

मोदी सरकार ने किया बाबा साहेब के सपने को साकार : मदन राठौड़

जयपुर। संविधान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में देश की राष्ट्रपति का अभिभाषण हुआ जिसमें राज्यसभा सांसद और भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ उपस्थित रहे। इसके बाद भाजपा मुख्यालय में आयोजित कार्यक्रम में प्रदेशाध्यक्ष राठौड़ ने भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी नड्डा का उद्बोधन सुना। बीकानेर हाऊस में उच्च स्तरीय बैठक का आयोजन हुआ। उच्च स्तरीय बैठक में जन सरोकार के विधिक मुद्दों, प्रदेश के विकास और विकसित भारत की संकल्पना जैसे विषयों पर विचार विमर्श हुआ। बैठक में भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुनराम मेघवाल, केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिह शेखावत, भूपेंद्र यादव सहित राजस्थान के सांसद उपस्थित रहे। राठौड़ ने कहा कि संविधान ही आज देश को आगे बढ़ने में कारगर साबित हो रहा है। संविधानसभा के अध्यक्ष के रूप में डॉ. भीमराव अम्बेड़कर ने बहुत अच्छे-अच्छे शब्दों के रूप में संवैधानिक ग्रंथ बनाकर दिया है। 2014 में भारत के प्रधानमंत्री बनने के बाद नरेंद्र मोदी ने 19 नवम्बर 2015 को एक नोटिफिकेशन जारी कर 26 नवम्बर को संविधान दिवस मनाने की घोषणा की थी।

संविधान प्रत्येक नागरिक को समानता और सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार प्रदान करता है : राजदीपक रस्तोगी

अतिरिक्त सॉलिसीटर जनरल राजस्थान उच्च न्यायालय, भारत सरकार के अन्य वकील एवं एनजीओ हेल्प्स की ओर से राजस्थान सेंटर झालाना कें सभगार में 75वां संविधान दिवस कार्यक्रम मनाया गया।

जयपुर। अतिरिक्त सॉलिसीटर जनरल राजस्थान उच्च न्यायालय, भारत सरकार के अन्य वकील एवं एनजीओ हेल्प्स द्वारा 75वां संविधान दिवस कार्यक्रम मनाया गया। आज अतिरिक्त सॉलिसीटर जनरल राजस्थान उच्च न्यायालय राजदीपक रस्तोगी एवं उनके सहयोगी भारत सरकार के अधिवक्ता एवं एनजीओ हेल्प्स के तत्वावधान में 75वां संविधान दिवस का आयोजन राजस्थान इन्टरनेशनल सेन्टर झालाना के सभागार में किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति समीर जैन एवं विशिष्ठ अतिथि के रूप में न्यायाधिपति अनिल कुमार उपमन उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुए अतिरिक्त सॉलिसीटर जनरल राजदीपक रस्तोगी ने कहा कि भारत सरकार के अधिवक्ताओं द्वारा संविधान दिवस मनाने का संभवत: राष्ट्र में यह पहला कदम है और वह अपने अन्य सहयोगियों के सहयोग के कारण इस प्रकार का कार्यक्रम पहली बार आयोजित कर रहे हैं और यह भी बताया कि अन्य स्तरों और सरकारी स्तर पर तो कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं परन्तु भारत सरकार के अधिवक्ताओं द्वारा आयोजित यह सम्पूर्ण राष्ट्र में पहला कार्यक्रम है और उन्होंने यह बताया कि भारत के संविधान को 26 नवम्बर 1949 को अंगीकार किया गया था और 75 वर्ष पूर्ण होने पर यह संविधान का अमृत महोत्सव है। रस्तोगी ने प्राचीनकाल में विद्यमान रही न्यायिक व्यवस्थाओं से लेकर वर्तमान में भारत के संविधान के विभिन्न प्रावधानों पर प्रकाश डाला और बताया कि भारत एक ऐसा राष्ट्र है जिसका संविधान प्रत्येक नागरिक को समानता और सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार प्रदान करता है और बिना किसी धर्म, जाति या आर्थिक आधार के समस्त नागरिकों को एक से अवसर प्रदान करने का भी कार्य करता है। संविधान के अनुच्छेद 21 के अन्तर्गत जीवन जीने का अधिकार विषय पर भी प्रकाश डाला गया।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए न्यायाधीश समीर जैन ने संविधान को रामायण और महाभारत के समकक्ष एक पवित्र ग्रन्थ बताया और उसके विभिन्न आयामों पर चर्चा करते हुए वहां उपस्थित वकील समुदाय को आह्वान किया कि इस विषय पर सार्थक चर्चा तब ही हो सकती है जब आपस में मिल बैठकर विचार किया जावे जिस पर भारत सरकार के कई अधिवक्ताओं द्वारा विभिन्न प्रश्न किये गये जिनका उत्तर न्यायाधीश समीर जैन ने दिया। विशिष्ठ अतिथि के रूप में बोलते हुए न्यायाधीश अनिल कुमार उपमन ने संविधान निर्माण के इतिहास पर पकाश डालते हुए संविधान में मौजूद मूलभतू अधिकार और नीति निर्देशक तत्वों के महत्व पर भी प्रकाश डाला और यह भी कहा कि संविधान की रक्षा के लिए न्यायालय सदैव आगे आते रहे हैं और आते रहेंगे जिससे निचले स्तर तक के नागरिक को समान रूप से न्याय मिल सके। एनजीओ हेल्प्स के अध्यक्ष एवं भारत सरकार के वरिष्ठ अधिवक्ता प्रशान्त चतुर्वेदी ने संविधान को एक अत्यन्त महत्वपूर्ण दस्तावेज बताते हुए यह कहा कि किस प्रकार भारत का संविधान अपने आप में एक सम्पूर्ण दस्तावेज है जिसके कारण प्रत्येक नागरिक अपनी बात को स्पष्ट रूप से कहने का अधिकार रखता है आरै उसे अन्य सभी के साथ सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार मिलता हौ कार्यक्रम का संचालन भारत सरकार की वरिष्ठ अधिवक्ता मंजीत कौर द्वारा किया गया एवं कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ सम्पन्न हुआ।

- **अति.सॉलिसीटर जनरल राजदीपक रस्तोगी ने प्राचीनकाल में विद्यमान रही न्यायिक व्यवस्थाओं से लेकर वर्तमान में भारत के संविधान के विभिन्न प्रावधानों पर प्रकाश डाला**

संविधान के प्रति अश्रद्धा पैदा ना करें : देवनानी

विधानसभाध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने मंगलवार को विधानसभा में संविधान दीर्घा का लोकार्पण किया।

जयपुर। विधानसभाध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा है कि संविधान के प्रति अश्रद्धा पैदा ना करें। संविधान के मूल ढांचे को कोई बदल नहीं सकता है। संविधान के 22 भागों में हमारी संस्कृति और नैतिकता का विवरण है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक संविधान को पढ़ें, उसे जानें और उसके अनुकूल जीवन जीने का प्रयास करें। संविधान हमारी आत्मा और पवित्र ग्रंथ है। यह हमारे जीवन मूल्य व संस्कृति का स्वाभिमान भी है। संविधान सिर्फ एक कानूनी दस्तावेज नहीं है, बल्कि लोकतांत्रिक भारत के लोगों की आकांक्षाओं, मूल्यों और आदर्शों का प्रतिबिम्ब है। देवनानी मंगलवार को विधानसभा में संविधान दिवस पर आयोजित समारोह में राजनैतिक आख्यान संग्रहालय में नवनिर्मित संविधान दीर्घा का लोकार्पण किया। इस संविधान दीर्घा में मूल संविधान के 22 भागों के आरम्भ में दर्शायी गयी कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया है। देवनानी ने बताया कि संविधान दीर्घा का उद्देश्य आमजन और युवाओं में राष्ट्र और राष्ट्र के संविधान का बोध कराने के साथ ही संविधान, सांस्कृतिक और नैतिकता के प्रति जागरुकता लाना है। उन्होंने संविधान दिवस को संविधान निर्माताओं के प्रति श्रद्धाभाव प्रकट करने तथा उनके अविस्मरणीय योगदान के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का स्मरण दिवस बताया है।

विधानसभा में अध्यक्ष वासुदेव देवनानी की पहल पर पहली बार आयोजित संविधान दिवस समारोह में सैकड़ों अधिवक्ता, विधि संस्थानों के छात्र-छात्राओं के साथ ही अन्य नागरिक और विधान सभा के अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। देवनानी ने अधिवक्ताओं का आवहान किया कि वे संविधान प्रदत्त अधिकारों की पालना कराने में सहयोगी बनें। संविधान की आत्मा और डॉ. अंबेडकर की अपेक्षाओं के अनुरूप आज के समय की आवश्यकता के अनुसार लोगों को शीघ्र न्याय मिले, सस्ता न्याय मिले, संविधान की रक्षा हो, संविधान में निष्ठा हो और हम सभी असवैधानिक कार्यों से बचें। उन्होंने समाज और राष्ट्र हित में कार्य करने के लिए कहा।

देवनानी ने कहा कि संविधान के 22 भागों के मुख पृष्ठ पर भारत की संस्कृति और स्वाभिमान को दिखाती हुई तस्वीरें है। उन्होंने कहा कि इन तस्वीरों में भारत की प्राचीन सभ्यता मोहन जोदड़ो से लेकर महाभारत में कुरुक्षेत्र और कृष्ण द्वारा दिए गए गीता के ज्ञान, भगवान श्री राम की लंका विजय, भगवान बद्ध का जीवन चरित्र, महान सम्राट अशोक, उज्जैन के न्यायिप्रय महाराज विक्रमादित्य के राजदरबार, प्राचीन वैदिक गुरुकुल, नालंदा विश्वविद्यालय, भगवान नटराज, रामभक्त हनुमान के साथ ही झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, छत्रपति वीर शिवाजी और गुरु गोविन्द सिंह को प्रदर्शित किया गया है।

देवनानी ने कहा कि भारत का संविधान विश्व का सबसे लम्बा और लिखित संविधान है। यह हमारे लोकतांत्रिक गणराज्य की नींव है। उन्होंने कहा कि भारत के संविधान का इतिहास उन लाखों भारतीयों के संघर्षों और स्वतंत्र होने की आशाओं में निहित है जो स्वतंत्रता, न्याय एवं समानता के लिए तरस रहे थे। महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, सरदार पटेल, बाबा साहब अंबेडकर, वीर सावरकर जैसे महापुरुषों के नेतृत्व में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम ने एक स्वतंत्र और लोकतांत्रिक भारत की प्राप्ति के लिए आशा की चिंगारी जलाई थी।

संसदीय कार्य एवं विधि मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा कि विधान सभा जैसे पवित्र स्थल पर पहली बार आयोजित संविधान दिवस समारोह महत्वपूर्ण है। संविधान की मूल भावना जनसेवा है और यह मानव शक्ति का संचार है। भारत का संविधान सशक्त है। इसमें भारत के प्रत्येक नागरिक की आस्था बढी है। नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि राष्ट्र की वायु, धरती और पानी पर राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का अधिकार है। राष्ट्र में सभी समान है, इसलिए सभी के लिए एक जैसा विधान है, जिसे संविधान कहते हैं। संविधान के मर्म को गहराई से समझे और अपनी जिम्मेदारी निभायें।

महाधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि विधान सभा की संविधान दीर्घा और आज के दिवस का सामान्जस्य है। न्याय पालिका, कार्य पालिका और विद्यायिका को मिलकर संविधान का अनुपालन करना चाहिए। संविधान के ज्ञान का प्रसार ही संविधान दिवस का मूल उद्देश्य है। अतिरिक्त महाधिवक्ता बसत छाबा ने कहा कि संविधान की प्रस्तावना में ही संविधान का स्वरूप निहित है। वरिष्ठ अधिवक्ता आर.एन माथुर ने कहा कि अंतिम व्यक्ति को राहत पहुंचाना ही संविधान की अनुपालना है। महिलाओं और बच्चों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। देवनानी ने अतिथियों को संविधान की प्रक्रिया स्मृति स्वरूप भेंट की। इस मौके पर राजस्थान विधानसभा के सदस्य, पूर्व सदस्य, विशिष्ट सचिव भारत भूषण शर्मा, विशिष्ट सहायक के.के. शर्मा सहित अधिवक्ता, विधि महाविद्यालय के विद्यार्थी और विधानसभा के अधिकारी व कर्मचारी मौजूद थे।

- **विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि संविधान हमारी आत्मा और हमारा पवित्र ग्रंथ**
- **विधानसभा में पहली बार मनाया गया संविधान दिवस**

रामपुर फाटक पर बनेगा ओवर ब्रिज

जयपुर। सांगानेर विधानसभा में लगातार विकास के कार्य हो रहे हैं। उसमें विधायक भजनलाल शर्मा सांगानेर विधानसभा में लगातार सौगातों पर सौगात देने का कार्य कर रहे हैं। इस श्रृंखला में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने रामपुरा फाटक सांगानेर रेलवे स्टेशन पर लगातार यातायात के दबाव और जनता को घंटो रामपुर फाटक पर इंतजार करते देख रामपुरा फाटक पर पुलिया और लो हाइट सबवे बनाने का फैसला लिया है।

'बॉडी बदलाव वाली बसों को सड़क पर चलने की नहीं दे सकते मंजूरी'

जयपुर। हाईकोर्ट ने कहा है कि मोटर वाहन अधिनियम और एआईएस नियमों की अवहेलना कर बॉडी में बदलाव करने वाली बसों को आमजन की सुरक्षा को देखते हुए सड़क पर चलने की अनुमति नहीं दी जा सकती। यदि इन बसों के चलने की छूट दी गई तो इससे ना केवल कानूनी नियमों की अवहेलना होगी, बल्कि यह आमजन की सुरक्षा के लिए भी खतरा होगा। अदालत ने याचिकाकर्ता बस संचालकों को छूट दी कि वे संबंधित परिवहन अधिकारी के यहां से अपनी बसों की बॉडी में बदलाव करने के लिए उन्हें प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन नियमों की अवहेलना कर वे बसों का संचालन नहीं कर सकते। जस्टिस अनूप कुमार ढंड ने यह आदेश हरेन्द्र सिंह व अन्य की याचिकाओं पर दिया। अदालत ने स्पष्ट किया कि यदि याचिकाकर्ता बस संचालक तय अवधि में अपनी बसों की बॉडी में बदलाव नहीं कर पाए तो ऐसी स्थिति में विभाग उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने के लिए स्वतंत्र है।

संविधान ने हमें समानता का अधिकार दिया : जूली

जयपुर। प्रदेश कांग्रेस के निर्देशानुसार जयपुर शहर जिला कांग्रेस अध्यक्ष आर आर तिवाडी के नेतृत्व में संविधान दिवस 26 नवंबर को प्रदेश कांग्रेस कार्यालय पर विचार गोष्ठी एवं सभा का आयोजन किया गया।

- **संविधान दिवस पर जिला कांग्रेस ने की विचार गोष्ठी**

मुख्य अतिथि नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली, मुख्य वक्ता पूर्व अध्यक्ष आरपीएससी बीएम शर्मा, विधायक एवं सचेतक रफीक खान, विशिष्ट अतिथि सत्येंद्र सिंह राघव पूर्व अतिरिक्त महाधिवक्ता एवं ललित तूनवाल, संगठन महासचिव, प्रदेश कांग्रेस आदि ने संबोधित किया।

नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि संविधान ने हमें समानता का अधिकार दिया और अपने अधिकारों के लिए लड़ने हेतु कानून बनाया और उन्होंने संविधान दिवस पर सभी कार्यकर्ताओं को शपथ दिलाई। जिला कांग्रेस अध्यक्ष आर आर तिवाडी ने संबोधित करते हुए कहा कि हम सभी को संविधान को पढ़ना चाहिए और इसकी जानकारी प्रत्येक कार्यकर्ता को होनी चाहिए कि संविधान में हमें क्या अधिकार दिए हैं और क्या कर्तव्य हैं।

प्रोफेसर बी एम शर्मा ने संविधान दिवस पर आयोजित बैठक में संबोधित करते हुए कहा कि हमारे देश का संविधान सबसे अधिक समय में लिखा जाने वाला बड़ा संविधान है और लगभग 106 बार इसमें संशोधन करके आज की परिस्थितियों के अनुसार इसको बनाया गया है जबकि अमेरिका में आज भी सबसे छोटा संविधान है और सबसे कम बार संशोधन किया गया है।

कार्यक्रम में पूर्व मंत्री बृजकिशोर शर्मा, उप नेता प्रतिपक्ष रामकेश मीना, पूर्व सांसद अश्क अली टाक, पूर्व अध्यक्ष समाज कल्याण बोर्ड अर्चना शर्मा, प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महासचिव जसवंत गुर्जर, स्वर्णिम चतुर्वेदी, सचिव अयूब खान, जयपुर शहर जिला कांग्रेस कमेटी पदाधिकारी मोहम्मद सलीम, विनय पाल जादौन, पी डी शर्मा, जगदीश शर्मा, अतुल पारस, हरेंद्र पाल सिंह जादौन, युगल किशोर शर्मा, जावेद सेठी, राजीव चौधरी, रतन सैनी, रोहतास सिंह, राजकुमार शर्मा, कैलाश खारड़ा, रामावतार मोगरा सहित सैकड़ो कार्यकर्ता ब्लॉक अध्यक्ष, मण्डल अध्यक्ष, वार्ड अध्यक्ष, पार्षद, पार्षद प्रत्याशी, पूर्व पार्षद, चारों अग्रिम संगठन सेवादल, महिला कांग्रेस, युवा कांग्रेस एवं एनएसयूआई छात्र संगठन के पदाधिकारी एवं तमाम कांग्रेस कार्यकर्ताओं उपस्थिति थे।

उदयपुर के पूर्व राजघराने में दूसरे दिन भी विवाद जारी

सिटी पैलेस के बाहर सोमवार देर रात दोनों ओर से पत्थरबाजी हुई, तनाव की आशंका के चलते भारी पुलिस बल रहा तैनात

उदयपुर, (कासं)। मेवाड़ पूर्व राजघराने के सदस्य विश्वराज सिंह मेवाड़ के तिलक दस्तूर के दूसरे दिन मंगलवार को भी वे अब तक धूणी दर्शन नहीं कर पाए। उन्हें सिटी पैलेस के गेट खुलने का इंतजार है। सिटी पैलेस के गेट मंगलवार को भी बंद रहे। कानून व्यवस्था की स्थिति को देखते हुए कलेक्टर अरविंद पोसवाल, एसपी योगेश गोयल सहित प्रशासनिक और पुलिस अधिकारी जाब्ते सहित मौके पर तैनात रहे।

जानकारी के अनुसार उदयपुर राजघराने के सदस्य महेंद्र सिंह मेवाड़ के निधन के बाद उनके बेटे और नाथद्वारा से भाजपा विधायक विश्वराज सिंह मेवाड़ के राजतिलक और इससे जड़ी रस्मों को लेकर विवाद हुआ। राजशाही खत्म होने के बाद भी यह रस्म प्रतीकात्मक रूप से निभाई जाती है। विश्वराज सिंह राजतिलक के बाद सिटी पैलेस के अंदर धूणी के दर्शन करने जाना चाहते थे, लेकिन सिटी पैलेस में रहने वाले उनके चाचा अरविन्द सिंह मेवाड़ के परिवार ने उन्हें इसकी अनुमति नहीं दी। यहीं से पूरा विवाद शुरू हुआ। इससे पहले सोमवार देर रात उदयपुर के सिटी पैलेस परिवार के अन्य सदस्यों और विश्वराज सिंह के समर्थकों के बीच जमकर पत्थरबाजी हुई। इसमें कई लोग घायल भी हुए। महाराणा प्रताप के वंशजों में ऐसा झगड़ा पहली बार सामने आया है। वहींए सोमवार देर रात करीब 1 बजे प्रशासन ने विवादित जगह को कुर्क कर रिसीवर की नियुक्ति कर दी। विपक्षी ट्रस्ट से पत्थरबाजी और विवादित स्थल को लेकर 27 नवंबर तक जवाब भी मांगा है।

> ■ विश्वराज सिंह राजतिलक के बाद सिटी पैलेस के अंदर धूणी के दर्शन करने जाना चाहते थे, उनके चाचा अरविन्द सिंह मेवाड़ के परिवार ने अनुमति नहीं दी

न्यायालय अतिरिक्त जिला कलेक्टर (नगर उदयपुर) ने विवाद की स्थिति को देखते हुए विवादित स्थल सिटी पैलेस स्थित बड़ीपोल से धूणी व जनाना महल तक जाने के रास्ते व धूणी वाले स्थान को कुर्क किया जाकर घंटाघर थानाधिकारी को रिसीवर नियुक्त किया है। धूणी व जनाना महल तक जाने के रास्ते व धूणी वाले स्थान को कुर्क किया जाकर घंटाघर थानाधिकारी को रिसीवर नियुक्त किया है। तिलक दस्तूर के बाद परम्परा के तहत धूणी दर्शन नहीं कर पाए विश्वराज सिंह मेवाड़ ने इसके लिए स्थानीय प्रशासन को भी जिम्मेदार और कमजोर बताया है। विश्वराज सिंह मेवाड़ ने कहा कानूनी रूप से और परंपरा के तौर पर हर तरह से धूणी दर्शन करना मेरा हक है। मैं वहां सिर्फ धूणी दर्शन करने गया था, लेकिन प्रशासन की कमजोरी के कारण ऐसा नहीं हो सका। हम देर रात तक पैलेस के गेट के बाहर बैठे रहे, पैलेस के अंदर से बाहर खड़े लोगों पर पथराव हुआ, कांच की बोतलें फेंकी गयीं। पुलिसकर्मियों सहित हमारे समर्थन में आए लोग घायल हुए। जिला प्रशासन की ओर से सिटी पैलेस के मुख्य द्वारा पर नोटिस चस्पा कर घंटाघर थानाधिकारी को रिसीवर नियुक्त किया। अब देखना है कि प्रशासन आगे क्या कार्रवाई करता है।

मंगलवार को समोरबाग में मीडिया से बातचीत में विश्वराज सिंह ने साफ कह दिया कि मैं यदि दर्शन नहीं कर पाता हूं तो यह प्रशासन की फेलियर है। कल एक खास अवसर था इसलिए दर्शन करने जाना उचित था। पूजा स्थल पर जाने से किसी को रोक नहीं सकते। हम तो मंदिर के दर्शन कर वापस आ रहे। मेरा पूरा हक बनता की मैं वहां जाकर धोक लगू। कानून व्यवस्था को लेकर कहा कि मेवाड़ के लोग गलत चीज के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं। कानून हाथ में नहीं लेना है मेरी यह अपील है। बीती रात की घटना को लेकर विश्वराज सिंह मेवाड़ ने कहा कि प्रशासन ने कल ढील बरती, प्रशासन के प्रयास नाकाफी रहे।

इधर कलेक्टर अरविंद पोसवाल ने कहा कि ऐसे समय में प्रशासन की पहली जिम्मेदारी है कि कानून व्यवस्था न बिगड़े इसके हमने सभी प्रयास किए हैं। दोनों पक्षों के पांच-पांच प्रतिनिधियों की सूची मांगी है, ताकि दोनों पक्षों में बात कराई जा सके और रास्ता निकाला जा सके। हमने कुर्क की कार्रवाई का नोटिस सिटी पैलेस गेट पर चस्पा किया है। कानूनी कार्रवाई जारी है।

इधर इस मामले में सोमवार रात में धूणी दर्शन की सहमति नहीं बनने के बाद विश्वराज सिंह मेवाड़ अपने निवास समोर बाग चले गए, जहां दूसरे दिन से ही मामले को लेकर समाज जनों का आना जाना लगा रहा। सोमवार रात की घटना के बाद मामला नहीं निपटने पर रिसिवर नियुक्त करने के बाद मंगलवार को मेवाड़ क्षत्रिय महासभा संस्थान के अध्यक्ष बालूसिंह कानावत के नेतृत्व में प्रतिनिधि मंडल ने जिला कलेक्टर अरविन्द पोसवाल को ज्ञापन देकर धारा 145 जरिये सिटी पैलेस स्थित धूणी स्थल व अन्य संपत्ति अधिगृहित करने का हवाला देते हुए महाराणा मेवाड़ा विश्वराज सिंह मेवाड़ को राजतिलक की रस्म पूरी होने के बाद रिति अनुसार सिटी पैलेस स्थित धूणी दर्शन करने के पश्चात भगवान एकलिंगजी के दर्शन कराने का आग्रह किया है। बुधवार सुबह विश्वराज सिंह मेवाड एकलिंगनाथ दर्शन करने जाएंगे। इसे लेकर आईजी राजेश मीणा व जिला कलेक्टर ने चर्चा की।

विवाहिता का शव कुएं में मिला, हत्या की आशंका जताई

विवाहिता के पीहर पक्ष ने ससुराल पक्ष के खिलाफ दहेज हत्या का आरोप लगाते हुए रिपोर्ट दी

सुलताना, (निसं)। सुलताना थाना इलाके के मटाना गांव में एक विवाहिता का शव मकान के पास ही बने कुएं में मिला है। विवाहिता के पीहर पक्ष ने ससुराल पक्ष के खिलाफ दहेज हत्या का आरोप लगाते हुए रिपोर्ट दी है। वहीं विवाहिता के शव को फिलहाल चिड़ावा के उप जिला अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया गया, जहां पर बुधवार सुबह मेडिकल बोर्ड से शव का पोस्टमार्टम करवाया जाएगा।

मृतक विवाहिता।

जानकारी के मुताबिक नांद निवासी भरत सिंह की दो बेटियों ज्योति कंवर और डिम्पल कंवर की शादी एक साल पहले सात दिसंबर 2023 को मटाना निवासी वीरेंद्र निर्बाण और विराट निर्बाण के साथ हुई थी। पीहर पक्ष का आरोप है कि शादी के बाद से ज्योति कंवर को उसके पति वीरेंद्र निर्बाण समेत सास-ससुर, काका ससुर व काकी सास द्वारा दहेज के लिए प्रताड़ित किया जाता था। मंगलवार दोपहर को सभी ने मिलकर उसे कुएं में डाल दिया, जिससे उसकी मौत हो गई। वहीं कुएं में गिरने से मौत की सूचना भी पीहर पक्ष को नहीं दी। लेकिन पीहर पक्ष को किसी के द्वारा सूचना लगी तो वे मटाना पहुंचे। तब तक शव कुएं से निकालकर अस्पताल पहुंचा दिया गया था। इसके बाद पुलिस की भी सूचना आई। पीहर पक्ष ने दहेज हत्या का आरोप लगाते हुए आरोपियों को गिरफ्तार करने की मांग की है।

ज्योति कंवर और वीरेंद्र निर्बाण की शादी सात दिसंबर 2023 को हुई थी। 11 दिन बाद ही उनकी शादी की पहली वर्षगांठ थी, लेकिन उससे पहले ही ज्योति की मौत हो गई। घटना के वक्त उसकी छोटी बहन डिम्पल, जो मृतक ज्योति की देवरानी भी थी, वो नांद गांव पीहर आई हुई थी।

तीन हजार की रिश्वत लेते पटवारी गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। एंटीकरप्शन ब्यूरो कोटा की स्पेशल टीम ने कोटा विकास प्राधिकरण के पटवारी हल्का पटवार

> ■ रिश्वत की राशि प्लॉट का पट्टा बनाने की एवज में ली थी

रॉकी अरोड़ा को तीन हजार की रिश्वत लेते रंगे हाथों पकड़ा है। रिश्वत की ये राशि प्लॉट का पट्टा बनाने की एवज में ली थी। आरोपी पटवारी पहले दो किश्तों में 15 हजार की घूस ले चुका था।

घूस लेने का आरोपी पटवारी।

एडिशनल एसपी स्पेशल यूनिट मुकुल शर्मा ने बताया कि आरोपी रॉकी अरोड़ा, हल्का पटवार, सोगरिया स्टेशन एरिया में पोस्टेड है, जो परिवादी से प्लॉट का पट्टा बनाने के एवज में 18 हजार की रिश्वत डिमांड कर रहा था। आरोपी परिवादी से पहले 15 हजार ले चुका था। बाकी 3 हजार के लिए और दबाव बना रहा था। परिवादी की शिकायत पर सोमवार को सत्यापन करवाया। सत्यापन में रिश्वत मांगने की पुष्टि हुई। जिसके बाद इंस्पेक्टर पृथ्वीराज, सब इंस्पेक्टर किशनलाल की टीम ने कोटा विकास प्राधिकरण कार्यालय में ट्रैप कार्रवाई को अंजाम दिया। पटवारी को तीन हजार लेते रंगे हाथों पकड़ा है।

छात्र ने आत्महत्या की

उदयपुर, (निसं)। सेलीब्रेशन माल के चौथी मंजिल से कूदकर स्कूली छात्र ने आत्महत्या कर ली। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसर मंगलवार दोपहर में सुखेर थाना क्षैत्र स्थित सेलीब्रेशन माल में आए स्कूली छात्र वरड़ा नाई निवासी कृष पामेचा (17) पुत्र नारायणलाल ने चौथी मंजिल से नीचे कूदकर आत्महत्या कर ली।

सूचना मिलने पर हेड कांस्टेबल जगदीश मेनारिया ने मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया। कृष विद्या भवन पब्लिक स्कूल देवाली में कक्षा 11 का छात्र था। दोपहर में वह बाइक लेकर सेलीब्रेशन माल आया तथा पार्किंग में बाइक खड़ी कर माल में जाकर चौथे माले से नीचे कूद पड़ा। इसको देख वहां मौजूद लोगों ने निजी चिकित्सालय पहुंचाया, जहां से रेफर करने पर एमबी चिकित्सालय पहुंचाया, जहां उसकी मौत हो गई। मृतक की जेब से मिले आई कार्ड से उसकी शिनाख्त कर परिजनों को सूचना दी। आत्महत्या करने के कारणों का पता नहीं चल पाया।

खनिज टीम को 6 करोड़ रुपये से अधिक के क्वार्टज का अवैध खनन मिला

खनि अभियंता चित्तौड़गढ़ के क्षेत्राधिकार में टीम ने कार्रवाई की।

उदयपुर, (कासं)। अतिरिक्त निदेशक माइंस उदयपुर जोन दीपक तंवर के निर्देशन में खान विभाग की टीम ने चित्तौड़गढ़ के भूपालसागर के पारी गांव में अवैध खनन के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की। टीम द्वारा खनिज क्वार्टज का मौके पर 16-16 टन वजन के दो ब्लॉक और एक्सकवेटेड माल पकड़ा गया। इसके साथ ही किए गए खनन का आंकलन करने पर 2592 टन अवैध खनन पाया गया। खनिज क्वार्टज की कीमत लगभग 50 हजार प्रति टन बताई जा रही है। इस तरह से करीब 6 करोड़ रुपये से अधिक के क्वार्टज खनिज का अवैध खनन पाया गया है। अतिरिक्त निदेशक तंवर ने खनि अभियंता चित्तौड़गढ़ को संबंधित के खिलाफ मामला दर्ज कराने के निर्देश दिए हैं।

अतिरिक्त निदेशक दीपक तंवर को मिली जानकारी पर संबंधित क्षेत्र से बाहर के अधिकारियों को बिना किसी पूर्व सूचना के संबंधित क्षेत्र में भेज कर कार्रवाई को अंजाम दिया गया। गौरतलब है कि प्रमुख शासन सचिव टी. रविकांत द्वारा विभिन्न समीक्षा बैठकों के दौरान अवैध खनन गतिविधियों के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति पर कार्य करते हुए कार्रवाईके निर्देश दिए हुए हैं।

अतिरिक्त निदेशक टीपक तंवर ने बताया कि गुप्त स्रोत से प्राप्त जानकारी पर सहायक खनि अभियंता बिजौलिया बंशीलाल सुथार और राजसमंद फोरमैन जमुना शंकर को मय जाब्ते के बिना पूर्व जानकारी के अवैध खनन स्थल पर भेजा गया और लक्ष्मण पुत्र भगवान जाट की खातेदारी भूमिपर खनिज क्वार्टज का अवैध खनन पाया गया।

सड़क हादसे में पिता की मौत, पुत्र गंभीर घायल

मृतक के बेटे दीपु सिंह को गंभीर अवस्था में जयपुर उपचार के लिये भेजा गया।

मालपुरा, (निसं)। जयपुर-भीलवाड़ा स्टेट हाईवे के मालपुरा केकड़ी सड़क मार्ग पर इंदोली के पास मंगलवार को हुये सड़क हादसे मे अज्ञात वाहन की टक्कर से पिता की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई, तो पुत्र गंभीर रूप से घायल हो गया, जिसे गंभीर हालत में मालपुरा अस्पताल से जयपुर रैफर किया गया है।

मामले के अनुसार सरवाड़ थाना क्षैत्र के हिंगोनिया निवासी सुमन सिंह पुत्र भंवर सिंह मंगलवार को अपने पुत्र दीपु सिंह के साथ मोटरसाइकिल पर सवार होकर मालपुरा से गांव जा रहे थे। इंदोली के पास अज्ञात वाहन ने बाइक

> ■ अज्ञात वाहन ने बाइक को जोरदार टक्कर मार दी और मौके से फरार हो गया

को जोरदार टक्कर मार दी और मौके से फरार हो गया। सड़क हादसे में बाइक सवार दोनों पिता-पुत्र गंभीर रूप से घायल हो गये।

हादसे के दौरान सड़क मार्ग से गुजर रहे लोगों ने अपने निजी वाहन से सड़क किनारे लावारिस पड़े दोनों घायलों को मालपुरा अस्पताल में उपचार के लिये भर्ति करवाया जहां चिकित्सकों ने स्वास्थ्य परीक्षण कर सुमन सिंह को मृत घोषित किया व घायल पुत्र को चिन्ताजनक हालत में जयपुर रैफर किया। मृतक सुमन सिंह केकड़ी पंचायत समिति में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी था। मृतक का ईकलोता बेटा दीपु सिंह को गंभीर घायल अवस्था में जयपुर उपचार के लिये भेजा गया। सूचना मिलने पर लाम्बाहरिसिंह थाना पुलिस ने मालपुरा पहुंचकर परिजनों की मौजूदगी मे पंचनामा व पोस्टमार्टम की कार्यवाही कर शव परिजनों को सौंपा।

पेट्रोल पंप कर्मचारी से लूट का प्रयास

डूंगरपुर, (निसं)। चितरी थाना क्षेत्र के गडा जसराजपुर में पेट्रोल पंप कार्मिक से लूटपाट का प्रयास हुआ। दो बदमाशों ने पेट्रोल पंप कार्मिक पर लोहे के सरिए से हमला कर घायल कर दिया। इसके बावजूद भी कार्मिक ने रुपयों से भरा बैग नहीं छोड़ा। इसके बाद बदमाश भाग गए। घायल पेट्रोल पंप कार्मिक को अस्पताल में भर्ती कर इलाज शुरू कर दिया है। फिलहाल पुलिस बदमाशों को नामजद करते हुए तलाश में जुटी है।

चितरी थाना एएसआई ने बताया कि डायालाल पुत्र नारायणलाल चौबीसा निवासी उस्मानिया ने रिपोर्ट दर्ज करवाई है। इसमें बताया की वह गडा जसराजपुर में पेट्रोल पंप पर काम करता था। सोमवार शाम के समय वह पेट्रोल पंप पर पेट्रोल डीजल भरने का काम कर रहा था। इस दौरान प्रभुलाल पुत्र कनकमल बामणिया और महिपाल पुत्र डायालाल बामणिया निवासी रातडिया फला दाहेला पेट्रोल पंप पर आए। दोनों बदमाशों ने आते ही उसके पास से रुपए छीनने का प्रयास किया। इस पर उसने विरोध किया। दूसरे बदमाश ने लोहे के सरिए से उस पर हमला कर दिया। जिससे वह घायल होकर नीचे गिर गया, लेकिन हिम्मत जुटाकर रुपयों से भरा बैग नहीं छोड़ा। लोगों के आते देख बदमाश मौके से भाग गए। घटना को लेकर पूरी वारदात पेट्रोल पंप पर लगे सीसीटीवी में कैद हो गई। घटना की सूचना पर चितरी थाना पुलिस मौके पर पहुंची। घायल डायालाल को सागवाडा अस्पताल में भर्ती करवाया गया। पीड़ित डायालाल ने रातडिया फला दाहेला निवासी प्रभुलाल और महिपाल के खिलाफ लूटपाट, सरिए से हमला करने का प्रकरण दर्ज करवाया है। पुलिस दोनों ही बदमाशों की तलाश में जुट गई है।

RAJASTHAN RENEWABLE ENERGY CORPORATION LIMITED
(A Government of Rajasthan Undertaking), Office: E-166, Yudhister Marg, C-Scheme, Jaipur 302001,Rajasthan, Phone No. 0141-2225859, 2229341
E-mail : eccellrrec@gmail.com website : http://www.energy.rajasthan.gov.in/rrecl

(NIT No.TN-12/RREC/2024-25)

Tender are invited for supply of Induction Cooktops with one year of comprehensive warrantee in Rajasthan.
The complete bid document can be viewed and downloaded from e-procurement portal **https://eproc.rajasthan.gov.in/**, SPPP Portal **(https://sppp.rajasthan.gov.in/sppp/)** and RRECL website **(https://energy.rajasthan.gov.in/rrecl/).**
Bid Submission End Date : 02/12/2024
UBN No. : REC2425GLOB00025
NIB Code : REC2425A0026
Raj.Samwad/C/24/8317 Director (Technical)

कार्यालय नगर पालिका मांगरोल जिला बारां (राज.)
क्रमांक :- न.पा.अ./2024/1601 दिनांक :- 20/11/2024
ई-निविदा सूचना सं. 02/2024-25
इस कार्यालय की निविदा सूचना संख्या :- न.पा.अ./2024/1588-1590 दिनांक 18.11.2024 के द्वारा कुल 9 कार्य की अनुमानित लागत 187.00 लाख रू. की पंजीकृत संवेदको से ऑन लाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित समस्त विवरण **http://sppp.rajasthan.gov.in and http://eproc.rajasthan.gov.in** पर उपलब्ध है। **UBN No. DLB2425SLOB12050, DLB2425SLOB12051, DLB2425SLOB12052, DLB2425SLOB12053, DLB2425SLOB12054, DLB2425SLOB12055, DLB2425SLOB12056, DLB2425SLOB12057, DLB2425SLOB12058**
राज.संवाद/सी/24/8273 अध्यक्ष नगर पालिका मांगरोल अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका मांगरोल

कार्यालय नगर विकास न्यास, पाली
जिला कलेक्ट्रेट परिसर, पाली
फोन नं. 02932-223222 ई मेल- uitpali@gmail.com
क्रमांक : न्या.पा./विज्ञापन/2024/2139 दिनांक : 25.11.2024
ई-निविदा सूचना संख्या-22/2024-25
नगर विकास न्यास, पाली की ओर से न्यास/राजकीय विभाग में नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्योरमेन्ट प्रक्रिया से सिविल कार्यों हेतु ऑन-लाइन निविदाएं आमंत्रित की जाती है, इन कार्यों की अनुमानित लागत, निविदा बेचे जाने तथा प्राप्त करने की दिनांक, निविदा शर्तें आदि सम्पूर्ण विवरण http://eproc.rajasthan.gov.in, sppp.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है तथा न्यास कार्यालय, पाली में कार्य दिवस के दौरान भी देखी जा सकती है।

कार्य	यू.बी.एन नम्बर (sppp.rajasthan.gov.in)
सिविल कार्य	ITP2425WSOB00039

राज.संवाद/सी/24/8310 अधिशाषी अभियन्ता

कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा
क्रमांक :- एक 3/लेखा/24-25/3615 - 35 दिनांक :- 22/11/2024
ऑनलाईन निविदा सूचना संख्या : 20/2024-25
कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा की ओर से क्र.सं. 1 एवं 12 पर पर अंकित कार्यों हेतु अनुभवी संवेदकों/सेवा प्रदाता एजेन्सियों से तथा क्र.सं. 13 से 49 पर अंकित कार्यों हेतु के.डी.ए., कोटा में पंजीकृत उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों एवं राजस्थान सरकार के किसी भी राजकीय/ अर्द्धशासकीय/स्वायत्तशासी विभागो के अन्तर्गत ''एए'' तथा ''ए'' क्लास संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से कुल 49 कार्यों (UBN No. : UIK2425WSOB00326 To UIK2425WSOB00374) हेतु ऑन लाईन निविदाऐं आमंत्रित की जाती है। उक्त कार्यों का विस्तृत विवरण, निविदा शर्तें, अनुमानित लागत, निविदा बेचने, प्राप्त करने एवं खोलने की दिनांक आदि सम्पूर्ण विवरण वेबसाईट **https://eproc.rajasthan.gov.in, https://sppp.rajasthan.gov.in** एवं **http://urban.rajasthan.gov.in/uitkota** पर देखा जा सकता है।
राज.संवाद/सी/24/8276 अधिशाषी अभियन्ता

विश्व विख्यात सोनार किले की तीन माह पूर्व टूटी हुई दीवार के पत्थर गिरे, हादसा टला

भारी पत्थरों के गिरने से काम कर रहे दो मजदूरों ने भागकर जान बचाई

जैसलमेर, (निसं)। पर्यटन मानचित्र में विश्व प्रसिद्ध सोनार किले का दीदार करने सालाना लाखों देशी विदेशी सेलानी आ रहे हैं। केंद्र, राज्य और स्थानीय प्रशासन को पर्यटकों के जरिये सालाना करोड़ों रूपये का राजस्व प्रदान हो रहा है। वर्ल्ड हेरिटेज की लिस्ट में शामिल जैसलमेर के 868 साल पुराने सोनार किले की दीवार से मंगलवार को 4 बड़े पत्थर अचानक सड़क पर आ गिरे। भारी पत्थरों के गिरने से वहां काम कर रहे दो मजदूरों ने भागकर जान बचाई। यही नहीं, पत्थरों के गिरने से बैरिकेड के साथ-साथ बीएसएनएल का पोल भी टूटकर सड़क पर गिर गया। अचानक हुए इस हादसे से लोग भयभीत हो गए। गनीमत रही कि इस उस दौरान कोई वाहन या व्यक्ति सड़क से नहीं गुजरा, वरना बड़ा हादसा हो सकता था।

जैसलमेर सोनार दुर्ग की तीन माह पूर्व गिरी दीवार का मुख्य मार्ग, जहां पत्थर गिर गये।

घटना की जानकारी मिलने पर शहर कोतवाली पुलिस की टीम और पुरातत्व विभाग की टीम मौके पर पहुंची। शहर कोतवाली की टीम ने तुरंत रास्ते को दोनों तरफ से बंद करवाया और वहां पुलिसकर्मी तैनात किए। वहीं, पुरातत्व विभाग की टीम ने टूटी दीवार के अन्य पत्थरों को सोनार फोर्ट से हटाकर सुरक्षित रखवाने का काम किया ताकि दूसरे पत्थर ना गिरे । अचानक हुए हादसे के बाद दुकानदारों ने भयभीत होकर अपनी दुकानें बंद कर दीं। लोगों में इस घटना को लेकर रोष है। दुकानदारों का कहना है कि 6 अगस्त को बारिश के दौरान रिहायसी इलाके से लगती यह दीवार टूट कर गिरी थी। उसके बाद केन्द्रीय पर्यटन मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत को जैसलमेर दौरे के समय मौका बताया फिर भी इसको बनाने का काम अभी तक शुरू नहीं किया गया। इस कारण हजारों राहगीर परेशान हो रहे हैं।

जानकारी के अनुसार बरसात के दौरान 6 अगस्त को सोनार फोर्ट के छोटू लोहार हवेली के सामने आये मार्ग की तरफ वाली दीवार का एक हिस्सा टूट कर सड़क पर आ गिरा था। बारिश के दौरान सड़क पर ज्यादा चहल-पहल नहीं होने से कोई हादसा नहीं हुआ था। प्रशासन ने सड़क के दोनों तरफ बैरिकेड लगाकर एहतियातन बंद कर दिया था। उसके बाद थोड़ा रास्ता खोलकर वाहनों की आवाजाही शुरू की थी। लेकिन 3 महीने बीत जाने के बाद भी पुरातत्व विभाग ने इसकी मरम्मत का काम शुरू नहीं करवाया। मंगलवार को एक बार फिर दीवार से पत्थर गिर गए।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के मल्टी टास्क सुपरवाइजर देवेश सिंघल ने बताया कि अभी तक इसका टेंडर नहीं हो पाया है, इसलिए काम शुरू नहीं हो पाया है। मंगलवार को सड़क का एक बैरिकेड टूटा था तो उसको सही करवाने के लिए 2 मजदूर लगे थे। लेकिन, अचानक से ऊपर सोनार किला से 4 बड़े पत्थरों के गिरने से मजदूर मौके से भागे। पत्थर गिरने से एक बैरिकेड और बीएसएनएल का एक पोल टूट गया है। हमने उच्चाधिकारियों को सूचना दे दी है। प्रयास कर रहे हैं कि जल्द ही इसका टेंडर हो जाए तो इसका काम शुरू किया जाए।

शहर कोतवाली पुलिस के एसआई सज्जनसिंह ने बताया कि हादसे की जानकारी मिलने के बाद शिव रोड से घटना स्थल के मार्ग को बंद करवा कर एहतियातन दूसरे मार्ग से डायवर्ट किया गया है, ताकि कोई अन्य हादसा न हो जाए। मौके पर सिपाही भी तैनात कर दिए गए हैं, ताकि यहां से कोई व्यक्ति या वाहन न गुजरे।

Rajasthan Urban Drinking Water Sewerage and Infrastructure Corporation Ltd.
(A Government of Rajasthan Undertaking) Old Working Women Hostel, Behind Nehru Place, Lal Kothi, Tonk Road, Jaipur
Ph: 0141-2742240; E-mail: rudsico@rajasthan.gov.in, ruifdco@gmail.com; Web: urban.rajasthan.gov.in/rudsico
F18 (52) RUDSICO/AMRUT-2.0/2024-25/Tender/ Date :- 20/11/2024

NIB No. 06/2024-25

Notice inviting online bids for Formulation of GIS based master plan and Updation of Existing Master Plans in GIS format &Creation of Urban Geodatabase for Towns under AMRUT 2.0

Rajasthan Urban Drinking Water Sewerage & infrastructure Corporation Limited (RUDSICO), a Government of Rajasthan undertaking, invites online unconditional bids on behalf of the Governor of Rajasthan through e-procurement portal **http://eproc.rajasthan.gov.in** from eligible bidders in accordance with the RTPP Act 2012 and RTPP Rules 2013, amended up to date, and under Open Competitive Bidding (OCB) National with single stage-two envelope Bidding procedure for following work.

S. No.	Name of Work	Cost (In Lakh)	Bid Security (In Lakh)	Period of completion
1	Formulation of GIS based master plan for towns under AMRUT 2.0			
a.	Package – 01	351.00	7.02	12 Months
b.	Package - 02	398.00	7.96	
2	Updation of Existing Master Plans in GIS format and Creation of Urban Geodatabase for Towns under AMRUT 2.0			
a.	Package – 01	416.00	8.32	
b.	Package - 02	453.00	9.06	

The details of NIB can be seen at e-procurement portal of state government **sppp.rajasthan.gov.in** and **eproc.rajasthan.gov.in** from date 25.11.2024 at 1700 Hours till the end date of online submission of bids i.e. 30.12.2024 up to 1500 Hours. Any subsequent addendum/corrigendum shall be published only at the e-procurement portal.
UBN No. - RDP2425SLOB00093, RDP2425SLOB00094, RDP2425SLOB00095, RDP2425SLOB00096
Executive Director
Raj.Samwad/C/24/8288 RUDSICO, Jaipur

राज्य सरकार ने प्रदेश के 49 नगरीय निकायों में प्रशासक नियुक्त किए

ज्ञात रहे कि गत 25 नवंबर को प्रदेश के 5 नगर निगम, 20 नगर परिषद् और 24 नगर पालिकाओं के बोर्ड का कार्यकाल पूरा हो गया था, इस कारण सरकार ने प्रशासक लगाए

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। राज्य सरकार ने सोमवार देर रात आदेश जारी कर प्रदेश की 49 नगरीय निकायों में प्रशासक नियुक्त किए हैं। इन निकायों का कार्यकाल सोमवार को ही खत्म हो गया। स्वायत्त शासन विभाग की ओर से निकाले गए आदेश में कहीं अतिरिक्त जिला कलेक्टर तो कहीं उपखंड अधिकारी को प्रशासक बनाया गया है। बताया जा रहा है कि इन निकायों के वार्डों का भी नए सिरे से सीमांकन किया जाना है, जिसकी प्रक्रिया अगले साल मार्च 2025 तक पूरी होगी। ऐसे में राज्य सरकार के इस कदम को "वन स्टेट-वन इलेक्शन" की कवायद के तौर पर भी देखा जा रहा है।

सूत्रों की मानें तो राज्य में 25 नवंबर को 5 नगर निगम, 20 नगर परिषद् और 24 नगर पालिकाओं के बोर्ड का कार्यकाल पूरा हो गया। अब नया बोर्ड बनने तक यही प्रशासक इन नगरीय निकायों में फैसले लेते हुए सरकार के पास प्रस्ताव भिजवाएंगे। सरकार ने प्रशासक के तौर पर जहां नगर निगम है वहां कलेक्टर, जहां नगर परिषद है, वहां ए.डी.एम. और जहां नगर पालिका है, वहां एसडीएम को नियुक्त किया है।

चूंकि राज्य सरकार "वन स्टेट-वन इलेक्शन" मॉडल पर काम कर रही है। इसे देखते हुए सरकार ने अब इन निकायों के अलावा 109 अन्य नगरीय निकायों में भी परिसीमन का काम शुरू करने के आदेश जिला निर्वाचन अधिकारियों को दिए हैं। अजमेर नगर निगम का कार्यकाल फरवरी 2026 में पूरा होगा। वहीं जयपुर, कोटा, जोधपुर निगमों के अलावा अन्य निकायों का कार्यकाल नवंबर 2025 में पूरा होगा। ऐसे में साल 2026 में एक साथ चुनाव होने की संभावना भी है।

इन नगरीय निकायों का कार्यकाल पूरा हुआ

नगर निगम : बीकानेर, अलवर, भरतपुर, पाली, उदयपुर

नगर परिषद् : श्रीगंगानगर, सिरोही, टोंक, सीकर, नीमकाथाना, डीडवाना, मकराना, फलोदी, जैसलमेर, झुंझुनूं, हनुमानगढ, जालोर, बालोतरा, बाड़मेर, चितौड़गढ़, चूरू, भिवाड़ी, पुष्कर, बांसवाडा, ब्यावर।

नगर पालिका : राजगढ़, सूरतगढ़, नसीराबाद, थानागाजी, महवा, खाटूश्यामजी, माउंट आबू, पिण्डवाडा, शिवगंज, बिसाऊ, पिलानी, सुमेरपुर, कानोड, प्रतापपुर-गढ़ी, निम्बाहेड़ा, रावतभाटा, नाथद्वारा, आमेट, रूपवास, भीनमाल, कैथून, सांगोद, छबड़ा, मांगरोल।

- **इन निकायों में वार्डों का नये सिरे से सीमांकन भी किया जाना है, ऐसे में नया बोर्ड बनने तक यही प्रशासक इन निकायों में फैसले लेते हुए सरकार के पास प्रस्ताव भिजवाएंगे।**
- **राज्य सरकार द्वारा इन निकायों में प्रशासन नियुक्त करने के फैसले को "वन स्टेट-वन इलेक्शन" की कवायद के तौर पर देखा जा रहा है।**
- **चर्चाएं हैं कि जयपुर, कोटा, जोधपुर निगमों के अलावा अन्य 109 निकायों का कार्यकाल नवंबर-2025 में पूरा होगा। ऐसे में संभावना है कि सरकार पूरे प्रदेश में वर्ष 2026 में एक साथ चुनाव करवाएं।**

ट्रेन की चपेट में आने से युवक मरा

जयपुर। महेश नगर इलाके में मंगलवार को एक युवक की ट्रेन की चपेट में आने से मौत हो गई। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को एसएमएस मोर्चरी में रखवाया और शव का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों के हवाले किया गया। पुलिस ने बताया कि महेश नगर फाटक के पास मंगलवार दोपहर को दुर्ग-अजमेर ट्रेन की चपेट में आने से हरि शंकर मीणा (24) पुत्र रामचरण मीणा निवासी लेदिया सपोटरा करौली मौके पर मौत हो गई। आरपीएफ से घटना की जानकारी मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। जानकारी में सामने आया है कि मौके पर मृतक युवक हरिशंकर के दोस्त थे। जिनसे जानकारी करने में सामने आया कि हरिशंकर मीणा फोन पर बात करता हुआ उनके पास से निकला था। लाइन के पास शौच के लिए गया। तभी पीछे से ट्रेन आई। इसकी चपेट में आने से वह मौके पर ही गिर गया। इससे सिर पर गंभीर चोट लगी। जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। ट्रेन चालक ने आरपीएफ ऑफिसर्स को बताया कि फाटक पास में होने कारण ट्रेन को धीरे किया हुआ था। बार-बार होर्न बचाया, लेकिन युवक ने कान में फोन लगाया हुआ था। इसके कारण उसे हार्न नहीं सुनाया दिया। जिससे वह ट्रेन से टकराया। जिस से उस के सिर पर गंभीर चोट लगी। मृतक हरिशंकर मीणा जयपुर में कॉम्पिटिशन की तैयारी कर रहा था।

सार-समाचार

संविधान दिवस पर पद यात्रा निकाली

जयपुर। संविधान दिवस पर मंगलवार को स्थानीय चित्रकूट स्टेडियम में संविधान पद यात्रा, युवा सम्मेलन और सांस्कृतिक कार्यक्रम सहित विविध कार्यक्रम आयोजित किये गये। भारत सरकार के युवा मामले एवं खेल मंत्रालय के निर्देशानुसार अनुसार राज्य सरकार द्वारा माय भारत नेहरू युवा केंद्र, नगर निगम, शिक्षा विभाग एवं शैक्षिणक संस्थानों के सहयोग से आयोजित भव्य कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, युवा मामले एवं खेल मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ थे। कर्नल राठौड़ ने कहा कि विविधता से भरे हिंदुस्तान को अखंड एवं समावेशी दृष्टिकोण से आगे बढ़ाने में हमारा संविधान सबसे बड़ा धार्मिक ग्रंथ है। युवा वर्ग को संविधान के मूल्यों को अंगीकार करने के लिए हमेशा तत्पर रहना है। भारत रत्न बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए उन्होंने संविधान की उद्देशिका का पाठन किया। युवा कलाकारों ने गीत और संगीत के साथ लोक नृत्य प्रस्तुत कर लोगों का दिल जीत लिया। इस अवसर पर राठौड़ ने नगर निगम के अधिकारियों, नेशनल यूथ अवार्डी कुलदीप वर्मा, राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक लोकेश बुनकर, सामाजिक कार्यकर्ता मुकेश मीणा सहित दो दर्जन से अधिक शैक्षिक संस्थानों के प्रतिनिधियो को सम्मानित किया। पदयात्रा में नेहरू युवा केंद्र संगठन के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. भुवनेश जैन, राज्य निदेशक कृष्ण लाल पारचा राजस्थान युवा बोर्ड के सदस्य सचिव कैलाश पहाड़िया, जिला युवा अधिकारी कुमार मधुकर, विशाल गौतम, भारतीय खेल प्राधिकरण के डी .डी.शर्मा व एन.एस.एस. के क्षेत्रीय निदेशक एस.पी. भटनागर और एस.एम.एस. स्टेडियम के उपसचिव भी सम्मिलित थे।

के.पी.सक्सेना का एलबम रिलीज

जयपुर। हाल ही रिटायर्ड जज व सिंगर केपी सक्सेना की सुरीली आवाज में पिरोया हैप्पी मैरिज एनिवर्सरी एलबम रिलीज हो गया है। शौख व रुमानियत से भरी आवाज में गाया यह गीत आज देश-विदेश के कई प्रसिद्ध ऑडियो संगीत चैनल पर अत्यधिक लोकप्रिय हो रहा है। केपी सक्सेना लंबे समय से जयपुर समेत देश-विदेश के प्रतिष्ठित मंचों पर अपनी जादुई आवाज व शास्त्रीय संगीत के कमाले फन से स्वरचित गीतों की मिठास का तिलिस्म बिखेर रहे हैं। सुप्रसिद्ध संगीतकार विक्रांत माथुर का संगीतबद्ध यह सॉन्ग मुंबई के लता मंगेशकर स्टूडियो में रिकॉर्ड किया गया। सिंगर केपी सक्सेना ने बताया कि अब तक मैरिज एनिवर्सरी को लेकर कोई गीत सुनने को नहीं मिला। यही वजह रही कि मैंने इस पर सॉन्ग बनाने का फैसला किया। यह सॉन्ग केपी सक्सेना म्यूजिक की ओर से रिलीज किया है।

महिलाओं को सिलाई मशीन दिलाई

जयपुर। मानव सेवा ट्रस्ट राजस्थान एवं महिला सशक्तिकरण फाउंडेशन द्वारा वाटिका रोड स्थित, कल्लावाला ग्राम में "प्रियांश क्रिएशंस एंड होम डेकोर" नाम से पल्लवी सक्सेना को सिलाई मशीन दिलवाकर स्वयं का व्यवसाय का शुभारम्भ करवाया। फाउंडेशन अध्यक्षा दुर्गा वर्मा ने बताया जरूरतमंद महिलाओं के सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए उन्हें उनके घर पर ही स्वयं का व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। ट्रस्ट सदस्य एवं मिडिया प्रभारी प्रो.डॉ. राजीव सक्सेना ने बताया कि ट्रस्ट की यह पहल समाज में महिलाओं को सशक्त बनाने और उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण है। कार्यक्रम संयोजक कौशल सत्यार्थी ने बताया कि प्रोजेक्ट जीवनदीप पहल के अंतर्गत महिलाओं को उनके घर पर सिलाई केंद्र, ब्यूटी पार्लर, राशन की दुकान, कॉस्मेटिक दुकान जैसी स्वरोजगार योजनाओं की स्थापना में सहायता प्रदान की जा रही है।

ज्योतिष सम्मेलन का पोस्टर जारी

जयपुर। ऑलमाइटी इंटरनेशनल पहली बार जयपुर में राष्ट्रीय स्तर के ज्योतिष सम्मेलन का आयोजन करने जा रहा है। यह कार्यक्रम 28 नवंबर को नारायण सिंह सर्किल स्थित नसियाजी सभागार में आयोजित होगा। इस एक दिवसीय एस्ट्रोलॉजी कॉन्क्लेव का उद्घाटन राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष, वासुदेव देवनानी करेंगे। यह जानकारी कार्यक्रम की संयोजक, डॉ. मेघा शर्मा ने आज दी। इस आयोजन का उद्देश्य ज्योतिष और संबंधित प्राचीन विज्ञानों को आधुनिक समाज में अधिक प्रासंगिक बनाना और इसके वैज्ञानिक व व्यावहारिक पक्ष को जन-जन तक पहुंचाना है। सम्मेलन का मुख्य आकर्षण प्रमुख ज्योतिषाचार्यों और वास्तुशास्त्रियों द्वारा की जाने वाली महत्वपूर्ण चर्चाएं और भविष्यवाणियां होंगी। कार्यक्रम में देश के जाने-माने विशेषज्ञ, जैसे: पंडित सतीश शर्मा (ज्योतिष और वास्तुशास्त्र के विशेषज्ञ); अजय भांबी (कंप्यूटर ज्योतिष के प्रणेता और दिल्ली के ख्यातिप्राप्त ज्योतिषाचार्य); के. ए. दुबे पद्मेश (कानपुर से प्रसिद्ध लेखक और ज्योतिष विशेषज्ञ); पुरुषोत्तम गौड़ (जयपुर के प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य); आने वाले समय के लिए अपने दृष्टिकोण और भविष्यवाणियां साझा करेंगे। इस कार्यक्रम के पोस्टर का विमोचन पंडित सतीश शर्मा, पंडित ज्योति शर्मा, और यूथिका अग्रवाल ने किया।

चावल पर संविधान कृति बनाई

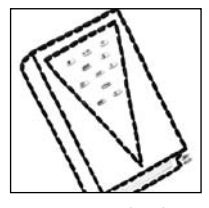

जयपुर। चावल पर सूक्ष्म लेखन करने वाली जयपुर की कलाकार निरू छाबड़ा ने मंगलवार को संविधान दिवस के खास मौके पर चावल पर दोनों पर संविधान लिखकर कृति तैयार की है। उन्होंने चावल के दानों पर लिखा है "में भारत का संविधान हूं। मेरे कोष में 146385 शब्द है।"

महिलाओं के लिए हज आवेदन 9 तक

जयपुर। हज के लिए महिला कोटे से पूरे देश में 500 सीटें रखी गई हैं।हज आवेदन 2025 करने से वंचित ऐसी महिलाएं 9 दिसंबर तक हज आवेदन कर सकती है। हज-25 की दूसरी किस्त 1 लाख 42 हजार रुपये 16 दिसंबर तक जमा करनी है। राजस्थान स्टेट हज कमेटी के सीनियर मेंबर हाजी शाहिद मोहम्मद ने बताया कि हज कमेटी ऑफ इंडिया ने हज-2025 पर जाने वाले हजरात की दूसरी किस्त जमा करवाने के लिए कहा है दूसरी किस्त में प्रत्येक आवेदक को 1 लाख 42 हजार रु. 16 दिसंबर तक जमा करवानी होगी और रसीद स्टेट हज कमेटी में जमा करानी है। महिला कोटे में वो महिलाएं आवेदन कर सकती हैं, जिनके परिवार के पति, पिता,भाई ने पहले से हज फॉर्म भरा हुआ है लेकिन वह नहीं भर पाईं।

घुमन्तु समुदाय के लिए शिविर 15 दिसंबर तक

जयपुर (कासं)। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री अविनाश गहलोत ने बताया कि राजस्थान के विमुक्त एवं घुमन्तु समुदाय के व्यक्तियों के आवश्यक दस्तावेज बनाने के लिए सभी जिलों में पंचायत समिति एवं नगर निगम /पालिका/ परिषद स्तर पर 27 नवम्बर से 15 दिसम्बर 2024 तक शिविर आयोजित किये जा रहे हैं।

उन्होंने बताया कि इन शिविरों में विमुक्त घुमन्तु एवं अद्धर्घुमन्तु समुदाय के व्यक्तियों के आवश्यक दस्तावेज जैसे वोटर आई.डी. आधार कार्ड, जनाधार कार्ड, मूल निवास प्रमाण पत्र, राशन कार्ड, जनाधार कार्ड, मूल निवास प्रमाण पत्र, राशन कार्ड, घुमन्तु पहचान प्रमाण पत्र बनाए जाएंगे।

उन्होंने बताया कि विमुक्त घुमन्तु एवं अद्धर्घुमन्तु समुदाय वर्ग के लिए मूलभूत सुविधाएं जैसे स्वास्थ्य, पेंशन, भूमि आवंटन, आवास व्यवस्था आदि से जोडने के लिए शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री ने कहा कि इन शिविरों के लिए ग्रामीण क्षेत्र में संबंधित शिविर प्रभारी, उपखण्ड अधिकारी व खण्ड विकास अधिकारी, सह प्रभारी होंगे तथा शहरी क्षेत्र में संबंधित उपखण्ड अधिकारी शिविर प्रभारी तथा संबंधित अधिशाषी अधिकारी-कमिश्नर सह प्रभारी होंगे।

'दो से ज्यादा संतान वाले कार्मिकों को ए.सी.पी. में भी छूट दी जाए'

जयपुर। राज्य सरकार द्वारा न्यायालय में अपना पक्ष रखकर 1 जून 2002 के पश्चात दो से अधिक संतान वाले कार्मिकों की पदोन्नित का रास्ता खोलने की कवायद पर अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासंघ एकीकृत ने आभार व्यक्त किया। इसके साथ ही महासंघ के एक शिष्टमंडल ने मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव आलोक गुप्ता, मुख्य सचिव और कार्मिक सचिव को ज्ञापन देकर चयनित वेतनमान के डेफर्ड प्रकरणों में भी छूट देने की मांग की है।

अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासंघ एकीकृत के प्रदेश अध्यक्ष गजेंद्र सिंह राठौड़ ने बताया कि 16 मार्च 2023 की अधिसूचना के द्वारा दिनांक 1 जून 2002 के पश्चात 2 से अधिक संतान उत्पन्न करने पर ऐसे कार्मिकों की पदोन्नित 3 वर्ष पश्चात करने के प्रतिबंध से मुक्त कर दिया और उनकी मूल वरिष्ठता के आधार पर रिव्यू कर उनको पदोन्नित करने के आदेश जारी कर दिए।

ऐसे कार्मिकों की पदोन्नितयां हो भी रही है परंतु अनेक ऐसे छोटे विभाग हैं, जहां कार्मिकों की कम संख्या के कारण पदोन्नित के पद उपलब्ध नहीं है। कार्मिकों को एसीपी का ही लाभ मिल पाता है लेकिन कार्मिक विभाग द्वारा ऐसे प्रकरण में एसीपी में लगाया गया 3 वर्ष का प्रबंध नहीं हटाया गया है। अत: एसीपी पर भी लगा प्रतिबंध हटाया जाए।

राजस्थान राज्य कर्मचारी संघ के प्रदेश महामंत्री देवेंद्र सिंह नरूका ने बताया कि कम संख्या वाले विभागों को पदोन्नित आदि प्रकरणों में बहुत ज्यादा नुकसान उठाना पड़ता है, अधिकांश केडर रिव्यू तथा सरकारी आदेश बड़े विभागों की दृष्टि से ही निकाले जाते हैं तथा छोटे विभागों के कर्मचारियों के हितों का ध्यान नहीं रखा जाता है। इसी कारण समान बेच के छोटे एवं बड़े विभागों की पदोन्नित में बहुत ज्यादा अंतर हो जाता है। इसी प्रकार दो से अधिक संतान वाले कार्मिकों को ए.सी.पी. में नुकसान हो रहा है जबकि इससे किसी की वरीयता भी प्रभावित नहीं हो रही।

सरकार को तत्काल ऐसे लोगों की ए.सी.पी. पर लगा प्रतिबंध को हटाया जाना चाहिए। इससे एक तरफ जहां बड़े विभागों में कर्मचारी पदोन्नत हो रहे हैं, वहीं छोटे विभागों में कर्मचारी एसीपी का लाभ भी नहीं ले पा रहे हैं। महासंघ के शिष्य मंडल में शिष्ट मंडल में गजेंद्र सिंह राठौड, देवेंद्र सिंह नरूका, ओमप्रकाश चौधरी, शेर सिंह यादव, प्रकाश यादव, महेश शर्मा प्रभु दयाल नील, राहुल यादव आदि कर्मचारी नेता शामिल थे।

कार सवार बदमाशों ने किया युवक का अपहरण

जयपुर। शिप्रापथ थाना इलाके में कार सवार 4-5 बदमाशों एक युवक को अगवा कर लिया। बदमाश उसे टोंक की तरफ ले जा रहे थे इसी दौरान पुलिस की नाकाबंदी देखकर बदमाश उसे छोड़कर भाग निकले। टोंक पुलिस की सूचना पर जयपुर पुलिस मौके पर पहुंची और अपहृत युवक को लेकर आई।

पुलिस के अनुसार कुंडेरा सवाई माधोपुर निवासी विकास ने मामला दर्ज करवाया कि वह अपने दोस्त अभिलेख के साथ 25 नवम्बर को जयपुर चौपाटी गया था। वह टॉयलेट करने चला गया, इसी दौरान जयपुर चौपाटी के पास पहले से मौजूद स्कॉर्पियो में से 4-5 बदमाश उतरे और जबरन उसके दोस्त को कार में पटक लिया और लेकर चलते बने। यह घटना इतनी जल्दी बाजी में हुई कि वह बदमाशों की कार के नम्बर नहीं देख पाया। इस पर उसने अभिलेख के परिजनों के साथ पुलिस को घटना की जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि बदमाश अभिलेख को लेकर टोंक की तरफ निकल गए। सूचना पर स्थानीय पुलिस के साथ टोंक पुलिस से भी नाकाबंदी करवाई गई। दंतवास के पास बदमाश पुलिस की नाकाबंदी देखकर अभिलेख को उतारकर भाग निकले। इस दौरान बदमाशों ने रास्ते में अभिलेख से मारपीट की और उसके पिता से 25 हजार रुपए ऑनलाइन डलवा लिए।

नगर निकायों में प्रशासक लगाने पर भड़की कांग्रेस

नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने इस निर्णय को असंवैधानिक और लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर करने वाला बताया

जयपुर। नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा है कि राज्य सरकार की ओर से 49 नगर निकायों में प्रशासक लगाये जाने का निर्णय पूर्णतया असंवैधानिक और लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर करने वाला है। सरकार ने राज्य के पांच नगर निगम, 20 नगर परिषद और 24 नगरपालिकाओ का कार्यकाल समाप्त होने का तर्क देकर इनमें सरकारी अधिकारियों को प्रशासक लगा दिया है। जबकि सरकार को इन निकायों की लोकतांत्रिक व्यवस्था को कायम रखने के लिए इनमें तत्काल चुनाव कराने की घोषणा करनी चाहिए थी।

जुली ने कहा कि हमारी सरकार से मांग है कि इन निकायों के अविलम्ब चुनाव कराये जायें। इसके पीछे राज्य सरकार वन स्टेट वन इलेक्शन एजेंडे का बहाना बना रही है, लेकिन वस्तुत: राज्य की भाजपा सरकार इन नगर निकायों के चुनाव अपनी पराजय के भय से नहीं कराना चाहती। प्रदेश के अनेक नगर निकायों का कार्यकाल पूरा होने में अभी एक साल और इससे ज्यादा का समय शेष है। तब तक राज्य सरकार कार्यकाल पूरा कर चुके नगर निकायों में नगर निगमों को जिला कलेक्टर, नगर परिषदों को एडीएम और नगरपालिकाओं को एसडीएम स्तर के सरकारी अधिकारियों के भरोसे चलाना चाहती है। सरकार का यह रवैया लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर करने वाला है। आम जनता को उनके निर्वाचित जनप्रतिनिधियों से वंचित करने की राज्य सरकार की यह चेष्टा अलोकतांत्रिक और असंवैधानिक है।

नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि सरकार के इस कदम से इन निकायों में अव्यवस्था पनपेगी और आम जनता अपनी रोजमर्रा की समस्याओं के निराकरण के लिए तरसेगी। नगर निकायों में नौकरशाही को हावी करना संविधान की मूल भावना के खिलाफ है। यह दुर्भाग्य का विषय है कि जब सब ओर संविधान दिवस मनाने की तैयारियां चल रही थी। उसके एक दिन पहले राजस्थान में राज्य सरकार ने यह कदम उठाकर सिद्ध किया है कि सरकार लोकतंत्र पर अपनी मनमानी थोपना चाहती है और उसका संविधान में कोई विश्वास नहीं है।

कांग्रेस पार्टी ने हमेशा संविधान के हितों की रक्षा की है। और हम हर कीमत पर इसकी रक्षा करते रहेंगे।

'पशु चिकित्सा सेवाएं बढ़ाने के लिए सरकार प्रयासरत'

जयपुर (कासं)। वित्तीय वर्ष 2024-25 की बजट घोषणा के अनुरूप राज्य सरकार ने आदेश जारी कर 19 पशु चिकित्सालयों को प्रथम श्रेणी चिकित्सालयों में तथा 98 पशु चिकित्सा उपकेंद्रों को पशु चिकित्सा केंद्रों में क्रमोन्नत किए जाने की प्रशासनिक और वित्तीय स्वीकृति प्रदान कर दी है।

पशुपालन एवं गोपालन मंत्री जोराराम कुमावत ने बताया कि राज्य सरकार प्रदेश में पशु चिकित्सा सेवाओं के विस्तार के लिए सतत प्रयासरत है। इसी के तहत बजट घोषणा की अनुपालना में विभिन्न जिलों में विभिन्न श्रेणी के चिकित्सालयों का क्रमोन्नयन किया गया है। उन्होंने बताया कि इससे पशुपालकों को उनके पशुओं के लिए अपने नजदीक ही बेहतर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध हो सकेंगी साथ ही विभागीय योजनाओं का त्वरित लाभ मिलने भी सुविधा हो सकेगी। उन्होंने यह जानकारी देते हुए बताया कि नागौर में 2, भरतपुर में 3, पाली में 4 और अलवर, चित्तौड़गढ़, जालोर, कुचामन सिटी, झुंझुंनू, बाड़मेर, सवाई माधोपुर, सीकर, बीकानेर, और चुरू के 1-1 पशु चिकित्सालयों को प्रथम श्रेणी के चिकित्सालयों में क्रमोन्नत किया है। इसी तरह बाड़मेर में 8, भरतपुर और जयपुर में 7-7, पाली में 16, जालोर में 9, नागौर, कोटा और भीलवाड़ा में 4-4, अजमेर में 6, झुंझुंनू में 5, दौसा, टोंक, चित्तौड़गढ और जोधपुर में 3-3, बीकानेर, चुरू, श्रीगंगानगर, सवाई माधोपुर, कुचामन में 2-2, धौलपुर, उदयपुर, डूंगरपुर, सिरोही, सीकर और हनुमानगढ में 1-1 पशु चिकित्सा उपकेंद्रों को क्रमोन्नत किया गया है।

नाबालिग से दुष्कर्म का प्रयास

जयपुर (कासं)। मालवीय नगर थाना इलाके में एक युवक ने नाबालिग से दुष्कर्म का प्रयास किया। घटना के समय पीड़िता की मां काम पर गई हुई थी। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच में जुटी है।

पुलिस के अनुसार मॉडल टाउन निवासी एक 26 वर्षीय महिला ने मामला दर्ज करवाया कि वह रोजाना अपने काम पर चली जाती है। गत 25 नवम्बर को उसकी बेटी घर पर थी, इसी दौरान राहुल हुसैन घर में घुस आया और उसकी बेटी को अकेला पाकर उसके साथ दुष्कर्म का प्रयास किया। बेटी के चिल्लाने पर आरोपी मौके से भाग निकला। उसकी बेटी करीब 12 साल की है।

मां के काम से घर लौटने पर पीडिता ने सारी आपबीती बताई। इस पर पीडिता उसे लेकर थाने पहुंची और मामला दर्ज करवाया।

68 लाख रुपये की स्मैक और गांजे के साथ तस्कर गिरफ्तार

जयपुर (कासं)। जयपुर कमिश्नरेट की स्पेशल टीम (सीएसटी) ने ऑपरेशन "क्लीन स्वीप" के तहत ड्रग्स माफियाओं के खिलाफ थाना जवाहर सर्किल थाना इलाके में कार्रवाई करते हुए अवैध मादक पदार्थ स्मैक और गांजे की तस्करी करने वाले एक तस्कर हनुमान उर्फ रोहित को गिरफ्तार किया है।

इसके साथ ही पुलिस ने गिरफ्तार आरोपित के पास से अवैध मादक पदार्थ स्मैक 136 ग्राम, गांजा 789 ग्राम एवं बिक्री राशि 2 हजार 500 रुपये बरामद किये गए है। पुलिस के अनुसार तस्कर से जब्त की गई अवैध मादक पदार्थ स्मैक की अनुमानित कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में 68 लाख रुपये है। फिलहाल आरोपी से पूछताछ की जा रही है।

- **पुलिस ने आरोपी के कब्जे से 136 ग्राम स्मैक, 789 ग्राम गांजा बरामद किया**

जयपुर पुलिस कमिश्नर बीजू जॉर्ज जोसफ ने बताया कि पुलिस कमिश्नरेट की ओर से चलाए जा रहे ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत सीएसटी ने जवाहर सर्किल थाना इलाके में कार्रवाई करते हुए अवैध मादक पदार्थ स्मैक और गांजे की तस्करी करने वाले तस्कर हनुमान उर्फ रोहित (22) निवासी मेहन्दवास जिला टोंक हाल जवाहर सर्किल जयपुर को गिरफ्तार किया है।

पुलिस ने आरोपित के पास से अवैध मादक पदार्थ स्मैक 136 ग्राम, गांजा 789 ग्राम एवं बिक्री राशि 2 हजार 500 रुपये जब्त किए गए है। गिरफ्तार आरोपित हनुमान उर्फ रोहित अवैध मादक पदार्थ तस्करी का काम करता है। आरोपी ने प्रारंभिक पूछताछ में सामने आया है कि अवैध मादक पदार्थ गांजा व स्मैक नासिरदा जिला टोंक से खरीदकर लाता है और आसपास इलाकों में सप्लाई करता है। पुलिस ने आरोपित से अवैध मादक पदार्थ स्मैक के प्राप्ति स्त्रोत एवं सप्लायर के संबंध में पूछताछ करने में जुटी है।

जयपुर डेयरी ने श्वेत क्रांति के जनक डॉ. वी. कुरियन के योगदान को किया स्मरण

जयपुर (कासं)। जयपुर डेयरी द्वारा 26 नवंबर को राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें डेयरी के अध्यक्ष ओम प्रकाश पुनिया और प्रबंध संचालक मनीष फौजदार सहित सभी अधिकारी और कर्मचारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर डॉ. वर्गीज कुरियन के योगदान को याद करते हुए उनके कार्यों को भारतीय दुग्ध उद्योग के लिए ऐतिहासिक बताया गया।

कार्यक्रम के दौरान ओम प्रकाश पुनिया ने कहा कि डॉ. कुरियन ने सहकारी मॉडल के माध्यम से किसानों को संगठित किया और भारत को दुग्ध उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाया। उनके नेतृत्व में शुरू हुए "ऑपरेशन फ्लड" ने देश में दुग्ध क्रांति की नींव रखी, जिससे न केवल दूध का उत्पादन बढ़ा, बल्कि लाखों किसानों के जीवन में सुधार आया। उन्होंने जोर देकर कहा कि डॉ. कुरियन का दृष्टिकोण आज भी भारत के दुग्ध उद्योग और ग्रामीण विकास के लिए मार्गदर्शक है। प्रबंध संचालक मनीष फौजदार ने कहा कि डॉ. कुरियन के प्रयासों ने भारत को विश्व के सबसे बड़े दुग्ध उत्पादक देश के रूप में स्थापित किया। उन्होंने कहा कि जयपुर डेयरी डॉ. कुरियन के सिद्धांतों और सहकारी मॉडल को अपनाते हुए किसानों और उपभोक्ताओं के बीच एक मजबूत कड़ी बनी हुई है। उन्होंने यह भी बताया कि डेयरी गुणवत्ता और शुद्धता सुनिश्चित करने के लिए लगातार नए कदम उठा रही है। कार्यक्रम में अधिकारियों और कर्मचारियों ने डॉ. कुरियन के आदर्शों को अपनाने का संकल्प लिया।

राष्ट्रीय दुग्ध दिवस पर जयपुर डेयरी की ओर से आयोजित कार्यक्रम को अध्यक्ष ओम प्रकाश पूनियां ने संबोधित किया। इस मौके पर प्रबंध संचालक मनीष फौजदार भी मौजूद थे।

पुलिस कमिश्नर मुहाना थाने में करेंगे जनसुनवाई

जयपुर (कासं)। आमजन में विश्वास और अपराधियों में भय कायम रखने के लिए जयपुर पुलिस कमिश्नर बीजू जॉर्ज जोसफ 28 नवम्बर(गुरुवार) को सुबह 11 बजे से 2 बजे तक पुलिस थाना मुहाना में जनसुनवाई करेंगे।

जनसुनवाई के दौरान अतिरिक्त पुलिस कमिश्नर (अपराध) कुंवर राष्ट्रदीप, पुलिस उपायुक्त दक्षिण दिगंत आनंद, पुलिस उपायुक्त पश्चिम अमित कुमार, अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त दक्षिण, अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त पश्चिम, सहायक पुलिस आयुक्त चाकसू, मानसरोवर, बगरू एवं संबंधित एसएचओ और थाने के अधिकारी उपस्थित रहेंगे।

इस दौरान वृत क्षेत्र चाकसू, मानसरोवर जयपुर (दक्षिण) व बगरू जयपुर (पश्चिम) के परिवादियों की जनसुनवाई की जाएगी। जनसुनवाई का उद्देश्य संबंधित क्षेत्र के परिवादियों की समस्याओं का तुरंत निस्तारण करते हुए आमजन को राहत पहुंचाना है।

- **28 नवंबर को सुबह 11 से 2 बजे तक होगी जनसुनवाई**

गौरतलब है कि इससे पूर्व पुलिस कमिश्नर द्वारा शिप्रा पथ (जयपुर दक्षिण), कानोता (जयपुर पूर्व), करधनी (जयपुर पश्चिम), विद्याधर नगर (जयपुर उत्तर), शिवदासपुरा (जयपुर दक्षिण), बगरू (जयपुर पश्चिम), चौमू (जयपुर पश्चिम), प्रताप नगर (जयपुर पूर्व), जयसिंहपुरा खोर (जयपुर उत्तर) जवाहर सर्किल (जयपुर पूर्व) एवं वैशाली नगर (जयपुर पश्चिम) थाने में जनसुनवाई कर परिवादियों की समस्याओं का मौके पर निस्तारण किया जा चुका है।

ARBiT
it happens here...

Bruce Lee's birthday

Bruce Lee was a famous martial artist and movie star who changed how people saw Asian actors and martial arts. Born in San Francisco on November 27, 1940, he grew up in Hong Kong. As a kid, he started acting in movies and learning martial arts. As he grew up, Bruce Lee did many great things. He made a new type of martial arts called Jeet Kune Do. He was one of the first Asian people to be the main character in Hollywood movies.

राष्ट्रदूत
WEDNESDAY
27 November 2024
A-B

#COGNITIVE GROWTH

Toddlers get the idea of possibility

"These results are so interesting because they show that when children see events in the world that they can't explain, it instills in them a drive for information that they can use to reconcile their prior model of the world with what they've just seen," Feigenson says.

Children too young to know words like "impossible" and "improbable" still understand how possibility works, new research with 2- and 3-year-olds finds.

The findings, the first to demonstrate that young children distinguish between improbable and impossible events, and learn significantly better after impossible occurrences, appear in Proceedings of the National Academy of Sciences.

"Even young toddlers already think about the world in terms of possibilities," says co-author Lisa Feigenson, codirector of the Johns Hopkins University Laboratory for Child Development.

"Adults do this all the time and here we wanted to know whether even toddlers think about possible states of the world before they've had years of experience and before they have the language to describe these mental states."

Adults consider possibilities daily. Rain likely? Best, bring an umbrella. If I buy a lottery ticket, will I win? Probably not. But it wasn't known if toddlers also practice that mental judgement or if it emerges with age and experience.

2- and 3-year-old children were shown a gumball-type machine filled with toys. Some kids saw a mix of pink and purple toys. Others saw the machine was filled with only purple toys. Children then got a coin to drop into the machine to draw one toy.

The kids, who saw that a mix of pink and purple toys was available and drew a pink one, shouldn't have been surprised since even if there weren't that many pink ones, and even if there was only one pink one, there was some chance they'd get a pink toy. But some kids, who saw the machine filled with only purple toys, got a pink which shouldn't have been possible.

After they got their toys, all of the children were told the name of the toy, a made-up word, and then asked the name a short while later. Kids, who experienced the impossible scenario and drew a pink toy when the machine contained no pink toys, learned significantly better than everyone else. But as long as getting a pink toy was possible, no matter how unlikely, kids experienced no boost to their learning.

"One possibility was that they would learn well from the improbable events, but even better from the impossible events," says coauthor Aimee Stahl, a former doctoral student in Feigenson's lab who is now an associate professor of Psychology at The College of New Jersey. "But what we found was that they actually don't learn from the unlikely, improbable events. They only learn if they experienced the impossible event."

Feigenson and Stahl believe that toddlers learn so much better after impossible events because the unexpected drives them to search for explanations. Improbable events might be surprising, but they don't necessarily need any explanation. Impossible events require kids to reevaluate what they thought they knew.

"These results are so interesting because they show that when children see events in the world that they can't explain, it instills in them a drive for information that they can use to reconcile their prior model of the world with what they've just seen," Feigenson says.

"Scientifically, these findings are exciting because they suggest that humans are equipped from the get-go to think about whether things are possible or unlikely or just can't happen."

Vikram Doctor

On May 15, 1962, a Buddhist monk named Lobsang Jivaka passed away in the Civil Hospital in Dalhousie. He was 47 and his health had been poor for years, a consequence of inadequate nutrition and the rigours of the hard life that he had been leading in the hills with little money. His body was cremated according to Buddhist rites and there seems no marker of him left in India.

We know of Jivaka's death because a Buddhist nun named Sister Vajira sent a short note about it to his British publisher. That same year, Jivaka's book *Life of Milarepa* came out, a more accessible version of an earlier academic translation of the life of one of the most famous *Tibetan yogis*. Weeks before his death, another book of his, *Imji Getsul*, was published, whose subtitle 'An English Buddhist in a Tibetan Monastery' made his identity clear.

Or did it? The death notice in *The Times London* referred to him as 'formerly Dr. Laurence M. Dillon, of Britain, who became a Buddhist,' but anyone searching for him under that name would not have gone far. Before becoming Jivaka, he went by Michael Dillon, a medical doctor, who had been working on boats carrying pilgrims from Malaysia to Mecca, and then cargo between India and the United States. But before that, long before, there had been Laura Dillon, the name and identity that he was given at birth but never felt he could accept. Dillon told the story about both his gender and spiritual journeys in *Out of the Ordinary*, a manuscript finished shortly before his death. It would not be published till 2016, possibly due to the efforts to suppress it, by his brother, Sir Robert Dillon, heir to a baronetcy in Ireland. Ultimately, the manuscript was made available for two books that tell Dillon's story in ways that complement each other.

Liz Hodgkinson's *From a Girl to a Man: How Laura Became Michael* is an efficient assembling of what is known of Dillon's life, including photos that document his transition from a Girl Guide in the beach town of Folkestone, where he was raised by his aunts, to a sporty-looking student at Oxford University, to an androgynous 'poker-faced' persona while working as a mechanic during World War II, to a handsome man with a smiling face again, after transitioning to Michael Dillon, and his final photo as a monk, looking gaunt yet at peace.

Pagan Kennedy's *The First Man-Made Man* is a more imaginative retelling of Dillon's life. It focuses on the loneliness of years of living in a gender limbo, sure about not being a woman, but unable to become a man. Dillon experimented with lesbian relationships at Oxford, but as Kennedy writes, to have sex with a woman, 'she would have to strip off her blazer and the bindings on her chest, until she was naked and female, her lover would have desired exactly what Laura hated about her body.'

Scientific Progress

Others had felt this way before, as is shown by the many stories of people identified as women at birth, who later in life passed as soldiers, sailors or joined other professions that were exclusively male-identified in their era. Indian mythology has characters like *Shikhandi*, who seem to cross gender boundaries, while Christian traditions have stories like that of *St. Marina*, the Monk, whose devotion led her to becoming a monk, with the secret only coming to light after death. But while a life led as a man was possible, changing to a man's body was not.

For Dillon, born in 1915, that possibility came to exist. A few years before he was born, an Austrian physiologist, Eugen Steinach, established that ovaries and testicles produce different chemicals, which cause gendered changes in the body. This triggered huge interest, not only in using hormones, as these chemicals were called, to change gender, but also to rejuvenate sexual vigour. Then, as now, the urges of ageing men have always been a potent driver of change and being *Steinached* became a verb, as the rich and famous, WB Yeats, Sigmund Freud and others, were operated on to revive their energy.

Kennedy suggests the operation, which was essentially a vasectomy, just had a powerful placebo effect. The real stimulus provided by Steinach was to endocrinology, which developed rapidly in the interwar years. In 1935, testosterone was isolated and a way to produce it was developed, earning the scientists behind it the Nobel Prize for Chemistry in 1939. Dillon learned about it while researching his condition and may have become the first person to start taking testosterone for the purpose of gender transition.

Dillon even published an extraordinarily daring book for that time titled *Self: A Study in Endocrinology and Ethics* (1946), which argued that gender existed on a spectrum and hormone therapy should be given to those who felt they fell midway between male and female. This has now become an accepted therapy for trans people and also the source of immense controversy, and, balefully, ammunition for political attacks.

The interwar years also saw rapid growth in plastic surgery, the other medical field that would come to define gender change. The horrific injuries inflicted in World War I led surgeons like Harold Gillies to explore ways to reconstruct faces and minimise scars. In the 1920s, this became cosmetic surgery, making Gillies one of the best-paid surgeons of his time, and also giving him the freedom to experiment with applying plastic surgery to other problems in the body.

One of these was hypospadias, malformations of the penis, which sometimes caused babies to be identified and raised as female. This was not quite the same as Dillon's case, since such cases tended to result in much more obviously masculine physiognomies, but it made plastic surgeons open to ideas of gender transitioning. In 1942, Dillon had an accident, which led to him being treated by a doctor who had worked with Gillies. Dillon felt able to open up to him about his condition and, almost miraculously, he received not just sympathy, but an offer to perform a double mastectomy and then a referral to Gillies for further examination.

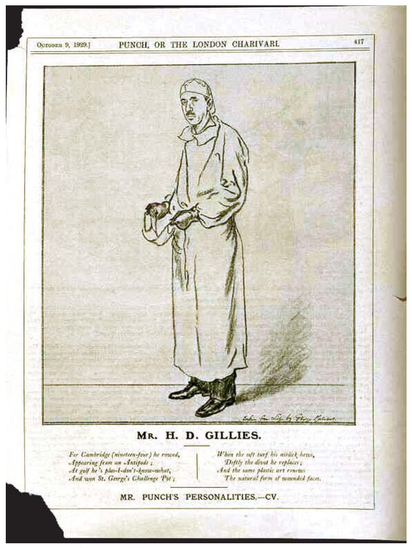

A caricature of Harold Gillies in 'Punch' magazine. He conducted a gender-affirming surgery on Dillon.

Liz Hodgkinson's *From a Girl to a Man: How Laura Became Michael* is an efficient assembling of what is known of Dillon's life, including photos that document his transition from a Girl Guide in the beach town of Folkestone, where he was raised by his aunts, to a sporty-looking student at Oxford University, to an androgynous 'poker-faced' persona while working as a mechanic during World War II, to a handsome man with a smiling face again, after transitioning to Michael Dillon, and his final photo as a monk, looking gaunt yet at peace.

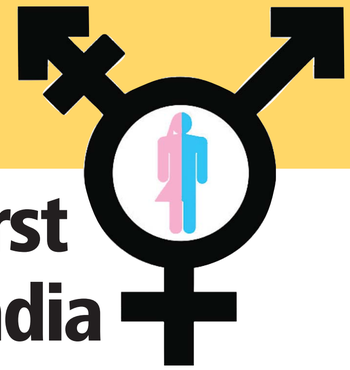

Hounded around the world, the first 'man-made man' took refuge in India

#TRANSGENDER RIGHTS

> Throughout Dillon's life, doctors were among the few who tended to be supportive, understanding his view that he suffered from a medical problem that needed correction. Gillies devised a new technique, phalloplasty, where skin flaps harvested from Dillon's body were fashioned into the equivalent of a penis that was grafted onto his clitoris and channelled the urinary tract.

Throughout Dillon's life, doctors were among the few who tended to be supportive, understanding his view that he suffered from a medical problem that needed correction. Gillies devised a new technique, phalloplasty, where skin flaps harvested from Dillon's body were fashioned into the equivalent of a penis that was grafted onto his clitoris and channelled the urinary tract. After the surgery, Dillon was able to urinate through this new organ, which Gillies felt was proof enough that he had become a man.

The sympathetic treatment, that Dillon received from doctors, might have resulted in his own decision to qualify as one, even though, he was a decade older than most other students. He enrolled in Trinity College, Dublin, a prestigious medical school, although going back to Ireland brought him close to his family home and the brother who refused to accept him as a man. Dillon dutifully kept his distance, but resentment over this may have laid the seed for the one act that would ultimately expose him.

Michael Dillon.

Political Targets

Of all the horrors of the recent US presidential campaign, among the worst was the targeting of transgender people to whip up passions then directed to political ends. The depressing success of this tactic means that it will now be replicated across the world. But no one should imagine that transgender people will give in. As the histories of people like Dillon tell us, the compulsions driving them to transition will transcend the hostility they receive. Anyone who thinks that transitioning is just a fad should consider the double violence trans people face, disdain from the world outside coupled with the internal blow of waking up every day and feeling and seeing in the mirror that their body is just wrong. Having to deal with the latter gives the strength to deal with the former.

It is worth examining though as to why the political tactic is proving so successful now. One reason might be the differing ways in which transmen and transwomen are being targeted. Historically, transphobia was primarily directed against transwomen who were seen to betray dominant ideals of masculinity. Transwomen also tend to stand out more because of the transitions that testosterone works during puberty, creating features like a more prominent Adam's Apple and larger hands. Transitioning after puberty makes it harder to conceal these features, making it easier to identify, and mock transwomen.

Transmen tend to find it easier to pass, and most did just that in earlier decades. (Some trans people have always rejected passing for reinforcing the idea of a strict gender binary, and this is now perhaps on the rise.) Kennedy writes that 'those few transsexual men, who did exist in the sixties, seemed to have a talent for disappearing into the mainstream, for joining the three-piece-suit march of executives down the sidewalk.' At a time when male privilege was almost unquestioned, it seemed natural, even to transphobes, that someone would desperately want to be a man. "To transform into a man was to suddenly be pegged at a higher value," writes Kennedy.

There were situations, like inheritance, where this higher value became agonisingly tangible. The system of entails, for example, in British law bound an estate to only certain types of heirs, usually legitimately born sons. Daughters could expect to receive nothing, and even be evicted from the family home after the death of their father. This is the financial reason driving the desperation to find husbands in Jane Austen's *Pride and Prejudice*, and also behind the more recent *Downton Abbey*. Families with only daughters have occasionally flirted with transitioning as a solution. In a recent interview in *The Times*, Anne Tennant, Baroness Glenconnor, an aristocrat close to the royal family, admitted that she once asked her father, the Earl of Leicester, if she could become a man, just to prevent his title and estates going to a cousin.

Dillon may have tried to do just that. His brother, the 8th Baronet, had no children, so, the title would end on his death, but if Dillon was accepted as a man, he could inherit it. In 1953, Dillon landed up at the office of Debrett's Peerage, one of the two main directories that chronicled aristocratic ranks and families in the United Kingdom, and risked making his case to the editor to change its entry for the Dillon Baronetcy, where Laura was still listed as the sister, into a brother named Michael. Surprisingly, the editor was sympathetic and said that he would have the change made and, crucially, would back Dillon, if he claimed the title after his brother's death. He also assured Dillon that the other directory, Burke's Peerage, would follow suit.

> Kennedy and Hodgkinson's books document how, for all the prejudices he faced, he also made many allies along the way, the doctors who helped him transition, the ship crew who stood by him after he was exposed, and many others, who were willing to accept something as strange then as a man who had been a woman, simply because they had got to know the man first, and that was what mattered.

Dillon had already managed to change his name and gender identification in most other official records, so, it is possible that he saw this as just completing the process. But this was his big mistake. Burke's didn't follow suit, and continued to list a sister named Laura for the Dillon Baronetcy, and in 1958, a journalist noticed the discrepancy. (It says something about British journalists that they would find time and purpose in combing and comparing records of minor aristocrats.) Journalists promptly pursued Sir Robert Dillon, who had no compunction in exposing his sibling and disclosing his whereabouts.

This was on a ship. Dillon had started working as the medical officer on ships, liking the travel and the rule-bound (and masculine) world of ships. At that time, he was on the City of Bath, a ship with Ellerman Lines that did the India-to-US cargo route. It was when it was docking in Baltimore that he received a telegram from the *Daily Express* that read, "Do you intend to claim the title since your change-over? Kindly cable Daily Express." A crew member came to tell him that there were two reporters waiting on the quay.

Dillon felt his world collapsing. The first thing he did was reveal his story to the captain and the other ship officers, who were surprisingly accepting. He also refused to meet the reporters, but they evidently spilled the story to the Baltimore Sun, which had an item the next day with the title, EX-WOMAN (NOW MAN) IN LINE FOR PEERAGE. Dillon had to speak to the reporters then and tried to brave it out, but now he knew that the story would follow him, wherever he went in the world.

Fresh Start

This was what made him decide to disappear into India. On the City of Bath's return voyage, it passed Calcutta, and Dillon disembarked there. In his years sailing, he had become increasingly interested in spiritual issues and was drawn to Buddhism. Now, in the land where Buddha came from, he could make a fresh start, studying Buddhism and aspiring to be a monk. Evading his story was impossible in the West, but in the crowds and spaces of the East, it might happen.

Dillon's mistake points to why transmen have now been targeted. Aspiring to masculine privilege can be understood, except when it seems to encroach on the rights of 'natural born' men. An aristocratic system, built on male primogeniture, is threatened when a woman becomes a man. And at a time when male insecurities are being cynically manipulated by social media influencers and politicians for their own gain, it is easy to make transmen seem like a further threat, yet another way in which the rights of the allegedly fragile male gender are being undermined, both by women assuming male privilege directly, and indirectly by becoming transmen.

This has combined with a new tactic to target transwomen, through their participation in female sports and access to female spaces, ranging from toilets to prisons. This was never seen as important in past decades because female sports and spaces were not seen as important to begin with. Decades of activism from women's rights activists have made these spaces, and sports, important, and it has proven shatteringly easy to suggest that they are at risk from transwomen, even if the people making these suggestions are, in large part, those who were never supporters of women at all.

All concerns about change are not automatically equivalent to transphobia. It might be fair to say that some trans activists underestimated the level of dissonance, that trans issues would have, among people who had never thought about them, much less known a trans person and understood their challenges. In any social movement, there is a need for dialogue and engagement to change attitudes, and then real change can happen surprisingly fast. But the greater visibility of trans issues has come at a time when social media makes such direct contact harder, while also making it ever easier to spread misconceptions.

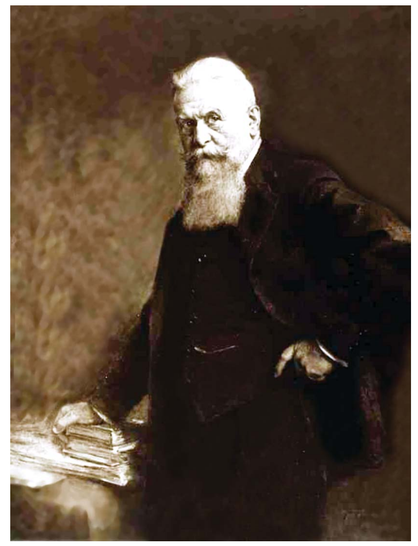

Dillon learned about Eugen Steinach's discovery linking sex hormones and physical identifiers and began taking testosterone for gender transition.

Dillon's life demonstrates this. Kennedy and Hodgkinson's books document how, for all the prejudices he faced, he also made many allies along the way, the doctors who helped him transition, the ship crew who stood by him after he was exposed, and many others, who were willing to accept something as strange then as a man who had been a woman, simply because they had got to know the man first, and that was what mattered.

During the war, Dillon worked in a garage alongside a teenage boy, Gilbert Barrow, and finally told him about his history just before Barrow was called up for the navy. Kennedy writes that Barrow said that he had known at once and 'had told the garage hands that this friend was as much a man as any of them, which baffled the tormentors.' After Dillon's exposure, it was Barrow, who wrote explaining how it had happened.

India and Buddhism allowed Dillon some escape, but only for a while. Sooner or later, wherever he was, the story of his history would emerge, causing problems and forcing him to move on. Only once, in a remote monastery in Ladakh in 1960, did he seem to be approaching the total escape that he longed for. But in that era, the fear of Chinese aggressions made Ladakh a highly inaccessible territory. With the help of Kushok Bakula, the *Ladakhi* leader, after whom Leh airport is named, he was able to get a three-month entry permit, but once that was over, he had to leave and the Indian bureaucracy never let him return.

Dillon was still hoping to return to Ladakh in those last years that he spent in the hills. He was almost destitute by then, having given up a fairly substantial inheritance that he had received from the aunts who raised him, as part of his vow of poverty as a monk. In 1961, when he was living in the Maha Bodhi Society hostel in Sarnath, he received a shock when a local Hindi paper ran an article that said that the monk Jivaka had once been a 'lady doctor.' He could only speculate who had seen the news and where he could flee now.

But then, Kennedy writes, something surprising happened. "None of his friends around town mentioned it. No other newspaper picked it up. Perhaps, the story had sunk into obscurity because it had appeared in a dusty little newspaper with few English-speaking readers. Whatever the reason, Dillon felt as if he'd miraculously been spared." When *Life of Milarepa* and *Imji Getsul* appeared next year, there was no mention of Laura, or even Michael Dillon. We do not know if the monks and nuns, who may have been with him in the hospital at Dalhousie, and who did his cremation rites, knew or cared. In life, we might think the issue of gender matters, but in death, it makes no difference at all.

THE WALL

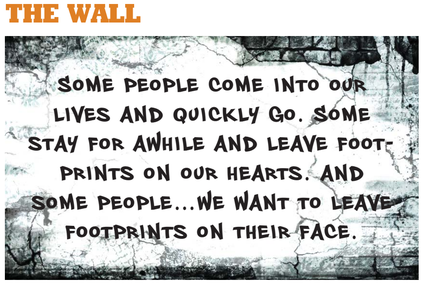

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

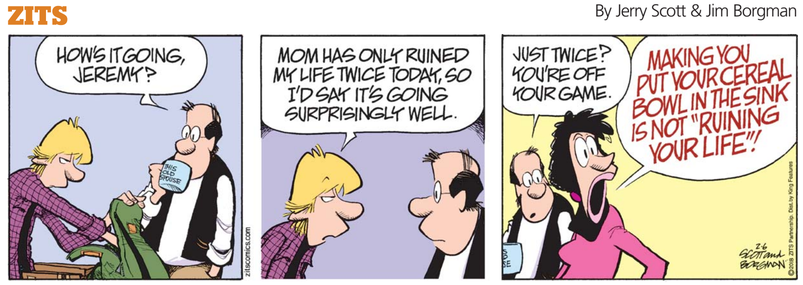

वृद्ध दम्पती को बंधक बनाकर हुई डकैती का खुलासा, छह गिरफ्तार

आरोपियों ने घर की रैकी पीड़ित के घर काम करने वाली महिला नीलम के जरिये की थी

अलवर, (निसं)। शहर की आर्य नगर कॉलोनी में एक वृद्ध दम्पती को बंधक बना कर हुई डकैती का कोतवाली पुलिस ने खुलासा करते हुए एक महिला सहित छह आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। ये सभी आरोपी अपराधिक पृवति के होने के कारण फरारी काट रहे थे।

संजीव नैन जिला पुलिस अधीक्षक अलवर ने बताया कि जांच में सामने आया कि पीड़ित के घर काम करने वाली महिला नीलम ने पूछताछ बताया कि मैने मेरे दोस्त आर्यन को बताया था कि मेरे घर के मालिक नीरज गर्ग अपने परिवार के साथ 6-7 दिन के लिये शादी में शहर से बाहर जा रहे हैं, जिनके घर में पैसा होता है चूंकी नीलम परिवादी के घर पर साफ सफाई का कार्य करती है। आर्यन अन्य आरोपियों के साथ हांसी में मारपीट, हत्या के प्रयास मुकदमे में वांछित होने के कारण फरारी काट रहे थे। इस कारण आरोपियों को पैसे की जरुरत थी। आरोपी घटना कारित करने के उद्धेश्य से पहले सभी गुडंगावा में एक जगह इक्टठा हुए और वारदात के लिये प्लानिंग की व 20 नवंबर को सभी अपने एक साथ मोबाइल बन्द कर

- **सभी आरोपी अपराधिक पृवति के होने के कारण फरारी काट रहे थे, इस कारण रुपयों की जरुरत थी**

वारदात करने के लिये अलवर आ गये। जहां आर्यन ने परिवादी के घर की रैकी आरोपीया नीलम की मदद से की। तत्पश्चात सभी अपने साथ लाये कार में बैठकर रेल्वे स्टेशन के सामने जाकर खड़े हुए और योजना के अनुसार गाड़ी व ड्राईवर को रेल्वे स्टेशन पर छोड़ कर वहां से ई-रिक्शा के माध्यम से भगत सिंह चौराहा पहुंचे। वहां से पैदल परिवादी के घर (घटना स्थल) पर पहुंचे और घटना को अंजाम दिया। चुंकि आरोपिया नीलम द्वारा अन्य आरोपियों को घटना स्थल के संबंध में सम्पूर्ण जानकारी दे दी गई थी एंव उन्हें यह भी मालूम था कि घर के बैसमेन्ट के दरवाजा खुला हुआ है, जिससे बिना किसी संघर्ष के आसानी से आरोपी घटना स्थल में दाखिल हो गये।

आरोपियों की गिरफ्तारी व तलाश हेतु टीमे गठित कर तकनिकी एवं आसूचना संकलन कर मुखबीर से प्राप्त सूचना के आधार पर आरोपियों की गिरफ्तारी की गई। गिरफ्तार आरोपियों में सुजल वाल्मिकी, सचिन वाल्मिकी, ऋषि वाल्मिकी, हन्नु वाल्मिकी, आर्यन वाल्मिकी सभी आरोपी चारकुतबगेट हांसी सिटी जिला हिसार हरियाणा के रहने वाले हैं, जबकि कुमारी नीलम उर्फ कंचन पुत्री अशोक जाटव निवासी मेव बोर्डिंग के पीछे, अलवर थाना कोतवाली अलवर की रहने वाली है। सभी आरोपियों का आपराधिक रिकॉर्ड प्राप्त किया जा रहा है।

अवैध खनन पर कार्रवाई करने गई टीम पर हमला, तीन गिरफ्तार

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के बागोर थाना क्षेत्र के पुरानी अमरगढ़ स्थित कोठारी नदी में अवैध बजरी खनन की शिकायत पर पहुंची टीम पर हमला कर वाहन में तोड़फोड़ करने के मामले में पुलिस ने छह आरोपियों को गिरफ्तार किया है। जानकारी के अनुसार, वारदात की रिपोर्ट बागौर पटवारी दिनेशचंद्र कुमावत ने दर्ज करवाई थी।

घटना के अनुसार, पुरानी अमरगढ़ में बुधवार रात कोठारी नदी में अवैध रूप से बजरी खनन व परिवहन की सूचना पर बागौर पटवारी दिनेशचंद्र कुमावत, लेसवा पटवारी कमल किशोर, अमरगढ़ पटवारी चंद्रमोहन मीणा व बोलेरो चालक जसराज कुमावत के साथ कोठारी नदी पहुंचे,

- **पुलिस हमला करने के अन्य आरोपियों को तलाश कर रही है**

जहां तीन ट्रैक्टर-ट्रॉलियों में बजरी भरी मिली। मौके पर तीनों ट्रैक्टरों के साथ तीन-तीन आदमी थे। ट्रैक्टर चालकों से रवन्ना के बारे में पूछा, लेकिन कोई संतोषप्रद जवाब नहीं दे पाये। माफियाओं ने फोन कर साथियों को बुलवा लिया। मोटरसाइकिल पर सवार होकर कई लोग कोठारी नदी पहुंचे और बोलेरो पर पथराव शुरू कर दिया। इससे पटवारी दिनेशचंद्र के हाथ पर चोटें आई। तीनों पटवारी किसी तरह जान बचाकर थाने पहुंचे। यह बोलेरो खनिज विभाग ने उपलब्ध करवाई थी।

पटवारी की रिपोर्ट पर बागौर पुलिस ने केस दर्ज किया। इस मामले में पुलिस ने जांच करते हुए पुरानी अमरगढ़ निवासी रतन लाल (38) पुत्र जगदीशचंद्र जाट, मालपुरा निवासी कन्हैयालाल (20) पुत्र कस्तुर भील, नई अमरगढ़ निवासी सोनू (22) पुत्र बाबूलाल कीर, पुरानी अमरगढ़ निवासी ललित (25) पुत्र रामेश्वर लाल जाट, मुकेश (29) पुत्र रामेश्वर जाट, राजमल उर्फ राजू (27) पुत्र रामेश्वर लाल जाट को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस हमले के अन्य आरोपियों को सरगर्मी से तलाश कर रही है।

पुलिस टीम पर हमला करने के मामले में सात गिरफ्तार

सूरजगढ़, (निसं)। दो दिन पहले परसा का बास भुडनपुरा में रात को अवैध शराब के खिलाफ कार्रवाई करने गई पुलिस पर हुए हमले के मामले में दो महिलाओं समेत सात गिरफ्तार आरोपियों को मंगलवार को पुलिस ने कोर्ट में पेश किया, जहां से सभी को जेल भेज दिया। दूसरी तरफ मंगलवार से ग्रामीणों ने थाने के बाहर धरना शुरू कर दिया। ग्रामीणों की मांग की है कि अवैध शराब के खिलाफ कार्रवाई के नाम पर शराब के नशे में धुत्त पुलिसकर्मियों ने महिलाओं के साथ अभद्रता की, उन सभी पुलिसकर्मियों के खिलाफ कार्रवाई की जाए, जिन लोगों को पुलिस ने पकड़ रखा है उन्हें छोड़ा जाए और एसएचओ सुखदेव सिंह को थाने से हटाया जाए। इस मामले में ग्रामीणों ने बुधवार को एसपी से मिलकर अपना पक्ष रखने की बात भी कही है।

इस मौके पर धरने पर बसपा के चूरू जिलाध्यक्ष देईराम मेघवाल, कैलाशदास महाराज सारी, सोहन चौहान, बजरंग चौहान, राजू चौहान, दलीप चौहान, रोताश रांगेरा, चुन्नीलाल चौहान, मोहरसिंह चौहान, कृष्ण चौहान, सिंगराम चौहान, ममता, विनोद, मनीषा, राजबाला, संतरा, पिंकी, चंद्रकला, सुमित्रा, पूजा, माया, मंजू इत्यादि उपस्थित रहे। जानकारी के अनुसार पुलिस ने इस मामले में संजोग उर्फ मोनू, हरिश, सुमेरसिंह, सुनिल, संदीप मंजू पत्नी

ग्रामीणों ने मांगों को लेकर थाने के बाहर धरना शुरू कर दिया।

- **गिरफ्तार सातों आरोपियों को जेल भेजा, ग्रामीणों ने धरना शुरू किया**
- **परसा का बास भुडनपुरा में अवैध शराब के खिलाफ कार्रवाई करने गई थी पुलिस**

हवासिंह तथा सुशीला पत्नी सुमेरसिंह को राजकार्य में बाधा और पुलिस पर हमला करने के मामले में गिरफ्तार किया था। इन सभी को कोर्ट ने जेल भेज दिया है।

एसएचओ सुखदेव सिंह ने बताया कि पुलिस को सूचना मिली थी कि परसा का बास भुडनपुरा में हवासिंह मेघवाल अवैध शराब बेच रहा है। पुलिस की टीम ने हवासिंह को अवैध शराब के साथ पकड़ भी लिया था। लेकिन जैसे ही उसे गाड़ी में बैठाने लगे तो उसके आवाज लगाने पर उसके परिवार के लोग आ गए, जिन्होंने पुलिस पर पत्थरों, लाठियों और ईंटों से हमला कर दिया। जिसके बाद आरोपी हवासिंह को छुड़वा ले गए और मौके पर मिली अवैध शराब भी ले गए। पुलिसकर्मियों ने जैसे-तैसे अपनी जान बचाई। उन्होंने बताया कि हवासिंह पर कुछ साल पहले भी अवैध शराब बेचने का मामला दर्ज है। पुलिस को कई दिनों से मुखबिर से इत्तला मिल रही थी कि हवासिंह मेघवाल घर के एक कमरे में अवैध शराब का स्टाक रखकर उसका अवैध बेचान करता है। मामले में मुख्य आरोपी हवासिंह व अन्य नामजद आरोपी अभी भी फरार चल रहे है। जिनकी तलाश पुलिस कर रही है।

इधर, धरना स्थल पर आई कुछ महिलाओं ने बताया कि वे शादी में हिस्सा लेने के लिए परसा का बास भुडनपुरा आई थी, जहां पर पुलिस ने उनके साथ पहले अभद्रता की और इसके बाद जबरदस्ती उन्हें उठाकर थाने ले आए। जहां पर बेरहमी के साथ उनके साथ मारपीट की। वहीं ग्रामीणों ने बताया कि अभी भी पुलिस ने उनके परिवार के लोगों को पकड़ रखा है। जिनके साथ मारपीट कर रहे हैं, जिन्हें पुलिस यदि जल्दी नहीं छोड़ती है तो आंदोलन को तेज किया जाएगा।

सुखदेव सिंह, एसएचओ, सूरजगढ़ का कहना है कि सभी गिरफ्तार आरोपियों को कोर्ट में पेश किया गया है, जहां से उन्हें जेल भेज दिया है। मुख्य आरोपी हवासिंह मेघवाल व अन्य आरोपी फरार है। जिनकी तलाश की जा रही है। पुलिस ने घटना वाले दिन अवैध शराब के साथ हवा सिंह को पकड़ा था। पुलिस पर हमला करके हवासिंह को छुड़वाया गया और पकड़ी गई शराब भी आरोपी ले गए। परिवार की तरफ से अभी कोई लिखित रिपोर्ट नहीं मिली है। रिपोर्ट मिलेगी तो जांच भी करेंगे और कार्रवाई भी करेंगे।

जिला स्तरीय प्रदर्शनी एवं संगोष्ठी

जयपुर। संविधान दिवस के अवसर पर जिला सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय, जयपुर के तत्वावधान में जिला स्तरीय प्रतियोगिता एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

एसएसजी पारीक पीजी कॉलेज के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में अतिरिक्त कलक्टर देवेन्द्र कुमार जैन ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। अतिथियों एवं युवाओं ने सभागार में प्रदर्शित फोटो प्रदर्शनी का अवलोकन किया तथा संविधान निर्माण करने वाले तथा इसमें योगदान देने वाले देश के पुरोधाओं को याद किया। इस अवसर पर विषय विशेषज्ञ धमेन्द्र चौधरी एवं सुप्रिया अग्रवाल ने विद्यार्थियों को भारत के संविधान की बारीकियों और विशेषताओं से रूबरू करवाया।

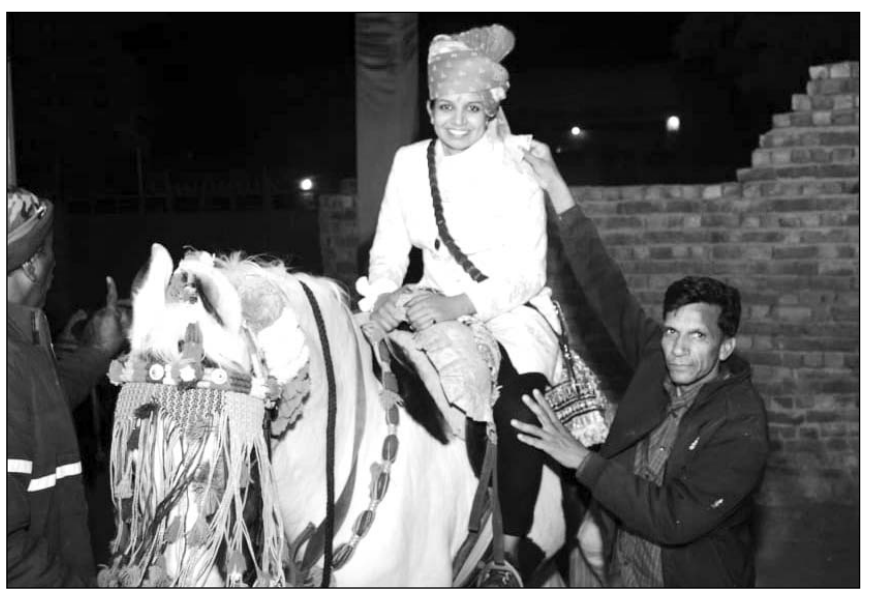

झुंझुनूं : बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान को लेकर मुकुंदगढ़ थानाधिकारी अभिलाषा ने बड़ा संदेश दिया है। राजगढ़ के रतनपुरा निवासी शिक्षक हरफूलसिंह सुंडा ने अपनी बेटी मुकुंदगढ़ थानाधिकारी अभिलाषा की शादी में घोड़ी पर चढ़ाकर बिंदौरी निकाली। इस दौरान थानाधिकारी अभिलाषा ने ना केवल बेटी बचाने और बेटी पढ़ाने का संदेश दिया। बल्कि उन्होंने घोड़ी से उतरकर परिजनों के साथ डांस भी किया। गौरतलब है कि मुकुंदगढ़ थानाधिकारी अभिलाषा मंगलवार को सरदारशहर निवासी सब इंस्पेक्टर मुकेश कुमार के साथ परिणय सूत्र में बंध गई है। इस दौरान अभिलाषा की दादी मामकोर देवी, माता शारदा देवी, भाई निरंजन और विपिन समेत अन्य मौजूद रहे।

नकबजनी व लूट की कालबेलिया गैंग का फर्दाफाश, दो गिरफ्तार

कालबेलिया गैंग ने चालीस से अधिक वारदातें करना कबूल किया

मालपुरा, (निस) मालपुरा उपखण्ड क्षैत्र के विभिन्न ग्रामीण क्षैत्रों में लगातार एक के बाद एक नकबजनी व लूटपाट की हुई घटनाओं को गंभीरता से लेते हुये लाम्बाहरिसिंह व डिग्गी थाना पुलिस ने संयुक्त रूप से कार्रवाई करते हुये नकबजनी व लूट की अंतर जिला कालबेलिया गैंग का फर्दाफाश किया है। पलिस ने दो अभियुक्तों को गिरफ्तार कर चालीस से अधिक वारदातों का खुलासा किया।

पुलिस उपाधिक्षक आशीष प्रजापत ने बताया कि एक ही तरीके से लूट व नकबजनी की हुई वारदातों को गंभीरता से लेते हुये विशेष टीमों का गठन किया गया। दोनों ही थानाधिकारियों की टीम ने कालबेलिया गैंग के बारे में महत्वपूर्ण सुराग जुटाये। जिस पर उक्त गैंग द्वारा टोंक, केकड़ी, अजमेर, दूदू, बूंदी जालोर, भीलवाड़ा आदि जिलों में चालीस से अधिक वारदातें होना सामने आया। जिस पर पुलिस टीम ने गैंग के सदस्य सूरज कालबेलिया पुत्र राजू कालबेलिया पुर्नवास कॉलोनी बंथली व रामस्वरूप पुत्र मिट्ठू कालबेलिया

पुलिस ने कालबेलिया गैंग के दो सदस्यों को गिरफ्तार किया।

निवासी रूपाहेली थाना लाम्बाहरिसिंह तहसील मालपुरा को दस्तयाब किया गया। दोनों से की गई पूछताछ मे बताया कि उन्होंने अपनी गैंग के अन्य सदस्यों के साथ चालीस से अधिक वारदातें की।

थानाधिकारी ने बताया कि गैंग के दोनों सदस्य आपस में रिश्तेदार है। दोनों स्थानीय सदस्यों द्वारा फेरी लगाकर चटाई, चीनी के बर्तन व अन्य घरेलू सामान घर-घर बैचने की आड़ में रैकी कर सुनसान स्थान व बुजुर्ग महिला-पुरूष जो कि सोने के आभूषण पहने हो घर व बाड़े में अकेले सोते हो ऐसे स्थानों को चिन्हित कर रात के समय वारदातों को अंजाम देते थे। घटना में बाइक व चौपहिया वाहन उपयोग में लेते थे। दोनों अभियुक्तों ने एक दर्जन से अधिक सोने की मुर्कियां व दस से अधिक सोने की नथ, आधा दर्जन से अधिक सोने के टॉपस व कान के झेला

- **फेरी लगाकर चटाई, चीनी के बर्तन व अन्य घरेलू सामान घर-घर बैचने की आड़ में रैकी करते थे**

सहित एक लाख रूपयों की नगदी, मोटरसाइकिल, मोबाइल, हाथों के कड़े, लहसून व प्याज की बोरी, चांदी के बर्तनों सहित कुल 42 वारदातें करना कबूल किया। उक्त वारदातों में चोरी का सामान व लूट के आभूषण बरामद करने के लिये अभियुक्तों से गहन पूछताछ की जा रही है।

जिंदा युवक के पोस्टमार्टम का मामला: चिकित्सा विभाग की टीम झुंझुनूं पहुंची

झुंझुनूं, (निसं)। मां सेवा संस्थान द्वारा संचालित मानसिक विमंदित पुनर्वास केंद्र में रहने वाले एक मानसिक विमंदित युवक की जिंदा रहते हुए कागजी पोस्टमार्टम करने और उसके बाद हुई उसकी मौत के मामले में लगातार जांच जारी है। मंगलवार को राजस्थान हाईकोर्ट के आदेश पर चिकित्सा विभाग द्वारा गठित एक विशेष टीम झुंझुनूं के राजकीय जिला बीडीके अस्पताल पहुंची।

जोनल डायरेक्टर डॉ. नरोत्तम शर्मा की अगुवाई में आई चार सदस्यी टीम के सदस्यों ने करीब पांच से साढ़े पांच घंटे तक राजकीय जिला बीडीके अस्पताल में ठहरकर इस प्रकरण के सभी दस्तावेज, सीसीटीवी फुटेज और अन्य चीजें ली। इसके अलावा प्रकरण से जुड़े पीएमओ डॉ. संदीप पचार, युवक को जिंदा रहते हुए मृत घोषित करने वाले डॉ. योगेश जाखड़ तथा कागजी पोस्टमार्टम करने वाले डॉ. नवनीत मील के अलावा इलाज के समय मौजूद सभी नर्सिंगकर्मी और मोर्चरी के कर्मचारियों से पूछताछ की। उनके बयान नोट किए। वहीं लिखित में उनसे जानकारी एकत्रित की। जानकारी के मुताबिक इस प्रकरण सारी जानकारी बारीकी से हासिल करने के बाद यह टीम वापिस जयपुर लौट गई। बताया जा रहा है कि इस प्रकरण की पूरी रिपोर्ट जल्द ही टीम हाईकोर्ट में प्रस्तुत करेगी। इधर, इस टीम के आने के बाद बीडीके अस्पताल में हड़कंप मचा रहा।

जानकारी के अनुसार मां सेवा संस्थान को लेकर भी लगातार माकपा समेत अन्य संगठन जांच की मांग उठा रहे है। साथ ही ये संगठन आरोप लगा रहे हैं कि संस्थान के द्वारा संचालित गृह में मृतक युवक के साथ भी मारपीट की गई थी और अन्य मानसिक विमंदितों को भी प्रताड़ित किया जाता है। चर्चा है कि कल जयपुर से सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की टीम ने भी गृह का दौरा कर निरीक्षण किया और जांच रिपोर्ट तैयार की। वहीं संस्था संचालक विभिन्न मीडिया प्रतिनिधियों से बातचीत में सभी आरोपों को नकार रहे है।

शराब के साथ दो तस्कर गिरफ्तार

डूंगरपुर, (निसं)। बिछीवाड़ा थाना पुलिस ने एक कंटेनर से अवैध हरियाणा निर्मित शराब के साथ 2 तस्करों को गिरफ्तार किया है। गुजरात से सटे राजस्थान के रतनपुर बॉर्डर पर कंटेनर पकड़ा। परचून के सामान की आड में शराब की तस्करी हो रही थी।

बिछीवाड़ा थानाधिकारी ने बताया कि अवैध शराब तस्करी के खिलाफ अभियान चलाया जा रहा है। इसी के तहत मुखबिर की सूचना पर राजस्थान-गुजरात के रतनपुर बॉर्डर पर नाकेबंदी कर गाड़ियों की तलाशी शुरू कर दी। इस दौरान पुलिस ने उदयपुर की ओर से आ रहे एक कंटेनर को रुकवाया। ड्राइवर से पूछताछ की तो उसने परचून का सामान भरा होना बताया। पुलिस को शक होने पर कंटेनर की तलाशी ली गई। इस दौरान सामान के आड़ में ही अवैध शराब की पेटियां भरी हुई मिली। ड्राइवर हरियाणा निर्मित अंग्रेजी शराब को लेकर कोई जवाब नहीं दे सका, जिस पर पुलिस ने कंटेनर को जब्त कर शराब की पेटियों को उतरा। पुलिस ने कंटेनर से 175 पेटी शराब जब्त की है। जिसे तस्करी कर गुजरात ले जा रहे थे। थानाधिकारी ने बताया कि पुलिस ने शराब तस्करी कर रहे असमिल उर्फ राहुल पुत्र इजराइल खान निवासी ग्लासनिया का बास थाना फिरोजपुर झिरखा थाना नुहू हरियाणाए दर्शन पुत्र दौलतराम मेघवाल निवासी पाटन उदयपुरी थाना फिरोजपुर झिरखा नूंहु हरियाणा को गिरफ्तार कर लिया है।

फायनैंस कर्मचारियों से 14 हजार की लूट

डूंगरपुर, (निसं)। बिछीवाड़ा थाना क्षेत्र में नेशनल हाईवे-48 पर फाइनेंस कर्मचारियों के साथ लूट का मामला सामने आया है। बाइक सवार बदमाशों ने चाकू दिखाकर डराया। फाइनेंस कर्मचारियों ने बदमाशों से बचाव का प्रयास किया, लेकिन बदमाश 14 हजार रुपए से भरा बैग लूटकर फरार हो गए। फिलहाल पुलिस बदमाशों की तलाश कर रही है।

बिछीवाड़ा थाने के एसआई ने बताया कि रवि गुप्ता पुत्र साहेब गुप्ता निवासी महीहर मध्य प्रदेश ने रिपोर्ट दर्ज करवाई है। रिपोर्ट में बताया कि वह क्रेडिट एक्सेस ग्रामीण लिमिटेड में काम करता है। सोमवार को वह और उसका साथी रतनलाल पुत्र चंदराम मेघवाल निवासी कोटपुतली जयपुर दोनों सोमवार सुबह के समय फाइनेंस की रिकवरी करने निकले थे। कनबई, शेरावाडा, मालीफला, बौखला से शेरावाडा आए। शेरावाडा में चाय पीकर वापस बिछीवाड़ा की ओर जा रहे थे। एनएच-48 होटल के सामने ब्रिज पर एक बाइक पर दो युवक आए।

पीछे बैठे युवक ने चलती बाइक से उस पर चाकू मारने का प्रयास किया। जिस पर रतनलाल ने हेलमेट निकलकर खुद का बचाव करने का प्रयास किया। इस दौरान उनकी बाइक का बैलेंस बिगडकर डिवाइडर से टकराकर सर्विस लेन में गिर गए। इससे दोनों को गंभीर चोटें आईं। बदमाशों ने उनके पास से रुपयों से भरा बैग लूट लिया और उदयपुर की ओर भाग गए। बैग में रिकवरी के रुपए थे। वहीं एक टैबलेट था, जिसे बदमाश ले गए। दोनों घायलों को अस्पताल में भर्ती करवाया है। पुलिस लूटपाट करने वाले दोनों बदमाशों की तलाश कर रही है।

काजड़ा गांव में शहीद विनोद सिंह शेखावत का सम्मान के साथ अंतिम संस्कार

बेटियों ने किया पिता को सेल्यूट, हमारे पापा पर गर्व है, देश के लिए जान दी

सूरजगढ़, (निसं)। काजड़ा गांव के रहने वाले सेना के जवान विनोद सिंह शेखावत शहीद हो गए। मंगलवार को सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया। सुबह उनकी पार्थिव देह सूरजगढ़ पहुंची, जहां से तिरंगा यात्रा के साथ पार्थिव देह उनके गांव काजड़ा स्थित निवास पर ले जाई गई। रास्ते में जेसीबी से फूल बरसाए गए। यहां पर अंतिम दर्शनों के बाद उनका अंतिम संस्कार किया गया।

सीएम भजनलाल शर्मा की ओर जिला कलेक्टर रामावतार मीणा ने पुष्प चक्र अर्पित किया। इस मौके पर भाजपा प्रदेश महामंत्री एवं पूर्व सांसद संतोष अहलावत, जिला कलेक्टर रामावतार मीणा व एसपी शरद चौधरी, विधायक श्रवण कुमार, सरपंच मंजू तंवर, पूर्व विधायक जेपी चंदेलिया, पूर्व चेयरमैन हीरालाल, जिला व्यापार संघ अध्यक्ष सेवाराम गुप्ता, छैलूराम भड़िया, मंजीत तंवर पीओ ममता यादव, कर्नल बलराज पूनियां, नायब सूबेदार विक्रम सिंह शेखावत, सैनिक कल्याण बोर्ड

सेना के अधिकारियों व कलेक्टर ने बेटियों तथा पुत्र को शहीद की सेना की ड्रेस तथा तिरंगा भेंट किया।

ऑफिसर झुंझुनूं कर्नल सुरेश जांगिड़, वेलफेयर ऑफिसर चिड़ावा जयकरण डांगी ने पुष्पचक्र अर्पित किए और कहा कि परिवार के साथ पूरा प्रशासन खड़ा है। सभी पैकेज परिवार को दिलवाए जाएंगे। भाजपा की प्रदेश महामंत्री पूर्व सांसद संतोष अहलावत ने भी श्रद्धासुमन अर्पित कर सरकार की तरफ से हर संभव मदद का आश्वासन दिया। बेटी नैंसी और खुशी ने अपने पिता की शहादत पर गर्व होने की बात कही। वहीं 10 साल के बेटे राज्यवर्धन ने मुखाग्नि दी। गांव में गमगीन माहौल रहा।

जनप्रतिनिधियों ने कहा कि विनोद सिंह की शहादत पर सभी को गर्व है। सेना से आए अधिकारियों व जिला कलेक्टर ने दोनों बेटियों तथा पुत्र को शहीद की सेना की ड्रेस तथा तिरंगा भेंट किया गया। इससे पहले जब पार्थिव देह पहुंची और वीरांगना सुमन कंवर को अंतिम दर्शन के लिए लाया गया तो वीरांगना सुमन कंवर पार्थिव देह के लिपट गई। यह देखकर सभी लोग भावुक हो गए। वहीं बेटियां भी जिला सैनिक कल्याण अधिकारी से लिपटकर अपने पिता को वापिस लाने के लिए रोते-रोते चिल्ला पड़ी। सेना से आए अधिकारियों ने बताया कि 23 नवंबर को रात 11:40 बजे सर्विलांस ड्यूटी के दौरान तबीयत बिगड़ी थी। उन्हें इम्फाल (मणिपुर) स्थित शिजा हॉस्पिटल एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट ले जाया गया था। वहां रात करीब 2:30 बजे उन्होंने अंतिम सांस ली थी।

- **सीएम भजनलाल शर्मा की ओर जिला कलेक्टर रामावतार मीणा ने पुष्प चक्र अर्पित किया**

शहीद विनोद सिंह शेखावत की पार्थिव देह पहुंचने पर चिड़ावा-लोहारू बाईपास स्थित काजड़ा चुंगी नाका पर बड़ी संख्या में युवा शहीद की अगवानी के लिए जुटे। बाइकों से तिरंगा यात्रा निकाली गई। काजड़ा के विनोद सिंह पुत्र जगमाल सिंह 2004 में भारतीय सेना में भर्ती हुए थे। वे सेना की इन्फैंट्री बटालियन 2 महार रेजिमेंट में हवलदार के पद पर तैनात थे। जवान विनोद सिंह के चार भाई हैं। उनके एक बेटा और दो बेटी हैं। पत्नी सुमन कंवर बच्चों की पढ़ाई के कारण जयपुर में रहती हैं। शहीद विनोद सिंह शेखावत की बड़ी बेटी नैंसी 11वीं, छोटी बेटी खुशी 9वीं और बेटा राज्यवर्धन सिंह शेखावत छठी कक्षा में पढ़ता है। नैंसी ने काजड़ा से 10वीं कक्षा पास की थी, जिसके बाद जुलाई में तीनों बच्चे आगे की पढ़ाई के लिए जयपुर शिफ्ट हो गए थे। उनके साथ विनोद की पत्नी सुमन कंवर भी जयपुर ही शिफ्ट हो गई। शहीद के माता-पिता का पहले ही निधन हो चुका है। गांव में विनोद सिंह के 4 भाई अपने परिवारों के साथ रहते थे।

संक्षिप्त

संविधान दिवस पर दिलाई शपथ

निवाई। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण टोंक के सचिव दिनेशकुमार जालूथरिया के निर्देशानुसार तालुका सेवा समिति निवाई द्वारा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय निवाई व पहाड़ी में संविधान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर विधिक जागरूक शिविर का आयोजन कर संविधान का उद्देश्य, संविधान का महत्व, संविधान में वर्णित मौलिक अधिकारों व मूल कर्तव्यों के बारे में जानकारी दी गई। इस दौरान छात्र-छात्राओं को संविधान की प्रस्तावना की शपथ भी दिलाई गई। इसी प्रकार गांव पहाड़ी में विधिक जागरूक शिविर का आयोजन किया गया जिसमें संविधान का उद्देश्य, मूल अधिकार, मूल कर्तव्य व संविधान का महत्व बताया गया। इस दौरान 25 लाभान्वित उपस्थित रहे।

अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार की मौत

राजगढ़। मंडावर मार्ग पर झाकड़ा के पास अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत हो गई। बाइक सवार युवक पिनान मार्ग से गांव बीदरका लक्ष्मणगढ़ जा रहा था। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार बिदरका गांव निवासी सीताराम गुर्जर ने दर्ज कराया कि उसका छोटा भाई मुकेश 39 वर्ष पुत्र हरि नारायण गुर्जर सोमवार रात्रि को पिनान होकर अपने गांव लौट रहा था। जिसकी बाइक को झाकड़ा ग्राम के पास अज्ञात वाहन चालक ने टक्कर मार दी। इस हादसे में उसके भाई मुकेश गुर्जर की मौत हो गई। पुलिस ने मंगलवार को मृतक के शव का पोस्टमार्टम करा कर लाश परिजनों को सौंप दी

गोदाम निर्माण कार्य का शुभारंभ

दूदू । जिला मुख्यालय के भोजपुर रोड स्थित संचालित मंशापूर्ण बालाजी गौशाला में गायों के लिए चार गोदाम निर्माण कार्य का शुभारंभ भामाशाह द्वारा शुरू किया गया। गौशाला में सूखे चारे के भंडारण के व्यवस्था नहीं थी के कारण परेशानी का सामना करना पड़ रहा था समस्या के समाधान के लिए भामाशाहों के सहयोग से निर्माण कार्य शुरू किया एवं भूमिका होगी

दिव्यांगजनों को सम्बल प्रदान करने के लिए शिविर आज

निवाई। पंचायत समिति सभागार में बुधवार को दिव्यांगजनों को सम्बल प्रदान करने हेतु शिविर का आयोजन किया जाएगा। उपखंड अधिकारी सुरेशकुमार हरसोलिया ने बताया कि दिव्यांगजनों को कृत्रिम अंग व उपकरण से लाभान्वित किए जाने हेतु पंचायत समिति मुख्यालय पर सुबह 10 से सांय 5 बजे तक चिन्हिकरण शिविर का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि अधिक से अधिक दिव्यांगजनों को लाभान्वित करने के लिए सभी स्थानीय जनप्रतिनिधि, पार्षद, सरपंच ग्राम विकास अधिकारी, हल्का पटवारी, एएनएम व आंगनबाडी कार्यकर्ता लोगों को शिविर तक आने के लिए प्रेरित करेंगे।

संविधान दिवस मनाया

निवाई। राजकीय महाविद्यालय व कन्या महाविद्यालय निवाई में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना व मतदाता जागरूकता क्लब के संयुक्त तत्वावधान में संविधान दिवस पर महाविद्यालय प्राचार्य प्रोफेसर दीपकराज जैन ने छात्र-छात्राओं को मतदाता जागरूकता की शपथ दिलाई। इस दौरान रूपा चौधरी ने संविधान की उद्देशिका का पठन किया।इसके पश्चात अजीम प्रेमजी फाउंडेशन की कार्यकर्ता अनुपमा तिवारी ने संविधान विषय की वर्तमान प्रासंगिकता विषय पर लघु फिल्म, पोस्टर प्रदर्शनी व प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रीति ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय सेवा योजना के जिला समन्वयक डॉ सीएल मीना सहित सभी संकाय सदस्य मौजूद थे।

प्रदेश महासचिव बनने पर खुशी की लहर फैली

मनोहरपर। दलित ओबीसी माइनॉरिटीज एंव आदिवासी संगठनो का परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ उदित राज ने कर्तव्यनिष्ठ परिश्रमी ईमानदार दयालू सब के सुख दुख में काम आने वाले सबको साथ लेकर चलने वाले कांग्रेस के संगठन की नीति और नीति को बता कर अधिक से अधिक कांग्रेस में शामिल करने वाले मोहम्मद अयूब को प्रदेश का महासचिव नियुक्त किया है।

संविधान दिवस पर हुई संगोष्ठी, प्रदर्शनी और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

दौसा। संविधान दिवस के अवसर पर मंगलवार को सूचना केन्द्र में संगोष्ठी, प्रदर्शनी और प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वक्ताओं ने भारतीय संविधान को जीवंत दस्तावेज बताते हुए कहा कि संविधान प्रत्येक देशवासी को सशक्त बनाता है। उन्होंने मौलिक अधिकारों के प्रति जागरूक होने के साथ मूल कर्तव्यों का पालन कर देश के विकास में भागीदार बनने का आह्वान किया। इससे पूर्व अतिथियों ने बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर के चित्र पर पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

अतिरिक्त जिला कलेक्टर लालसोट मनमोहन मीणा ने डॉ. भीमराव अंबेडकर के चित्र पर पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

- अतिथियों ने डॉ. भीमराव अंबेडकर के चित्र पर पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया

अतिरिक्त जिला कलेक्टर लालसोट मनमोहन मीणा ने अपने उद्बोधन में भारतीय संविधान पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए बताया कि किस तरह संविधान सभा द्वारा संविधान तैयार किया गया। संविधान की विशेषताओं और उद्देश्य को भी रेखांकित करते हुए उन्होंने आह्वान किया कि प्रत्येक देशवासी को भारतीय संविधान के प्रति जागरूक रहना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों एवं उपस्थित आम जन को मतदाता शपथ भी दिलाई। सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय के सहायक निदेशक सोहनलाल ने सभी को संविधान दिवस की शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए बताया कि किस तरह भारतीय संविधान हमें सशक्त बनाता है। संविधान में जिन अनुच्छेदों और सूचियों का उल्लेख किया गया है, वह प्रत्येक देशवासी के जीवन में उपयोगी वक्ता एवं उद्घोषक प्राचार्य कमला शर्मा ने कहा कि हमारा संविधान हस्तलिखित होने के साथ-साथ कठोर और लचीला भी है।इसमें सभी वर्गों और धर्मों का समावेश करते हुए सभी का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया है। उन्होंने आह्वान किया कि भारतीय संविधान में दर्शाये गये अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों के प्रति भी भारतवासी जागरूक रहे।

उन्होंने भारतीय संविधान की प्रस्तावना का पाठन करवाया। जिला स्वीप समन्वयक रामवीर चौधरी ने कविताओं के जरिये भारतीय संवधिान की रूपरेखा, उसका महत्व और विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि किस तरह से भारतीय संविधान को लिखा गया। उन्होंने नव मतदाताओं से मतदाता सूची में नाम जुडवाने की अपील की। इस अवसर पर सहायक जनसम्पर्क अधिकरी छगन यादव, सहायक प्रशासनिक अधिकारी संदीप मीणा, अध्यापक कैलाश चंद मीणा, संजय राणा सहित पत्रकारगण, कॉलेज एवं स्कूल के विद्यार्थी व आमजन मौजूद रहे।

भैंस चोरी के मामले में दो आरोपी गिरफ्तार

मानपुरा माचेड़ी । चंदवाजी थाना पुलिस ने भैंस चोरी के मामले में दो आरोपियों को जेल से प्रोटेक्शन वारंट पर गिरफ्तार किया हैं।पुलिस दोनों से पूछताछ कर रही है। जयपुर ग्रामीण पुलिस अधीक्षक आनन्द शर्मा ने बताया कि बालुराम पुत्र लाखाराम गुर्जर निवासी लखेर ने रिपोर्ट दर्ज करवायी थी कि रात्रि को मेरी भैंस व दो पाडी खोल करके कोई ले गया। मेरी गाय के रम्भाने पर मेरे को जाग हो गई। मैने देखा तो मौके पर मेरी भैंस व पाडी नहीं थी। मैंने टार्च से देखा तो एक भैस को पिकअप में लेकर भाग गये व दो पाड़ी छोड गये। आरोपियों की गिरफ्तारी व भैंस बरामद हेतु थानाधिकारी सुगन सिंह के नेतृत्व में पुलिस टीम का गठन कर सूचना एकत्र कर व तकनीकी सहायता द्वारा प्रकरण में आरोपी कमलेश बावरिया व राजेश उर्फ गुल्ला बावरिया वांछित होना पाए गए जो वर्तमान में जेल में बंद थे।

संविधान दिवस पर लोगों को जानकारी दी

सांभरझील, (निसं)। भारत के संविधान के 75 वर्ष पूर्ण होने पर संविधान दिवस कार्यक्रम मनाया गया। पूर्व प्राचार्य डा. ज्ञान प्रकाश दायमा के सानिध्य में संविधान निर्माता बाबा साहेब अंबेडकर की प्रतिमा को श्रद्धा सुमन मौजूद लोगों ने अर्पित किए। अंबेडकर भवन में आयोजित कार्यक्रम के दौरान उन्होंने भारत के संविधान पर सागर्वित जानकारी देते हुए बताया कि वर्तमान में भारतीय संविधान में कुल 395 अनुच्छेद, 25 भाग और 12 अनुसूचियां हैं। भारतीय संविधान में विभिन्न राजनीतिक दर्शन, नागरिकों के मूल अधिकार, नागरिकों के मूल कर्तव्य के अलावा विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच शक्तियों का विभाजन इत्यादि अनेक प्रावधानों को शामिल किया गया है।

संविधान दिवस पर बाबासाहेब को श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

भारतीय संविधान 22 भागों में विभजित है तथा इसमे 395 अनुच्छेद एवं 12 अनुसूचियाँ हैं। भारत के संविधान का मसौदा तैयार करने और उसे अंतिम रूप देने में 2 वर्ष 11 माह और 18 दिन लगे थे। भारतीय संविधान सभा की प्रथम बैठक वर्ष 1946 में 9 दिसंबर को हुई थी। संविधान बनाने में कुल 64 लाख रुपये खर्च हुए थे। एडवोकेट अखिलेश दायमा ने भी संविधान पर लोगों को जानकारी दी।

नए संशोधन के बारे में भी बताया। अंबेडकर चेतना समिति समिति के मुख्य संरक्षक प्रोफेसर डॉ.ज्ञान प्रकाश दायमा द्वारा संविधान की प्रस्तावना का भी वाचन कर संविधान की निष्ठा पूर्वक पालन करने की शपथ दिलवायी गई। समिति अध्यक्ष विनोद दुलारिया द्वारा भारतीय संविधान को सबसे पवित्र ग्रंथ बताया तथा संविधान का निष्ठा पूर्वक पालन करने का आव्हान किया।

विद्यार्थियों को किया जागरूक

निवाई। पीएम राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय निवाई में कैरियर गाइडेंस और साइंस मैथ्स क्लब गतिविधि का आयोजन किया गया। प्राचार्या देवेंद्रपाल सिंह ने बताया कि साइंस मैथ्स क्लब गतिविधि विषय पर विशेषज्ञों की वार्ता का भी आयोजन किया गया जिसमें लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी पंजाब के एसिस्टेंट डीन डॉ. पुनीत मंगला, कंप्यूटर एप्लीकेशन विशेषज्ञ शिवकुमार शर्मा व निखिल सोगानी ने चर्चा की। शाला में वार्ताकार के रूप में मोहरपाल गुर्जर, विनोद कुमार जैन व त्रिलोक चंद जैन ने भी अपनी वार्ता रखी।

सभी वार्ताकारों ने विद्यार्थियों की रुचि अनुसार अपना कैरियर चुनने की सलाह दी। प्रधानाचार्य देवेंद्रपाल सिंह ने विद्यार्थियों को उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए बताया कि सभी को अपने लक्ष्य का निर्धारण करते हुए उसे पाने तक कठिन परिश्रम करते रहना चाहिए।

'युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृति देश एवं समाज के लिये घातक है'

कोटपूतली। जिला नार्को कोऑर्डिनेशन सैंटर की जिला स्तरीय कमेटी की बैठक मंगलवार को जिला कलक्टर कल्पना अग्रवाल व पुलिस अधीक्षक राजन दुष्यंत की संयुक्त अध्यक्षता में जिला कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित हुई। जिला कलक्टर कल्पना अग्रवाल ने कहा कि युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृति देश एवं मानव समाज के लिये घातक है। इस नशे की प्रवृति पर अंकुश लगाने के लिये विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में वाद-विवाद, पोस्टर, चित्रकला, निबंध जैसी प्रतियोगिताओं तथा प्रभात फेरी के माध्यम से जागरूकता अभियान चलाने के साथ-साथ इस प्रकार के नशे की सामग्री के रैकेट चलाने वाले व्यक्तियों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्यवाही करने की आवश्यकता है। इसी प्रकार बोर्डर, राज्य के नाकों से आने वाले वाहनों पर भी सघन जांच की कार्यवाही की जाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि इसके साथ-साथ बसों एवं ट्रेनों में भी सूचना मिलने पर तत्काल कार्यवाही संबंधित विभागों द्वारा आपसी तालमेल से की जायें। वहीं जो व्यक्ति नशे का आदी हो और नशे की प्रवृति से छुटकारा पाना चाहते है उनके लिये विशेष रूप से नशा मुक्ति केन्द्र का संचालन भी किया जाये। जिला कलक्टर कल्पना ने सीएमएचओ से कहा कि वह एक डीओ लेटर तैयार करवाकर चिकित्सा विभाग में प्रेषित करें। जिसमें जयपुर तथा अलवर के ड्रग कंट्रोलर के अधिकारियों की साप्ताहिक ड्यूटी जिला मुख्यालय पर देने के लिए निर्देशित किया जायें तथा ड्रग कंट्रोलर द्वारा अब तक की गई कार्यवाही से अवगत कराने के बारे में सीएमएचओ से कहा। जिला पुलिस अधीक्षक राजन दुष्यंत ने बताया कि बैठक का मुख्य उद्देश्य युवाओं को नशे की प्रवृति से बचाना एवं एनडीपीएस के मामलों में कमी लाना है। उन्होंने सभी संबंधित विभागीय अधिकारियों से कहा कि वे इस संबंध में खुफिया जानकारी पुलिस से साझा करें।

- जिला नार्को कोऑर्डिनेशन सैंटर की जिला स्तरीय कमेटी की बैठक आयोजित

कलक्टर ने नार्को कोऑर्डिनेशन सैंटर की कमेटी की बैठक ली।

पुलिस विभाग एनडीपीएस सामग्री के सीजर की कार्यवाही करने के साथ-साथ इस प्रकार के रैकेट चलाने वाले असामाजिक तत्वों के विरूद्ध कठोर दण्डात्मक कार्यवाही करेगी। उन्होंने कहा कि विभाग द्वारा सूचना मिलने पर एनडीपीएस के प्रकरण दर्ज कर उन पर कार्यवाही की है।

'देश का भविष्य, संविधान के पन्नो में होता है'

अलवर। जिला कांग्रेस कमेटी अलवर की ओर से संविधान दिवस पर अम्बेडकर नगर स्थित नवनिर्मित पार्टी कार्यालय में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कांग्रेस जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा ने कांग्रेसजनो को संविधान के प्रति निष्ठा की शपथ दिलाई।

कांग्रेस जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा ने कहा कि किसी भी देश का अतीत, इतिहास के पन्नो में होता है और देश का भविष्य, संविधान के पन्नो में होता है। संविधान की स्थापना का मूल उद्देश्य नागरिकों को उनके मौलिक अधिकार मिले, समाज में अंत्योदय हो, अंतिम पंक्ति में बैठे दलित,गरीब, शोषित और पीड़ित व्यक्तिका उद्धार हो। उन्होंने कहा कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस हमेशा संविधान में निहित मूल्यां के लिए खड़ी रही है।

पिछले एक दशक में, हमने भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा संविधान की नींव को कमजोर करने और सामाजिक न्याय, समानता और लोकतंत्र के प्रति इसकी प्रतिबध्दता को कम करने के व्यवस्थित प्रयासों को देखा है। जिलाध्यक्ष मिश्रा ने कांग्रेस पार्टी के 26 नवम्बर, 2024 से 26 जनवरी, 2025 तक संविधान की रक्षा और इसके सिद्धांतों के प्रति पार्टी के समर्पण पर जोर देने के लिए 60 दिवसीय संविधान रक्षक राष्ट्रव्यापी अभियान की शुरुआत भी की। इस अभियान को जनता तक प्रभावी ढंग से पहुँचाने के लिए जिले के सभी प्रमुख कांग्रेसजनों को संगठित होकर रैलियां, घर-घर जाकर सम्पर्क करने, मीडिया से जुडऩे और जमीनी स्तर पर चर्चाओं के माध्यम से लोगों के साथ जोडऩा है।

अंत में पूर्व विधायक श्रीराम मीणा, उमरैण ब्लॉक के पूर्व अध्यक्ष श्री लालजी यादव एवं 26/11 मुंबई आतंकी हमले के शहीदों को मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई। इस दौरान कांग्रेस जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा, अजीत यादव, गफूर खान, इम्तियाज,फूलचंद शर्मा, रिपु दमन गुप्ता, शहर अध्यक्ष जे.डी. आर्यन, हरिशंकर रावत, जीत कौर सांगवान, लीली यादव,डॉ. पायल चौधरी, राजेश कृष्ण सिद्ध, अनवर साजिद खान, रमन सैनी, विक्रम यादव, राजेश विरमानी, कृष्ण कुमार खंडेलवाल,राजेश सैनी, संजय शुक्ला, सोनू गोपालिया, के.सी.मीणा, सुंदर पटेल, बी.डी.गुप्ता, योगेश शर्मा, नंद किशोर वर्मा, जमशेद खान, दिनेश जाटव, स्वराज सिंह, मनीष कोली, सरबजीत सिंह, चतुर्भुज यदुवंशी, प्रेम सिंह मीणा, राधेश्याम मीणा, संदीप सैनी, हुकुम सिंह, राकेश शर्मा, सहित अनेक कांग्रेसी मौजूद थे।

मण्डल रेल प्रबन्धक विकास पुरवार ने फुलेरा जंक्शन का किया निरीक्षण

फुलेरा । जयपुर मण्डल रेल प्रबन्धक मण्डल विकास पुरवार ने मंगलवार को दोपहर 2 बजे रेल अधिकारियों के साथ फुलेरा स्टेशन पर करीब 34 करोड़ की लागत से चल रहे अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत निर्माणाधीन कार्यों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने रनिंग रूम रेलवे इको पार्क, सामुदायिक भवन सहित निर्माणाधीन बिल्डिंग का निरीक्षण कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दियेवहीं दैनिक रेल यात्री संघ एकीकृत फुलेरा के अध्यक्ष अशोक वासदेव के नेतृत्व में पदाधिकारियों ने अपनी विभिन्न मांगों को लेकर एक लिखित मांग पत्र सौंपा गया। जिसमें मुख्य रूप से मांग की गई कि जयपुर-भोपाल, भोपाल जयपुर ट्रेन 19711,19712 यह ट्रेन रेल प्रशासन द्वारा आगामी 29 नवम्बर से कनकपुरा स्टेशन से चलने का प्रस्ताव लिया गया है। वहीं मांग पत्र में आगे बताया कि प्रतिदिन काफी संख्या में दैनिक रेल यात्री इस ट्रेन में ही यात्रा करते है।

- शिष्ट मण्डल ने विभिन्न मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपे

प्रबन्धक मण्डल पुरवार ने डीआरएम को मांग पत्र सौंपते हुए ।

जो कि प्रशासन द्वारा इस ट्रेन को करीब डेढ़ महीने तक कनकपुरा रेलवे स्टेशन से संचालित करने का प्रस्ताव है। इसके चलते संघ द्वारा मांग की गई कि इस ट्रेन को इस दौरान जयपुर स्टेशन या खातीपुरा रेलवे स्टेशन से चलाया जाये। वहीं आगे मांग की गई कि अमृत भारत योजना के तहत रेलवे स्टेशन पर जो कार्य चल रहा है वह काफी धीमी चल रहा है। जिससे रेलवे स्टेशन पर आने जाने वाले दैनिक रेल यत्रियों व आम यात्रियों को काफी समस्याओं सामना करना पड़ रहा है। इस सम्बन्ध में रेल मण्डल प्रबन्धक से मांग की गई कि उक्त कार्य को जल्दी पूर्ण करवाया जाये। इसी क्रम में मांग पत्र में बताया कि अजमेरी गेट स्थित गेट नम्बर एलसी 1पर प्रशासन द्वारा अण्डरपास का निर्माण कार्य शुरू किया गया था। परन्तु काफी समय से वह बन्द किया जा चुका है। इस सम्बन्ध संघ द्वारा इसे पुन: चालू करने की मांग की गई। जिस पर डीआरएम द्वारा बताया गया अण्डरपास के तहत कुछ समस्याएं आ रही थी। इसके लिए मीटिंग हो चुकी है।

इस अवसर पर सीनियर डीएसटीई किशन स्वरूप, एडीआरएम संजीव दीक्षित, सीनियर डीईई शिवराज, सीएलआई लोकेन्द्र सिंह, सीनियर डीएमई अरुण कुमार, सीनियर डीएन महेश कुमार मीणा, सीनियर डीसीएम के.के मीणा, एडीएसो राधामोहन, स्टेशन अधीक्षक सतीश कुमार, रेलवे सुरक्षा बल निरीक्षक राजेश सिंह, जीआरपी थाना प्रभारी गुलजारी लाल सहित प्रतिनिधि मण्डल में अध्यक्ष अशोक वासदेव, जेडआर यू सी सी मेम्बर भारत भूषण शर्मा, संरक्षक शक्ति सिंह, मनीष गगरानी सहित अन्य कई लोग उपस्थित रहे।

संविधान दिवस मनाया

चाकसू। स्थानीय राजकीय कन्या महाविद्यालय चाकसू में आज संविधान दिवस मनाया गया। संविधान दिवस के अंतर्गत प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम रखा गया, जिसमें प्रथम स्थान पर कोमल यादव तृतीय वर्ष रही और लक्ष्मी कंवर प्रथम वर्ष द्वितीय स्थान पर रही। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. ए एल कुलहरी ने विजयी छात्राओं को कलम देकर सम्मानित किया। संविधान दिवस के अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. ए एल कुलहरी ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि आज ही के दिन 26 नवंबर 1949 को स्वतंत्र भारत में 284 सदस्यों वाली संविधान सभा के द्वारा तैयार नवीन संविधान को अंगीकार कर राष्ट्र को समर्पित किया गया। भारत सरकार द्वारा 26 नवंबर 2015 को संविधान निर्माण के मुख्य शिल्पी और संविधान प्रारूप समिति के अध्यक्ष बाबासाहेब भीमराव रामजी अंबेडकर के योगदान की स्मृति में संविधान दिवस मनाने का निर्णय लिया गया।संविधान दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य भारत के नागरिकों को संविधान के प्रति सचेत करना एवं समाज में संविधान के महत्व का प्रसार करना है।

सार-समाचार

हथियार से फायरिंग कर सोशल मीडिया पर वीडियो रील डालना पड़ा भारी

पावटा। दो बाइको पर चार लड़को का हथियार से फायरिंग कर आम लोगो मे भय व्यापत करना एक युवक को महंगा पड़ गया। युवक ने फायरिंग करते हुए अपना वीडियो इंस्टाग्राम पर अपलोड कर दिया था। इसकी सूचना मिली तो प्रागपुरा थाना पुलिस ने मंगलवार को युवक को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस अधीक्षक कोटपुतली बहरोड राजन दुष्यंत ने बताया कि जिले मे हथियार रखने वालो व सोशल मीडिया पर हथियार सहित रील अपलोड करने वालो की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे विशेष अभियान को सफल बनाने के लिए प्रभावी कार्यवाही करते हुए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक वैभव शर्मा के निर्देशन एंव वृत्ताधिकारी वृत्त विराटनगर शिप्रा राजावत के सुपरविजन व प्रागपुरा थाना प्रभारी राजेश कुमार के नेतृत्व मे थाना प्रागपुरा पर गठित टीम द्वारा हथियार रखने वालो व सोशल मीडिया पर हथियार सहित रील अपलोड करने वाले बदमाशो को चिंहित कर कार्यवाही करने के लिए सतत निगरानी रखते हुए उनकी गतिविधियों पर नज़र रखते हुए अमित सिंह पुत्र अशोक सिंह निवासी दय राम सिंह की ढाणी तन बेरी का अपने साथियों के साथ बाइक पर फायरिंग करते हुए वीडियो वायरल हो रहा था। जिस संबंध मे कांस्टेबल रितेश कुमार द्वारा तथ्य व साक्ष्य एकत्रित करते हुए तहरीर पेश की जिस पर मामला पंजिबद्ध कर अमित सिंह पुत्र अशोक सिंह निवासी दयराम सिंह की ढाणी तन बेरी को गिरफ्तार किया किया गया। घटना का विवरण बताते हुए प्रागपुरा थाना प्रभारी राजेश कुमार ने बताया कि कांस्टेबल रितेश अपने मोबाइल पर व्हाट्सएप मैसेज चेक कर रहा था तभी व्हाट्सएप पर एक मुखबिर खास द्वारा कांस्टेबल रितेश के मोबाइल पर इंस्टाग्राम आईडी का एक वायरल वीडियो व एक फोटो भेजा व बताया कि उक्त विडियो फोटो अमित सिंह पुत्र अशोक सिंह निवासी दयराम सिंह की ढाणी तन बेरी बांध का है। ज्यों हथियार सहित फायरिंग कर रहा है। इस विडियो को खोलकर देखा गया तो दो बाइको पर चार लड़के का फिल्मी अंदाज में हथियार से फायरिंग करते हुए जा रहे है। ग्रामीणों ने बताया कि यह वीडियो अमित सिंह पुत्र अशोक सिंह का है ज्यों अन्य जानकारी के साथ बाइक पर बैठे हैं व आम लोगों में भय व्याप्त करने के लिए व उसके जान कार बदमाशो के हथियार विक्रय करवाने के लिए अपनी खुद की आईडी से सोशल मीडिया पर वायरल कर आगे से आगे प्रसारित करवा रहा है। जिस पर प्रार्थना थाना पुलिस ने आर्म्स एक्ट में मामला दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया गया।

सफाई कर्मचारियों में रोष व्याप्त

मनोहरपुर । शहर की नगर पालिका में कार्यरत सफाई ठेकेदार को पिछले 4 माह से बकाया भुगतान नहीं किया जा रहा है जिसके चलते सफाई कर्मचारियों को वेतन मिलना बंद हो गया है। जिससे सफाई कर्मचारियों वह एक बार फिर से हड़ताल पर लौट सकते है। जानकारी के अनुसार नगर पालिका में अधिशासी अधिकारी प्रवीण कुमार शर्मा का स्थानांतरण होने के बाद तहसीलदार नीलम राज को नगर पालिका का कार्यकाल सोपा गया था। तहसीलदार ने पदभार ग्रहण कर लिया था उसने बताया कि दीपावली की सजावट दीपावली पर उसके द्वारा की गई सजावट की बिलों का भी भुगतान नहीं किया गया। इसको लेकर बिलों के भुगतान के संबंध में जब भी तहसीलदार से बात की जाती है वह वह बिलों का भुगतान करने के लिए असमर्थता जताते हैं।सफाई कर्मचारियों को वेतन नहीं मिलने से उन्होंने ठेकेदार को कार्य का बहिष्कार कर धरना देने की चेतावनी भी दी है।

सांस्कृतिक व देश भक्ति कार्यक्रम हुआ

कोटपूतली। कस्बे के निकटवर्ती ग्राम रामसिंहपुरा रोड़ स्थित उप कारागृह में मंगलवार को सामाजिक कार्यकर्ता रतनलाल शर्मा द्वारा सांस्कृतिक व देश भक्ति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई। जेलर प्रेमप्रकाश मीणा ने निर्दोष लोगों पर फायरिंग करने वाले पाकिस्तान के आतंकवादियों की कड़े शब्दों में निंदा की। लक्ष्मीनारायण व उनकी टीम ने देश भक्ति गीतों व भजन की प्रस्तुति से जेल परिसर को देश भक्तिमय बना दिया। सामाजिक कार्यकर्ता शर्मा ने कैदियों को भारतीय संविधान दिवस की शुभकामनायें दी। इस अवसर पर सभी बदीयों को संविधान को साक्षी मानकर प्रतिज्ञा दिलाई कि भविष्य में ऐसा कोई गलत कार्य नहीं करेंगे जो हमको इसी जगह पर आना पड़े। जिससे परिवार व समाज में हमारा नाम कलंकित हो। इस दौरान सतीश शर्मा, डॉ. सुरेंद्र कुमार, उपेंद्र, महिपाल, विष्णु, मनोज समेत अन्य मौजूद रहे।

गौशाला में गायों को गुड़ खिलाया

सावरदा। श्री राधा कृष्ण गौशाला में गाय को खिलाया गुड, कस्बे के नरेना रोड पर स्थित श्री राधा कृष्ण गौशाला मे मंगलवार को गौशाला मे महेंद्र दाधीच ने अपनी माताजी सावित्री देवी की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य पर गौशाला में गायों को गुड़ खिलाया। साथ ही गौशाला में गौ सेवा के लिए 21 हजार रूपए का सहयोग किया। इस दौरान पं. दुर्गादत्त शर्मा ने बताया कि मानव जीवन मे गौ सेवा ही सबसे बड़ी सेवा है। भामाशाह को गौ सेवा मे विभिन्न घोषणा के लिए बढ़-चढ़कर आगे आना चाहिए। दौरान श्योनारायण रियाड, छोटू कुमावत, सत्य नरायण, दिनेश शर्मा आदि मौजूद थे।

राधा वल्लभ मिश्रा प्रदेश सचिव बने

सांभरझील । अंतर्राष्ट्रीय ब्राह्मण संगठन के प्रदेश अध्यक्ष शिवचरण शर्मा की अभिशंसा और राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. पद्माकर द्विवेदी के अनुमोदन के पश्चात समाजसेवी व एडवोकेट राधावल्लभ मिश्रा को प्रदेश सचिव पद पर नियुक्त किया गया है राष्ट्रीय सचिव संतोष तिवारी ने मिश्र को भेजें अपने संदेश में कहा कि आपकी विद्वता वह अनेक क्षेत्रों में दिए गए योगदान के लंबे अनुभव और सब को साथ लेकर चलने की योग्यता से संगठन को निश्चित रूप से मजबूती मिलेगी। एडवोकेट राधा वल्लभ मिश्रा की नियुक्ति पर कुलदीप मिश्रा, प्रीतम जोशी, व्याख्याता मनोज मिश्रा, दीपक कुमार , पत्रकार महेंद्र पारीक ,चंद्रशेखर शर्मा, वेध कैलाश चंद्र मिश्र, विनोद कुमार गौड़, सुरेश खंडेलवाल, ओमप्रकाश पाराशर आदि ने प्रसन्नता व्यक्त की

संविधान दिवस मनाया

गोविंदगढ़ /अलवर । कस्बे के राजकीय महाविद्यालय गोविंदगढ़ में 75 वे संविधान दिवस के अवसर पर अवसर पर सिविल न्यायाधीश एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट जज नीतू गुप्ता ने संविधान की प्रस्तावना का वाचन किया और विद्यार्थियों को शपथ दिलाई प्राचार्य प्रोफेसर लक्ष्मीकांत शर्मा ने बताया कि राष्ट्रीय विधि दिवस के उपलक्ष में राजकीय महाविद्यालय गोविंदगढ़ में विधिक जागरूकता शिविर आयोजित किया । इस अवसर पर नालसा द्वारा नागरिकों की मुफ्त सहायता हेतु टोल फ्री नंबर 15100 जारी किया गया कार्यक्रम में लक्ष्मी नारायण मीणा, श्रीकांत पाठक राजेश कुमार शर्मा पूरणमल शर्मा तथा तालुका विधिक सेवा समिति के पी एल वी अनिल कुमार, नजीर संजय माथुर उपस्थित रहे ।

ट्रेलर ने खड़ी पिकअप को टक्कर मारी

बौंली-बामनवास। क्षेत्र से गुजर रहे 8 लाइन दिल्ली- मुंबई एक्सप्रेसवे पर हिंदूपुरा गांव के पास मंगलवार को सुबह एक अनियंत्रित ट्रेलर ने रोड सेफ्टी पिकअप वाहन को टक्कर मार दी इस सड़क दुर्घटना में चार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। सुबह दिल्ली- मुंबई एक्सप्रेसवे पर रोड सेफ्टी पिकअप देख-रेख करने को साइड में खड़ी थी इसी दौरान एक अनियंत्रित ट्रेलर आया व पिकअप को टक्कर मार दी।

संक्षिप्त

अवैध बजरी से भरा हुआ एक ट्रैक्टर-ट्रॉली जब्त

निवाई। बरोनी थाना पुलिस ने अवैध बजरी से भरा हुआ एक ट्रैक्टर-ट्रॉली जब्त किया है। थानाधिकारी मानवेन्द्र सिंह ने बताया कि पुलिस गश्त के दौरान गांव जामडोली के समीप से अवैध बजरी से भरे हुए एक ट्रक्टर-ट्रॉली को जब्त करके सुरक्षार्थ बरोनी थाना प्ररिसर में खड़ा करवा दिया है। उन्होंने बताया कि जब्त ट्रैक्टर-ट्रॉली के बारे में खनिज विभाग को सूचना दे दी है।

विद्यालय में संविधान दिवस मनाया

सावरदा । मौजमाबाद पंचायत समिति के अखैपुरा ग्राम पंचायत क्षेत्र के महेशपुरा में स्थित राजकीय प्रवेशिका संस्कृत विद्यालय म सोमवार कों संविधान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रभारी विजय लाल चलावरिया ने संविधान की महत्ता ,विशेषता प्रतिपादित की तथा विद्यार्थियों के समक्ष संविधान की प्रस्तावना की शपथ दिलाई गई , तथा संविधान का महत्व बच्चों को बताया। इस अवसर पर संस्था प्रधान राजेंद्र कुमार धोबी, शिक्षक राजेंद्र कुमार शर्मा, समुद्रपुरी गोस्वामी ,विजय लाल चलावारिया, राजेंद्र कुमावत ,आंगनवाड़ी कार्यकर्ता ब्रह्मा देवी व सहायिका भी उपस्थित रही ।अंत में संस्था प्रधान ने सबका आभार व्यक्त कर धन्यवाद ज्ञापन किया तथा संविधान की गरिमा रखना बनाए रखने के लिए बच्चों को प्रेरित किया। गोष्टी को संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष हरिप्रसाद बैरवा ने स्वतंत्रता आंदोलन में शहिद क्रांतिकारीयो और डॉ. भीमराव अंबेडकर को नमन करते हुए कहा कि कहा कि संविधान देश के प्रत्येक नागरिक को मान सम्मान अधिकारों को संरक्षित करता है, समानता न्याय स्वतंत्रता जैसे मूल्यों के साथ देश में रहना सीखना है। उन्होंने कहा कि देश की एकता अखंडता और समानता का प्रतीक संविधान है, ये करोड़ों भारतीयों का सुरक्षा कवच है, जो उन्हें हर तरह के अधिकार देता है। संगोष्ठी को संगठन महासचिव जिला दिनेश चौरसिया ने कहा कि हमारा संविधान संघर्ष और अस्तित्व की पहचान है। इस अवसर पर शिवजी राम मीणा, रामलाल संडीला ब्लॉक अध्यक्ष, कैलाशी देवी मीणा, सलीमुद्दीन खान, धर्मेंद्र सालोदिया, सीपी श्रीवास्तव, अब्दुल खालिक, सेवादल, मनिंदर बैरवा, मूलचंद बैरवा आदि लोगोंइस अवसर पर अपने विचार रखें।

शादी में एक रुपया व नारियल लेकर मिसाल कायम की

शाहपुरा। शाहपुरा शहर के छापुड़ा खुर्द की ढाणी कांकड़ा वाली में राम सिंह टोकस ने अपने बच्चों की शादी में एक रुपया व नारियल लेकर लेकर समाज में एक मिसाल पेश की। शादी में लड़की पक्ष वाले सीताराम, प्रहलाद बोबासया ने बारात की बहुत अच्छे से खातिर कर स्वागत किया।

भामाशाह सम्मान समारोह होगा लावा में

पीपलू। जांगिड़ ब्राह्मण समाज का अतिथि व भामाशाह सम्मान समारोह रविवार को जंगजितेश्वर महादेव मंदिर पार्क लावा मे आयोजित होगा। जिला मिडिया प्रभारी कृष्णकुमार जांगिड़ पीपलू व मनीष बहकवा ने बताया कि लावा में श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर के जीर्णोद्धार मे सहयोग दे रहे भामाशाहों का सम्मान समारोह बड़ी धूमधाम से किया जाएगा।मंगलवार को मन्दिर समिति के कार्यकर्ता रानोली पहुंचकर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधि प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष व पीपलू तहसील अध्यक्ष एडवोकेट हनुमानप्रसाद जांगिड, कार्यकारी जिलाध्यक्ष महेश जांगिड को कार्यकारणी के साथ कार्यक्रम में भाग लेकर सफल बनाने को लेकर आमंत्रित किया। इस दौरान मन्दिर समिति अध्यक्ष अवधेश, कोषाध्यक्ष गौरीशंकर, महामन्त्री सत्यनारायण, सुमित शर्मा, राकेश व लोकेश सहित कई समाज बंधु मौजूद थे।

संविधान दिवस मनाया

चाकसू। राजकीय महाविद्यालय चाकसू में सोमवार को संविधान दिवस मनाया गया जिसके अंतर्गत प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम, संविधान की प्रस्तावना शपथ एवं निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । कार्यक्रम का संचालन प्राचार्य डॉ. सुनीता मीना की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसका संचालन डॉ. मोहन लाल दायमा, श्री गोकुल चन्द मीना ने क्रिया तथा सभी संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

भारतीय संविधान हमें केवल सशक्त नहीं बल्कि जागरुक बनाता है : कलेक्टर

खैरथल। खैरथल तिजारा जिला मुख्यालय पर पीएम श्री जवाहर नवोदय विद्यालय में मंगलवार को संविधान दिवस के अवसर पर प्रदर्शनी संगोष्ठी प्रश्नोत्तरी सहित अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम का शुभारंभ जिला कलेक्टर किशोर कुमार सहित अतिथियों की ओर से दीप प्रज्वलित कर व डॉ भीमराव अंबेडकर के चित्र पर पुष्प अर्पित कर किया।

- संविधान दिवस के उपलक्ष्य में संगोष्ठी और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

इस अवसर पर जिला कलेक्टर ने भारतीय संविधान को राष्ट्र की आत्मा बताते हुए कहा कि संविधान प्रत्येक देशवासी को सशक्त बनाने के साथ-साथ जागरूक भी करता है। भारतीय संविधान पर विस्तृत प्रकाश डाला और किस तरह संविधान सभा द्वारा संविधान तैयार किया गया।

संविधान की विशेषताओं और उद्देश्य को जिला कलेक्टर ने रेखांकित करते हुए आ ान किया कि प्रत्येक

संविधान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में संबोधित करते जिला कलेक्टर किशोर कुमार

देशवासी को भारतीय संविधान के प्रति जागरूक रहना चाहिए। उन्होंने कहा हस्तलिखित संविधान होने के साथ-साथ कठोर और लचीला भी है। इसमें सभी वर्गों और धर्मों का समावेश करते हुए सभी का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रतनलाल भार्गव ने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता के पश्चात संविधान सभा द्वारा संविधान तैयार करने की कार्यवाही शुरू की गई। इसमें सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व लिया गया। सभी की भावनाओं का ध्यान रखते हुए संविधान तैयार किया गया है। उन्होंने आव्हान किया कि भारतीय संविधान में दर्शाये गये अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहे तथा मूल कर्तव्यों को अपने जीवन में अपनाएं।

एडीएम शिवपाल जाट ने सभी को संविधान दिवस की शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए बताया कि किस तरह भारतीय संविधान हमें सशक्त बनाता है। संविधान में जिन अनुच्छेदों और सूचियों का उल्लेख किया गया है, वह प्रत्येक देशवासी के जीवन में उपयोगी है। शिक्षा के साथ-साथ रोजगार प्राप्ति और जीवनयापन में भी भारतीय संविधान की महत्ता और उपयोगिता सदैव बनी रहेगी। इस दौरान संगोष्ठी और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी हुई। संगोष्ठी में वरिष्ठ अध्यापक अभिषेक कौशिक एवं विद्यार्थी सुश्री खुशबू द्वारा भारतीय संविधान पर आधारित संबोधन दिया गया। भारतीय संविधान पर आधारित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी करवाई गई, जिसमें पीएम श्री जवाहर नवोदय विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। भारतीय संविधान की उद्देशिका के पाठन एवं राष्ट्रगान से कार्यक्रम का समापन हुआ। मंच का संचालन वरिष्ठ अध्यापक अभिषेक कौशिक ने किया।

साहित्य साधना सम्मान 2024 से पुरस्कृत

निवाई, देववाणी संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार में संलग्न चौगाई की नवोदित युवा प्रतिभा असिस्टेंट प्रोफेसर श्यामसुन्दर पारीक को श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय निम्बाहेडा में विधानसभा सदस्य व भूतपूर्व केबिनेट मंत्री श्रीचन्द कृपलानी व कुलपति प्रो. तारांशकर पाण्डेय द्वारा राजस्थान के प्रथम श्रीकल्ला राठौड़ युवा साहित्य साधना सम्मान 2024 से सम्मानित किया गया है। विज्ञान भारती नई दिल्ली द्वारा सर्वश्रेष्ठ शोध-पत्र वाचन में आर्यभट्ट सम्मान से पुरस्कृत श्याम सुन्दर पारीक वनस्थली विद्यापीठ के संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग में डॉ. भेषराज शर्मा के मार्गदर्शन में प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों पर शोधकार्य कर रहे हैं। इससे पहले भी पारीक भूतपूर्व शिक्षा मंत्री व वर्तमान विधान सभाध्यक्ष अध्यक्ष वासुदेव देवनानी द्वारा पुरस्कृत हो चुके हैं। संस्कृत भाषा और वैदिक संस्कृति के मूलाधार प्राचीन मन्दिर व स्मारकों पर अनुसंधान के क्रम में पारीक ने हाल ही में निवाई के प्राचीन श्री गोपीनाथ मन्दिर पर भी एक लघु शोध पत्र सम्पादित किया हैं। प्रोफेसर श्यामसुन्दर पारीक ने सरल मानक संस्कृत कार्यशाला, संस्कृत प्रतिभा सम्मान, महिला संस्कृत शिक्षा, बालक्रीड़ा पर आधारित संस्कृत शिक्षण, रचनात्मक शिक्षण जैसी अनेक नवाचार रौचक शिक्षण गतिविधियों के माध्यम से देववाणी संस्कृत भाषा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किए हैं।

संविधान दिवस पर सेमिनार का आयोजन

बौली-बामनवास। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सवाई माधोपुर के निर्देशानुसार 26 नवंबर को संविधान दिवस पर एसडीआर केंद्र जिला न्यायालय परिसर में सेमिनार का आयोजन किया गया। आयोजित सेमिनार की अध्यक्षता पारिवारिक न्यायालय के न्यायाधीश गिरीश कुमार अग्रवाल ने की। सेमिनार में पोक्सो न्यायालय की न्यायाधीश मीनाक्षी जैन एवं विशिष्ट न्यायाधीश एससी एसटी बंसीलाल द्वारा भारत के संविधान में मौलिक अधिकारों व कर्तव्य के संबंध में जानकारी दी।

जिला विधिक सेवा सचिव समीक्षा गौतम ने लोकतांत्रिक सिद्धांतों का सम्मान करना एवं मर्यादा बनाए रखने की प्रेरणा दी। पैनल अधिवक्ता अभय कुमार गुप्ता व दास सिंह ने भारत के संविधान पर अपने विचार रखें। सेमिनार में मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट आशुतोष सिंह आढा, अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट गार्गी चौधरी, विशिष्ट न्यायाधीश एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट राजवीर कौर ने भी संविधान पर अपने विचार व्यक्त किए।

व्यापारियों के प्रतिनिधि मंडल ने की चोरों को पकड़ने की मांग

किशनगढ़ बास। बीती रात्रि को मेन बाजार की दो प्रमुख दुकानों से अज्ञात चोर नगदी व छुटपुट सामान को उठा ले गए। दोनों ही दुकानों में चोरों ने दुकानों के पीछे से छत पर घुसकर अंदर प्रवेश किया और दुकान के गले में रखी नगदी को चुरा ले गए। दुकानों में चोरी की सूचना पर पुलिस ने पहुंचकर जांच की।

व्यापार महासंघ अध्यक्ष परमानंद लखयाणी ने बताया की सुबह दुकान मालिक महेश ने फोन पर सूचना दी कि

- किशनगढ़ बास की दो दुकानों में छत से उतर कर घुसे चोर गल्ले से निकाल लें गए नगदी

दुकान के पीछे से बीती रात्रि को चोर घुसकर दुकान से नगदी व समान चोरी करके ले गए। व्यापारियों की सूचना पर व्यापार महासंघ के प्रतिनिधि थानाधिकारी जितेंद्र सिंह शेखावत से मिले और चोरों

चोरी की घटना को लेकर थाना अधिकारी से वार्ता करते प्रतिनिधि।

को पकड़ने कि मांग की।कपड़ा व्यापारी महेश पुत्र स्व सीताराम अग्रवाल ने बताया वह सुबह दुकान खोलने पहुंचा तो देखा कि दुकान के अंदर का ऊपर का दरवाजा खुला हुआ है और दुकान का गले में रखे रुपए नहीं है। गले में 1000 से 1200 थे जो चोर चोरी कर ले गए। इसी प्रकार परचून व्यापारी महेश गुप्ता पुत्र रोहताश गुप्ता नुरनगर वालों ने बताया कि दुकान खोलकर देखा तो सामान फैला हुआ मिला और दुकान का दरवाजा पीछे से खुला हुआ था चोर गले में रखें 500 से 700 रुपए ले गए।थाना प्रभारी से मिलने पहुंचे व्यापार महासंघ अध्यक्ष परमानंद लखयाणी हरमेश खुराना मदनलाल अग्रवाल विनय गोयल उर्फ टीटू जनेश भूटानी प्रभु दयाल सिंधी संतोष अग्रवाल तारा चंद बत्रा सहित व्यापारियों को थाना प्रभारी जितेंद्र सिंह शेखावत ने आश्वासन दिया कि बाजार में पुलिस गस्त बढाई जाकर चोरों को चिन्हित कर पकड़ा जाएगा।

गौवंश अधिनियम का आरोपी गिरतार

पावटा। प्रागपुरा थाना पुलिस ने वांछित अपराधियों की गिरतारी हेतु चलाये जा रहे विशेष अभियान के तहत गौ वंश अधिनियम मे दो साल से फरार चल रहे अभियुक्त को गिरतार किया है। पुलिस अधीक्षक कोटपुतली बहरोड राजन दुष्यंत ने बताया कि जिले मे वांछित अपराधियों की गिरतारी हेतु चलाये जा रहे विशेष अभियान को सफल बनाने के लिए प्रभावी कार्यवाही करते हुए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक वैभव शर्मा के निर्देशन एंव वृत्ताधिकारी वृत्त विराटनगर शिप्रा राजावत के सुपरविजन व प्रागपुरा थाना प्रभारी राजेश कुमार के नेतृत्व मे थाना प्रागपुरा पर गठित टीम ने प्रकरण मे दो साल से फरार आरोपी की हर संभावित स्थानो पर सरगर्मी से तलाश करते हुए अपनी सूझबुझ से जानकारी हासिल करते हुए पतालगाया किा आरोपी द्वारा स्कॉर्पियो गाडी पर गलत नंबर प्लेट लगाकर अपराध कारित किया था। स्कॉर्पियो गाडी के चेचिस व इंजन नंबर के आधार पर अभियुक्त अलीश खान पुत्र कल्लू खान उम्र 27 वर्ष निवासी जी-, 238 बोबे योजना पुलिस थाना महावीरन गर कोट शहर को प्रोडक्शन वारंट पर गिरतार किया गया है।

घुमन्तु समुदाय (विमुक्त, घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु) सहायता शिविर आज

कोटपूतली। जिला कलक्टर के निर्देशानुसार 27 नवम्बर बुधवार को स्थानीय पंचायत समिति में प्रातः 09.30 से सायं 06 बजे तक घुमन्तु समुदाय (विमुक्त, घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु) सहायता शिविर का आयोजन किया जावेगा। जिसके तहत घुमन्तु समुदाय के व्यक्तियों को आवश्यक दस्तावेजों एवं अन्य बुनियादी सुविधाओं सहित राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित किया जावेगा। घुमन्तु समुदाय (विमुक्त, घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु) के आवश्यक दस्तावेज जैसे वोटर आईडी, आधार कार्ड, जनाधार कार्ड, जाति प्रमाण पत्र, जाति पहचान पत्र, मूल निवास प्रमाण पत्र, राशन कार्ड आदि बनाने एवं अन्य सुविधायें उपलब्ध कराने के लिए शिविर लगाया जायेगा। शिविर में अधिकारियों को कार्य आवंटित किये गये है। जिनमें

- पंचायत समिति कोटपूतली में प्रातः 09.30 से सायं 06 बजे तक होगा आयोजने

वोटर आईडी कार्य सहायक निर्वाचक अधिकारी तहसीलदार रामधन गुर्जर, आधार कार्ड / जनाधार कार्ड प्रोग्रामर मनोज, राशन कार्ड प्रवर्तन निरीक्षक अमित यादव, जाति प्रमाण पत्र एवं घुमन्तु पहचान प्रमाण पत्र व मूल निवास प्रमाण पत्र तहसीलदार रामधन गुर्जर, स्वास्थ्य- झुग्गी-झोपडियों में रहने का कारण त्वचा संबधी रोग, कुपोषण संबंधित समस्यायें, तत्काल चिकित्सा सहायता नहीं मिलने की समस्याओं को देखते हुये मुख्य दवाईयों के मेडिकल किट की उपलब्धता बीसीएमओ डॉ. पूरण चंद गुर्जर, उक्त समुदाय के आवासहीन व्यक्तियों को नि:शुक्ल भूमि आवंटन एवं प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत आवंटित भूमि पर आवास की व्यवस्था हेतु आवश्यक कार्यवाही करवाना विकास अधिकारी/आयुक्त नगरपरिषद व राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजना तथा पालनहार, वृद्धा पेंशन, विधवा पेंशन, विकलांग पेंशन आदि योजनाओं में पात्रता होने पर नियमानुसार जोडना व आवेदनकर्ताओं का पंजीकरण, विभिन्न कार्य व प्रमाण-पत्र जारी करने का रिकॉर्ड निर्धारित प्रपत्र में संधारित करने का कार्य सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग उत्तरादायी होगें। उक्त शिविर के नोडल अधिकारी तहसीलदार कोटपूतली व सहायक नोडल अधिकारी विकास अधिकारी कोटपूतली रहेंगें।

नवलपुरा ने चौमू को 70 रन से हराकर जीत हासिल की

मनोहरपुर । राज नवलपुरा आरपीएल सीजन 4 प्रेजेंट में क्रिकेट एक्सपर्ट का नया चैंपियन बना कल प्रेजेंट बाय आरपीएल सीजन जो की टीम राज नवलपुरा वेयर आदिल खान की संयुक्त तत्वाधान में आयोजित हुआ था इसका समापन क्रिकेट एक्सपर्ट के डायरेक्टर आदिल खान मुख्य अतिथि रहा। व पंचायत समिति सदस्य बनवारी लाल यादव तथा सीता देवी सरपंच नवलपुरा की अध्यक्षता में कार्यक्रम का समापन हुआ टीम राज नवलपुरा आईकेएम के कप्तान राज यादव ने ठोस जीतकर पहले बल्लेबाजी चुनी, राज नवलपुरा ने चोमू को 70 रन से हराकर चैंपियन बना राज नवलपुरा टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 170 रन बनाए जवाब में चोमू टीम 98 रन बनाकर के आउट हो गई नेम सिसोदिया व करण सिंह ने राज नवलपुरा की ओर से अर्धशतकीय पारी खेली आयोजक राज यादव जिला उपाध्यक्ष भाजपा युवा मोर्चा ने सभी अतिथियों का सम्मान किया और इस मौके पर राज यादव ने आदिल खान का विशेष आभार प्रकट किया कि इस टूर्नामेंट में संपूर्ण रूप से प्रमुखता से उन्होंने टूर्नामेंट को सफल बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई इस मौके पर आदिल खान ने युवाओं को खेल के प्रति सटकता से आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया व राज यादव के साथ भविष्य में कंधे से कंधे मिलाकर के काम करने का वादा किया इस मौके पर बनवारी लाल यादव ने भी सभी खिलाड़ियों का उत्साह वर्धन किया अंत में स्थानीय ग्राम पंचायत के सरपंच सीता देवी ने सभी अतिथियों का बार-बार सम्मान प्रकट करते हुए इस टूर्नामेंट में आदिल खान फेंटेसी एक्सपर्ट एचडी ग्रुप वह स्काई बोर्ड एनर्जी ग्रुप ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई साथी श्री श्याम डीजे साउंड के मालिक सुभाष यादव श्री शक्ति टेंट हाउस के मालिक मोहन यादव का भी सम्मान किया।

सदस्यता अभियान को लेकर हुई बैठक, 50 सक्रिय सदस्यों के फॉर्म प्रभारी को सौंपें

किशनगढ़ बास। संगठन सदस्यता पर्व अभियान के अंतर्गत भारतीय जनता पार्टी किशनगढ़ बास मंडल की बैठक अनाज मंडी स्थित भाजपा कार्यालय पर आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष उमेश वशिष्ठ ने की एवं विशिष्ट अतिथि सदस्यता अभियान के विधानसभा प्रभारी अनूप यादव रहे।

मंडल महामंत्री मनोज मित्तल ने बताया कि सदस्यता अभियान के अंतर्गत किशनगढ़ बास मंडल में बैठक का आयोजन किया गया। किशनगढ़ बास मंडल के 50 सक्रिय सदस्यों के फॉर्म विधानसभा प्रभारी अनूप यादव को सौंपे गए।

बैठक के अंतर्गत सदस्यता अभियान के विधानसभा प्रभारी अनूप यादव ने भाजपा किशनगढ़ बास मंडल के सदस्यों को संबोधित किया एवं किशनगढ़बास मंडल को सदस्यता

प्रभारी को सक्रिय सदस्यता फॉर्म सौंपते भाजपा संगठन पदाधिकारी।

- सदस्यता अभियान में किशनगढ़ बास के प्रथम आने पर कार्यकर्ताओं को दी बधाई

अभियान में सर्वप्रथम कार्य करने पर बधाई दी। बैठक के बाद संविधान दिवस के अवसर पर बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के प्रतिमा पर पुष्पांजलि की गई और संविधान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष राजेश बटवाड़ा, जिला मंत्री आशा गुप्ता, महामंत्री जय सिंह सरदार, महामंत्री मनोज मित्तल, एसटी मोर्चा अध्यक्ष रामसिंह परमार, ओबीसी मोर्चा अध्यक्ष शिवहरी गुर्जर, ,प्रकाश प्रजापत, जगदीश यादव, मंडल उपाध्यक्ष जसवंत यादव, युवा मोर्चा महामंत्री हीरु हरवानी, सौदान सैनी, कालू राम यादव, सुरेश भेड़ी, गिर्राज गुर्जर ,निहालचंद, एम पी एस रामस्वरूप, विनोद मिश्रा , रामसुगन गुर्जर, युवा मोर्चा अध्यक्ष तेजसिंह सैनी, निरंजन लाल सहित अनेक भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहे।

सार-समाचार

टूटी नालियों से परेशान वार्डवासी

पावटा। नगरपालिका पावटा प्रागपुरा की अनदेखी के कारण पिछले काफी समय से टूटी व चोक पडी नालियों के कारण स्थानीय लोगों को परेशानी का सामना करना पड रहा है। पावटा कस्बे के अंतर्गत आने वाले सीसी रोड को बने कई साल बीत गए है। इसके कारण सीसी रोड कई जगह से जर्जर हो गई। सडक निर्माण के समय बनाई गई नालियां टूट गई हैं। इस कारण वार्डवासियों व वाहन चालकों को परेशानी का सामना करना पड रहा है। जर्जर रोड और टूटी नालियों को दुरुस्त कराने के लिए क्षेत्रीय लोग कई बार नगरपालिका के अधिकारियों से शिकायत कर चुके हैं, परंतु अभी तक न तो सीसी रोड का निर्माण कराया गया है और न ही नालियां बनवाई गई हैं। कई जगह नालियां टूटी हुई हैं तो कई जगह गंदगी से नालिया चोक है। जिनसे गंदा पानी सडकों पर बह रहा है। पावटा कस्बे के कई वार्डो मे पालिका द्वारा मिलने वाली सुविधाएं अभी भी नदारद हैं। क्षेत्र की सबसे बडी समस्या नालियों की साफ-सफाई और टूटी नालियों की है। कई महीनों से सफाई न होने के कारण इससे उठने वाली बदबू से वार्ड के लोग परेशान हैं।वार्डवासियों की मानें तो खुद ही नालियों की सफाई करते हैं। इसके अलावा वार्डवासी कई बार टूटी नालियों की सफाई और मरमत की मांग पार्षद सहित अन्य जनप्रतिनिधियों से कर चुके हैं, लेकिन कोई सुध नही लेता। आज तक किसी ने भी समस्या को हल करने की कोशिश नहीं की।- उल्लेखनीय है कि नगरपालिका की अनदेखी के कारण कस्बे के लगभग अधिकतर वार्डो में बनी सीसी रोड खस्ता हालत में हैं और नालियां टूटी पडी हैं। वाहनों के आवागमन के कारण नालियां गड्ढे में तब्दील हो गई हैं। नालियां गहरी और चौडी होने के कारण बुजुर्ग और महिलाओं को निकलने में परेशानी हो रही है, वहीं वाहन चालकों की बाइकें नालियों में फंसकर गिर रही हैं। इससे वाहन चालक चोटिल हो रहे हैं।

ज्ञापन सौंपा

नारायणपुर । उपखंड क्षेत्र के गांव कानपुरा में एसबीआई ग्राहक सेवा केन्द्र के संचालक के साथ 7 दिन पहले हुई लूट की घटना का पुलिस द्वारा आजतक खुलासा नहीं किए जाने पर मंगलवार को आक्रोशित ग्रामीणों ने तहसीलदार को उपखंड अधिकारी के नाम ज्ञापन देकर शीघ्र लूट की घटना का खुलासा करने की मांग की हैं। ग्रामीणों ने बताया कि 19 नवंबर को रात 9.20 पर बाइक पर सवार होकर आए दो नकाबपोश बदमाशों ने एसबीआई ग्राहक सेवा केन्द्र संचालक नंदूराम सैनी पर चाकू से वार कर 3.17 लाख रुपए की नगदी लूटकर ले गए थे। जिससे लोगों में रोष बना हुआ है। ग्रामीणों ने बताया कि पुलिस द्वारा जल्दी ही लूट की घटना का खुलासा नहीं किया गया तो समस्त ई-मित्र संचालक और बैंकिंग क्षेत्र के ग्राहक सेवा केंद्र संचालकों द्वारा कार्य बहिष्कार कर ग्रामीणों के साथ 28 नवंबर को पुलिस प्रशासन के खिलाफ धरना प्रदर्शन किया जायेगा। इस मौके पर कानपुरा लॉज सरपंच लोकेश रैया, रामकिशन बाज्या, शिवराम सैनी, छाजूराम सैनी, राकेश दायमा, दिनेश सैनी, मिठ्ठन लाल, मंगलराम, नाथूराम, दशरथ सिंह, कैलाश जाट, मनोहर सैनी, मुकेश मीणा, रोहिताश सिंह सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

प्रश्नोत्तरी व वाद - विवाद प्रतियोगिता हुई

दूदू । संविधान दिवस (26 नवम्बर 2024) के अवसर पर मंगलवार को जिला प्रशासन व सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी और प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भारतीय संविधान के महत्व पर वक्ताओ ने प्रकाश डाला। इस दौरान संविधान के बारे में विद्यार्थियों को जागरूक करने के लिए प्रश्नोत्तरी व वाद – विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया संविधान दिवस के अवसर पर जिला मुख्यालय स्थित रूरल पब्लिक स्कूल में संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इस अवसर पर अतिरिक्त जिला कलक्टर गोपाल परिहार ने आव्हान किया कि प्रत्येक देशवासी को भारतीय संविधान के प्रति जागरूक रहना चाहिए। जिला शिक्षा अधिकारी रेणु तँवर ने कहा कि भारतीय संविधान में दर्शाये गये अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों के प्रति भी प्रत्येक नागरिक को जागरूक रहना चाहिए । इस दौरान सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय के सहायक जनसम्पर्क अधिकारी अभिमन्यु सिंह ने संविधान दिवस की शुभकामनाएं देते हुए बताया कि भारतीय संविधान हमें स्वतंत्रता, समानता के अधिकार प्रदान कर प्रत्येक नागरिक को सशक्त बनाने के साथ – साथ गरिमापूर्ण जीवन जीने की शक्ति देता है । इस अवसर पर विद्यालय में भारतीय संविधान पर आधारित वाद – विवाद और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई ।

रजवास में मनाया संविधान दिवस

निवाई। ग्राम पंचायत रजवास में स्थित भारत निर्माण राजीव गांधी सेवा केंद्र में मंगलवार को संविधान दिवस मनाया गया। सरपंच कानाराम जाट ने डॉ. भीमराव अंबेडकर व राष्ट्रिपता महात्मा गांधी के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम की शुरुआत की। ग्राम विकास अधिकारी विनोदकुमार परिडवाल ने बताया कि भारत में संविधान दिवस 26 नवंबर को मनाया जाता है। यह दिन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि 1949 में इसी दिन हमारे देश ने अपना संविधान अपनाया था। डॉ. भीमराव अंबेडकर की 125वीं जयंती पर 2015 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संविधान दिवस मनाने की शुरुआत की थी। इसका उद्देश्य नागरिकों में संवैधानिक मूल्यों के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। इस अवसर पर संविधान सभा का आयोजन किया गया जिसमें गरीबों के उत्थान के लिए लोगों से चर्चा कर संगोष्ठी की गई। इस अवसर पर कनिष्ठ सहायक नंदकिशोर बैरवा, ई मित्र संचालक किशन चौधरी, आशा सहयोगी सुनीता गुर्जर, अनीता मीणा, सुनीता बंसीवाल व गीता देवी शर्मा आदि मौजूद थे।

बास्केटबॉल प्रतियोगिता के लिए रवाना

अलवर। अंतर विश्वविद्यालय वेस्ट जोन बास्केटबॉल महिला वर्ग की प्रतियोगिता दिनांक 26 से 29 नवंबर तक आई.एम.टी. विश्वविद्यालय, ग्वालियर में आयोजित की जा रही है। इस प्रतियोगिता में राज ऋषि विश्वविद्यालय की 12 महिला खिलाडियों की टीम प्रतियोगिता स्थल में भाग लेने के लिए रवाना हुई हैं। प्रतियोगिता में भाग लेने वाली महिला टीम का प्रशिक्षण शिविर 21 नवंबर से जी.डी. कॉलेज, अलवर पर लगाया गया था। विश्वविद्यालय की महिला टीम की कोच पायल सैनी द्वारा खिलाडिय़ों को नवीनतम तकनीक द्वारा प्रशिक्षित किया गया। कोच पायल सैनी ने बताया कि आई.एम.टी. यूनिवर्सिटी, ग्वालियर में दिविशा सिंह टीम कप्तान जेसिका योगी, करिश्मा नेगी, प्रिंस यादव, पलक शेखावत, हर्षित शर्मा, चेल्सी खंडेलवाल, पायल जोशी, संजू गुर्जर, तन्वी कँवर, सोनिया शर्मा ओर साक्षी कुल 12 महिला खिलाड़ी शामिल है। इन सभी खिलाडिय़ों को आज रेलवे स्टेशन पर नेक कमाई के फाउंडर दौलत राम हजरती, सूबेदार मंगेज सिंह, संजय खंडेलवाल, संजीव गुप्ता, संतराम यादव, संजय शर्मा, बाबूलाल शर्मा, स्नेहा खंडेलवाल, विशाल सिंह व खेल प्रेमियों द्वारा खिलाडिय़ों को शुभकामना देकर अच्छे से खेलने के लिए प्रोत्साहन दिया गया ।

कलेक्ट्रेट में प्रस्तावना का वाचन

टोंक। संविधान दिवस पर जिला प्रशासन द्वारा विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। कलेक्ट्रेट में अतिरिक्त जिला कलेक्टर रामरतन सौकरिया ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ संविधान के प्रस्तावना का वाचन किया। इसी के तहत सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय में संविधान पर आधारित प्रदर्शनी एवं संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस दौरान पीआरओ अपूर्व शर्मा ने संविधान की मूल भावना पर प्रकाश डाला, साथ ही, कहा कि विद्यार्थियों को भारत के संविधान का गहराई से अध्ययन करना चाहिए। भारतीय संविधान में अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों के प्रति भी प्रत्येक नागरिक को जागरूक रहना चाहिए। भारत का संविधान दुनिया में सबसे बड़ा लिखित संविधान है। वरिष्ठ पत्रकार भगवान सहाय शर्मा ने भारत के संविधान की विशेषताओं पर अपने विचार व्यक्त किए। वरिष्ठ पत्रकार विनोद शर्मा ने कहा कि संविधान दिवस हमारे लोकतांत्रिक मूल्यों को याद करने और संविधान की मूल अवधारणाओं का प्रसार करने का अवसर है। संविधान दिवस पर सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय में लगाई गई प्रदर्शनी का विद्यालयों के विद्यार्थियों ने अवलोकन किया। इस दौरान विद्यार्थियों ने संविधान निर्माण से संबंधित सवाल-जवाब भी किए। विद्यार्थियों के साथ आए शिक्षकों ने भारत के संविधान के बारे में छात्र-छात्राओं को विस्तार से जानकारी दी।

दो डम्पर व एक ट्रैक्टर-ट्रोली जब्त

टोंक। जिला पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान द्वारा चलाये जा रहे अभियान अवैध बजरी, पत्थर खनन/परिवहन की रोकथाम हेतु उनके निर्देशन में पुलिस थाना बरोनी व पीपलू द्वारा कार्यवाही को अंजाम दिया गया। थाना पीपलू प्रभारी राजेन्द्र ताडा ने बताया कि ग्राम गाता किशनपुरा रोड पर मुण्डिया तिराहे पर अवैध बजरी परिवहन करते हुये करीब 25 टन अवैध बजरी से भरा हुआ एक डम्पर नम्बर को जब्त किया ।

मैदान पर रोमांच से मैदान के बाहर के शानदार पलों तक दिल्ली कैपिटल्स के साथ सफर अद्भुत रहा है। इस सफर की कभी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। मैं एक युवा के रूप में यहां आया था और पिछले 9 सालों में हम एक साथ बढ़ा हैं। – ऋषभ पंत

भारतीय बल्लेबाज, दिल्ली फ्रेंचाइजी टीम को अलविदा कहते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी ▶ वैभव सूर्यवंशी

मेगा ऑक्शन में करोड़पति बने 13 साल के वैभव सूर्यवंशी को कार्टून देखने की आदत थी। उनके पिता संजीव ने बताया कि क्रिकेट में जुनून बढ़ा तो वैभव ने डोरेमोन देखना छोड़ दिया। वैभव बिहार में समस्तीपुर जिले के छोटे से गांव मोतीपुर के रहने वाले हैं। ऑक्शन में वैभव को 1.10 करोड़ रुपए की कीमत देकर राजस्थान रॉयल्स ने खरीदा। इसी के साथ वह इतिहास के सबसे युवा करोड़पति बने। उनसे पहले प्रयास रे बर्मन 16 साल की उम्र में करोड़पति बने थे। पिता ने क्रिकेटर बनाने के लिए जमीन बेची संजीव सूर्यवंशी ने को बताया, वो सिर्फ हमरा बिटवा नहीं, पूरे बिहार का बिटवा है।

क्या आप जानते हैं ?... ऑस्ट्रेलिया एकमात्र देश है जिसे अपने पहले ही टेस्ट मैच में जीत मिली, जबकि इंग्लैंड और पाकिस्तान ही ऐसे दो देश है जिन्हें दूसरे टेस्ट में जीत मिली।

एडीलेड टेस्ट के लिये टीम में बदलाव नहीं करेगा ऑस्ट्रेलिया, मार्श की फिटनेस पर नजरें : मैकडोनाल्ड

पर्थ, 26 नवम्बर। आस्ट्रेलिया के कोच और चयनकर्ता एंड्रयू मैकडोनाल्ड ने कहा है कि पहले टेस्ट में भारत के हाथों 295 रन से हारने वाली टीम में कोई बदलाव नहीं किया जायेगा हालांकि हरमनमौला मिचेल मार्श की फिटनेस को लेकर चिंतायें हैं। मैकडोनाल्ड ने बताया कि उनकी टीम छह दिसंबर से शुरू हो रहे दिन रात के टेस्ट के लिये पूर्व निर्धारित कार्यक्रम से पहले ही एडीलेड पहुंचेंगी ताकि अतिरिक्त अभ्यास कर सके।

उन्होंने क्रिकेट डॉट कॉम डॉट एयू से कहा,'' पर्थ टेस्ट के लिये जो लोग चेंज रूम में थे, वही एडीलेड में भी होंगे। बदलाव करने पर हमेशा विचार होता है लेकिन हालात के अनुसार टीम चुनी जाती है।'' सितंबर में

इंग्लैंड के सीमित ओवरों के दौरे के बाद से फिटनेस समस्या से जूझ रहे मार्श ने पहले टेस्ट में सिर्फ 17 ओवर डाले और तीन विकेट लिये। मैकडोनाल्ड ने कहा,'' मुझे नहीं लगता कि पहले टेस्ट में उसका प्रदर्शन संतोषजनक नहीं था। हमें उसकी फिटनेस पर नजर रखनी होगी।'' पिछली दस टेस्ट पारियों में 13 . 66 की औसत से ही रन बना सके मार्नस लाबुशेन का बचाव करते हुए उन्होंने कहा, खिलाड़ियों के कैरियर के उतार चढाव पर लगातार बात होती रहती है।

खराब दौर आते हैं लेकिन वह जल्दी ही फॉर्म में लौटेगा। हमें उसकी क्षमता पर यकीन है। वह ऐसा खिलाड़ी है जिसकी हमें जरूरत है।'' करारी हार के बावजूद उन्होंने कहा कि टीम का मनोबल मजबूत है। उन्होंने कहा, '' हमें इस हार की जिम्मेदारी लेनी होगी। हम कोचों को भी। इस हार के बावजूद टीम का मनोबल ऊंचा है।हमारी रणनीति सही थी लेकिन उस पर अमल नहीं हो सका।

51वीं राज्य स्तरीय शर्मा-माथुर क्रिकेट प्रतियोगिता

पीयूष की घातक गेंदबाजी से मिनर्वा क्लब की आसान जीत

जयपुर, 26 नवम्बर। बनीपार्क क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित 51वीं राज्य स्तरीय शर्मा–माथुर क्रिकेट प्रतियोगिता के अन्तर्गत आज नैना क्रिकेट एकेडमी ग्राउण्ड जगतपुरा में खेल गये उद्घाटन मुकाबले में पीयूष सैनी 26 रन पर 4 विकेट की शानदार गेंदबाजी की बदौलत मिनर्वा क्रिकेट क्लब ने मैत्री क्रिकेट क्लब को 5 विकेट से हरा करअगले राउण्ड में प्रवेश किया।

टॉस जीत कर मैत्री क्लब ने पहले बल्लेबाजी प्रारम्भ की लेकिन योगेश मीणा 28 रन नीलू शर्मा 13 रन, विमल ठाकुर 12 रन को छोड़ कर मैत्री क्लब का कोई भी बल्लेबाज मिनर्वा के गेंदबाजों पीयूष सैनी 26 रन पर 4 विकेट, पार्थ शर्मा 12 रन पर 2 विकेट, विनीत 27 रन पर 2 विकेट, विशाल शर्मा 17 रन पर 1 विकेट, नितिन बामनिया 11 रन पर 1 विकेट की शानदार गेंदबाजी के समक्ष कोई बल्लेबाज नही टीकस का और पूरी टीम 20.5 ओवर में 103 रन पर सिमट गयी। जवाबी पारी में आदित्य जांगिड 41 रन, तुषार चौधरी 13 रन, नितिन बामनिया 12 रन, अनुज वर्मा 10 रन ने मिलकर 18.1 ओवर में 5 विकेट खोकर 106 रन बना कर विजय लक्ष्य हासिल कर लिया और अनी टीम को 5 विकेट से जीत दिला दी।

इस मैच का मैनऑफ द मैच पीयूष सैनी 26 रन पर 4 विकेट मिनर्वा क्लब रहे। इससे पूर्व प्रतियोगिता का उद्घाटन राजस्थान क्रिकेट एसोसियेशन के पूर्व वरिष्ठ उपाध्यक्ष तथा जयपुर जिला क्रिकेट संघ के पूर्व अध्यक्ष व सचिव रह चुके पूर्व रणजी खिलाडी डॉ0 बी.आर. सोनी ने किया ।समारोह की अध्यक्ष ताक्लब के उपाध्यक्ष सुरेन्द्र कुमार चौबे ने की। विशिष्ठ अतिथि के रूप में सुरेन्द्र कुमार चौबे रहा। प्रतियोगिता सचिव सलीम खान सहित कई खिलाडी व खेल प्रेमी भी उपस्थित थे।

संक्षिप्तस्कोर : मैत्री क्रिकेट क्लब 103 रन ऑलआउट 20.5 ओवर में, मिनर्वा क्रिकेट क्लब 106 रन 5 विकेट खोकर 18.1 ओवर में।

संविधान की 75वीं वर्षगांठ पर निकली संविधान पदयात्रा

भारतीय संविधान हमारी राष्ट्रीय पहचान एवं विविधता में एकता का प्रतीक : राठौड़

जयपुर, 26 नवम्बर। युवा मामले एवं खेल मंत्री, राजस्थान सरकार कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने कहा कि भारतीय संविधान ने हमें एक ऐसी राष्ट्रीय पहचान दी है, जो विविधता में एकता का प्रतीक है। हमारी संस्कृति, भाषा, धर्म और क्षेत्र भले ही अलग–अलग हों, लेकिन हमारा संविधान हमें एक सूत्र में बांधता है। उन्होने कहा कि संविधान एक जीवित दस्तावेज है, जो हमें समानता, न्याय और एकता का संदेश देता है। हम सभी का यह कर्तव्य है कि इसे ओर मजबूत बनाएं और अपने जीवन में इसके सिद्धांतों का पालन करें।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ। कर्नल राठौड़ मंगलवार को संविधान दिवस के अवसर पर जयपुर के चित्रकूट स्टेडियम में आयोजित संविधान पदयात्रा में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होने संविधान के महत्व, मूल्यों, अधिकारों और कर्तव्यों को समझकर भारतवर्ष को एक सशक्त एवं समृद्ध राष्ट्र बनाने मे अपना महती योगदान देने का आ ान किया।

कार्यक्रम मे वंदे मातरम और भारत माता की जय से चित्रकूट स्टेडियम गूंज उठा कार्यक्रम में युवाओं मे जोश और देशभक्ति की भावना नजर आई। इसके साथ ही स्काउट एंड गाइड के स्वयंसेवकों ने भी कालेबेलिया नृत्य से सभी का मन मोहा। कार्यक्रम मे संविधान की थीम पर लगाए गए सेल्फ़ी बूथ भी युवाओं में आकर्षण का केंद्र रहे।

इस अवसर पर राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद के सचिव राजेंद्र सिंह सिसोदिया, नगर निगम की ज़ोनल कमिश्नर मनीषा यादव, वित्तीय सलाहकार महावीर मीणा, राजस्थान युवा बोर्ड के सदस्य सचिव कैलाश चंद पहाड़िया, राष्ट्रीय सेवा योजना के क्षेत्रीय निदेशक एसपी भटनागर, नेहरू युवा केंद्र संगठन के क्षेत्रीय निदेशक भुवनेश जैन, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के पूर्व अतिरिक्त निदेशक अरुण जोशी, खेल प्रबंधक रणविजय सिंह, अनिरुद्ध जगधारी, कोमल चौधरी, जनसंपर्क अधिकारी तेजराज सिंह, एएओ अनिल जैन नगर निगम, शिक्षा विभाग, पुलिस प्रशासन के अधिकारियों के साथ विभिन्न विधायलयों के विध्यार्थी, एनसीसी, एनएसएस, भारत स्काउट एंड गाइड, हिंदुस्तान स्काउट एंड गाइड के स्वयंसेवक, पुलिस, आरएसी, होमगार्ड के जवान, सामाजिक संगठन से जुड़े प्रतिनिधि उपस्थित रहें।

पिंक स्टार डॉक्टर्स बैडमिंटन लीग सीजन-6 टीम इवेंट्स में फ्लो केअर विजयी

जयपुर, 26 नवंबर। लीग आयोजन सचिव डॉ हनुमान खोजा ने बताया कि आज खेले गए टीम इवेंट मुकाबलों में, महिला वर्ग में प्रियंका हॉस्पिटल ने पैथोस्कोप डायग्नोस्टिक को 3–2 की से हराया। एक अन्य टाई में स्पेक्ट्रा इमेजिंग ने

प्रियंका हॉस्पिटल को 3–2 से हराया। पैथोस्कोप और स्पेक्ट्रा इमेजिंग के मैच में पाथोस्कोप 2–1 से आगे है और 2 मैच अभी बाकी हैं। लीग कॉर्डिनेटर प्रेम चौधरी ने बताया कि वरिष्ठ वर्ग में दीप हॉस्पिटल किड्स डेंटल से 2–0 से आगे है और एक मैच अभी बाकी है। फ्लो केअर डायग्नोस्टिक टीम ने जिप्सी जगुआर्स को 5–0 से हराया। एच् सी जी हिटर्स ने कदम टेक को 5–0 से हराया। एक अन्य टाई में एच सी जी हिटर्स ने सुवीरा हॉस्पिटल को हराया। कैंसर केअर क्रशरस ने सुवीरा हॉस्पिटल को 5–2 से हराया। लीग कॉर्डिनेटर डॉ श्रवण यादव ने बताया कि पिंक विनायक हॉस्पिटल और जयपुर नुक्लेअर इमेजिंग 3–3 से बराबरी पर हैं, 1 मैच अभी बाकी हैं। एन एच बी एच हॉस्पिटल ने अग्रवाल हॉस्पिटल को 6–(–1) से हराया। अग्रवाल हॉस्पिटल ने जिप्सी जगुआर्स को 4–3 से हराया। मेडिस्पा रॉयल्स ने किड्स डेंटल को 3–2 से हराया।

तीये की बैठक

अत्यंत दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि हमारी पूजनीया माताजी

श्रीमती गुलाब देवी

धर्मपत्नी स्व. श्री छीतर मल सैनी का स्वर्गवास दिनांक 25.11.2024 को हो गया है। तीये की बैठक दिनांक 27.11.2024 बुधवार को दोपहर 3:00 से 4:00 बजे तक हमारे निवास स्थान प्लॉट नम्बर 3 उत्तम नगर बान्यावाली डाबला बुजुर्ग डिग्गी रोड जयपुर में रखी गई है।

शोकाकुल:- भागचंद जी, छोटी लाल जी, (पुत्र) मुकेश, सूरज, गुड्डू, दीपक, विजय, (पौत्र) ,तुषार, निशांत, गौर व (पडपौत्र) एवं समस्त जोगी जाजम परिवार 8209496190, 6367655497

नम्बर मिलाइए 9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

भारतीय जीवन बीमा निगम के खेल महाकुंभ की रंगारंग शुरुआत

जयपुर, 26 नवम्बर। भारतीय जीवन बीमा निगम की खेलकूद प्रतियोगिता का आज शानदार आगाज जयपुर के सवाई मानसिह स्टेडियम मे हुआ। सामरोह के मुख्य अतिथि निगम के प्रबन्ध सी ई ओ व प्रबन्धक निदेशक सिद्धार्थ मोहन्ती थे। इस अवसर पर सलिल विश्वनाथ कार्यकारी निदेशक(एच.आर.डी) आदित्य गुप्ता कार्यकारी निदेशक(कारपोरेट कम्युनिकेशन) एल आई सी नार्दन जोन के जोनल मैनेजर जे .पी एस बजाज सहित निगम के अधिकारी मौजूद थे।

मोहन्ती ने खिलाड़ियों को सम्बोधित करते हुए का कि खेलकूद वह पहलू हैं जो मानव के मन व शरीर को एकीकृत रूप से समृद्ध कर सकते है, हर खिलाड़ी जो खेल मे हिस्सा लेता है वो विजेता है । उद्घाटन समारोह का प्रारम्भ खिलाड़ियों के मार्च पास्ट से प्रारम्भ हुआ व तत्पश्चात निगम ध्वज पहराकर सीईओ सिद्धार्थ मोहन्ती ने खेल प्रारम्भ होने की औपचारिक घोषणा की। नार्दन जोन के बैडमिंटन के राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी सिद्धार्थ जाखड ने खिलाडियों को खेल खेल की भावना से खेलने कि शपथ दिलाई। इस अवसर पर जाजम संस्था के राजस्थानी

लोक कलाकारो ने लोकगीत केसरिया बालम गाकर खिलाड़ियों व मेहमानो का राजस्थानी परम्परा से स्वागत किया। भारतीय जीवन बीमा निगम जयपुर मण्डल के वरिष्ठ मण्डल प्रबन्धक संजय कुमार ने धन्यवाद दिया।

चार दिनो तक चलने वाले जीवन बीमा निगम के इस वार्षिक खेल उत्सव मे कैरम, शतरंज, टेबल टेनिस, बैडमिंटन, वॉलीबॉल व एथलेटिक्स की विभिन्न एकल व सामूहिक प्रतिस्पर्धाए होगी।

इन प्रतियोगिता मे निगम के आठ जोन के करीब 450 खिलाड़ी भाग ले रहे है जिनमे कई राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय खिलाड़ियों पर खेल प्रेमियों की नजर रहेगी।

यू एस ओपन कैरम चैम्पियनशिप 2024 के रजत पदक विजेता प्रकाश गायकवाड़,कैरम के महिला वर्ग की पूर्व वर्ल्ड चैम्पियन एस. अपूर्वा व पी. निर्मला, शतरंज के ग्रांड मास्टर श्रीराम झा, स्वाति धाटे, डी.के शर्मा, मनीषा किरण । एथलेटिक्स मे कालिदास हिरवे,सुनील गोस्वामी, दीपेन्द्र कुमार व बैडमिंटन के राष्ट्रीय स्तर के खिलाडी सिद्धार्थ जाखड, टेबल टेनिस के सौगात सरकार व रोहित चक्रवर्ती सहित और भी नामी खिलाड़ी अपने खिताब बचाने के लिये पसीने बहाते नजर आयेगे। प्रतियोगिता का समापन 29 नवम्बर 2024 को होगा जिसके मुख्य अतिथि सतपाल भानू, प्रबन्ध निदेशक भारतीय जीवन बीमा निगम होगे।

भारत लौटेंगे हेड कोच गौतम गंभीर

पर्थ, 26 नवम्बर। टेस्ट जीतने के बाद टीम इंडिया के हेड कोच गौतम गंभीर व्यक्तिगत कारणों से मंगलवाल को ऑस्ट्रेलिया से स्वेध लौट आएंगे। 6 दिसंबर पर भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच दूसरा टेस्ट मैच खेला जाएगा उससे पहले ही गंभीर टीम इंडिया का फिर से ज्वाइन कर लेंगे। बीसीसीआई के एक सूत्र ने इंडियन एक्सप्रेस को बताया कि, गंभीर ने हमें सूचित किया है कि वह स्वदेश लौटेंगे और दूसरे टेस्ट मैच से पहले टीम इंडिया से जुड़ेंगे। उन्होंने व्यक्तिगत कारणों का हवाला दिया है और बोर्ड ने उनके अनुरोध को स्वीकार कर लिया है। पिंक बॉल टेस्ट 6 दिसंबर से खेला जाना है। गंभीर की गैरमौजूदगी में भारतीय टीम के सहायक कोच अभिषेक नायर और रेयान टेन डोशेट, गेंदबाजी कोच मोर्ने मोर्कल और फील्डिंग कोच टी दिलीप कप्तान रोहित शर्मा के परामर्श से ट्रेनिंग सत्रों की देखरेख करेंगे।

आम सूचना सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी अभिभाष्या श्रीमती प्रियंका खण्डेलवाल पत्नी मुकेश दुषाद पता 47-ए, पिपलोदा पार्क, किशोरपुरा रोड, हाथोज ग्राम जयपुर ने राजस्थान आवासन मण्डल में दुकान नम्बर 107, नाहरी का नाका, जयपुर की सम्पत्ति मृतक श्रीमती शान्ति देवी पत्नी स्व. श्री रामजी लाल दुषाद के द्वारा निष्पादित जरिये रजिस्टर्ड वसीयत द्वारा स्वयं के नाम आवासन मण्डल से हस्तान्तरित करवाना चाहती है, यदि किसी व्यक्ति को आपत्ति हो तो 7 दिवस में अधोहस्ताक्षरकर्ता से सम्पर्क करें।
जयपुर (एन.के. गुप्ता) एडवोकेट
दिनांक-25.11.2024 मो.नं. 98282272811

आम सूचना हर आम व खास एवं सर्वसाधारण को इस विज्ञप्ति द्वारा सूचित किया जाता है कि मेरे अभिभाष्य रहीम उल्लाह पुत्र अजीज उल्लाह मूल निवासी 01, गोलीमार गार्डन, रामगढ रोड, दरबार होटल, जयपुर, राजस्थान भारत का प्रतिष्ठित व्यक्ति है तथा और मेरे अभिभाष्य का पुत्र आरिफ उल्लाह (आधार नम्बर 3053 5857 0728) मेरे अभिभाष्य के कहने में नहीं है। इसलिये अब मेरा अभिभाष्य रहीम उल्लाह अपने पुत्र आरिफ उल्लाह को आज से अपनी जायदाद/सम्पत्ति से पूर्णत बेदखल करता है। इसलिए भविष्य में आरिफ उल्लाह द्वारा किसी भी आम व खास के साथ किये जाने वाले हर प्रकार के लेन-देन व कृत्य की जिम्मेदारी स्वयं आरिफ उल्लाह की व्यक्तिगत होगी। मेरे अभिभाष्य व मेरे अभिभाष्य के परिवार का अब आरिफ उल्लाह से कोई सम्बन्ध व सरोकार नहीं है। हर आम व खास सूचित रहे।
अशोक कुमार (एडवोकेट) मो. 6375422509

खोया पाया

मेरे प्लॉट नं. 89, केशर वाटिका मांचवा कालवाड़ रोड जयपुर (राजहंस कॉ. हा. सो.लि.) के मूल कागजात खो गये, मिलने पर सूचित करें- प्रेमसिंह-9982706086

मेरे आवास संख्या 264/113, प्रताप नगर सांगानेर, जयपुर का मूल डिमांड पत्र एवं डिमांड की रसीद कहीं गिर/गुम गई है मिलने पर सूचित करें-राधा देवी-7976109309

AUCTION FOR SALE

Salvage disposable of Areca Nuts 3010 kgs that have been contaminated by diesel in transit lying at **M/s Sagar Freshners Pvt Ltd.** A-14 Godam, Industrial area, Jaipur. Interested buyers can inspect from **27th Nov to 4th Dec** & participate in online auctionalong with **EMD Rs. 1,00,000/-.**
Auction will be held on 5th Dec 1:00pm to 2:00pm On our website:
www.salvagewealth.in
Auctioneer Details: Mrs. Neha Mehra 81 30 17 15 75

नाम परिवर्तन

मैंने अपना नाम रावत मोहित केदार से बदल कर मोहित रावत पुत्र श्री केदार रावत रख लिया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जावें। निवासी 1/221, नजदीक खंडेलवाल टावर, विद्याधर नगर, जयपुर-302039

मेरे पुत्र सौरभ कनवाडिया की स्कूल रिकॉर्ड में त्रुटिवश जन्म तिथि 03.02.2016 दर्ज हो गयी। जबकि जन्म प्रमाण पत्र के अनुसार इसकी वास्तविक जन्म तिथि 03.02.2015 है। सुनील कानव, ग्राम खातोलाई (विराटनगर)

I bhabar kumbar legally wedded spouse of army no 13916976K Ex NK Late manhor singh S/O ugam singh R/O 132 rajendra nagar niwaru road jaipur have changed my husband name From MANHOR SINGH To MANOHAR SINGH (DOB 15/4/1950) in other documents vide affidavit dated 25 nov 24 before district notary Jaipur

I bhabar kumbar legally wedded spouse of army no 13916976 K Ex NK Late Manhor singh S/O ugam singh R/O 132 rajendra nagar niwaru road Jaipur that have changed my name from BHABAR KUMBAR is wrong entered in service record To BHANWAR KANWAR (DOB 28/8/1954) vide affidavit dated 25 nov 24 before district notary Jaipur

हैतुक दर्शित करने के लिए सूचना
(साधारण प्रारूप)
व्यवहार प्रक्रिया संहिता पहली अनुसूची संख्यांक 4
न्यायालय अति. जिला एवं सत्र न्यायाधीश क्रम–5 स्थान जयपुर महानगर (द्वितीय)
शिवशंकर शर्मा विरुद्ध बाल शंकर शर्मा व अन्य
वाद/प्रार्थना पत्र अस्थाई निषेघाज्ञा
प्रार्थना–पत्र संख्या 79 सन् 2024
नाम देवकी शर्मा उर्फ रेखा शर्मा पुत्री स्व. ग्यारसीलाल शर्मा पत्नी श्री राजेन्द्र शर्मा जाति पता फ्लेट नं. 301, प्लाट नं. 114, उत्कर्ष अपार्टमेंट, सारथी मार्ग, डॉक्टर्स कॉलोनी वैशाली नगर, जयपुर। उक्त प्रार्थी ने इस न्यायालय में यह आवेदन किया है कि नकल संलग्न नहीं है। अत: आपको चेतावनी दी जाती है कि आप उस आवेदन के विरुद्ध हैतुक दर्शित करने के लिए दिनांक 03 माह 1 सन् 2025 को 10 ए.एम. पूर्वान्ह में स्वयं या अपने प्लीडर द्वारा जिसके सम्यक रूप से अनुदेश किया गया हो, उपसंजात हो। यदि आप ऐसा करने मैं असफल रहेंगे तो उक्त आदेश की सुनवाई और उसका निपटारा एक पक्षीय रूप से किया जाएगा। यह आज ता. 20 माह 11 सन 24 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दी गई है।
मोहर अदालत **आज्ञा से-रीडर अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश क्रम–5 जयपुर महानगर द्वितीय**

हैतुक दर्शित करने के लिए सूचना
राजस्थान किराया नियंत्रण अधिनियम 2001 के अध्याय-5 में किराए के पुनरीक्षण एवं बेदखली बाबत प्रार्थना-पत्र
न्यायालयः किराया अधिकरण संख्या-2 (AGM-5) राज.) जयपुर महानगर प्रथम
बृजलता अग्रवाल विरुद्ध राधामोहन खण्डेलवाल,
अर्जी संख्या 59/2016, नाम राधामोहन खण्डेलवाल पुत्र श्री सुआलाल बम्ब जाति. प्रोपराईटर केवल सेल्स कारपोरेशन पता 203, रास्ता टिक्कड़मल चौकड़ी तोपखाना देश, जयपुर
प्रार्थी ने आपके विरुद्ध किराये के पुनरीक्षण/बेदखली के लिए राजस्थान किराया नियंत्रण अधिनियम 2001 के तहत एक अर्जी प्रस्तुत की है जो पंजीयन कर ली गई है। आपको इस न्यायालय में तारीख 8/1/25 माह को 10:30 बजे उक्त अर्जी का उत्तर देने के लिए उपसंजात (हाजिर) होने के लिए चेतावनी दी जाती है। आप न्यायालय में स्वयं या किसी ऐसे प्लीडर द्वारा उपसंजात हो सकते हैं जिसको सम्यक् अनुदेश दिए गए हो और जो इस अर्जी से सम्बन्धित सभी सारवान् प्रश्नों के उत्तर दे सकें या जिसके साथ कोई ऐसा व्यक्ति हो जो ऐसे सब प्रश्नों का उत्तर दे सकें। आपको यह भी निर्देश दिया जाता है कि आप उक्त दिन या इससे पूर्व 30/45 दिन के भीतर अपनी प्रतिरक्षा का लिखित साक्ष्य नोटिस की तामील होने की तारीख से दाखिल करें और उक्त तारीख पर या तामील होने के 30/45 दिन के भीतर ऐसे सब दस्तावेज जो आपके कब्जे या शक्ति में है, पेश करें जिन पर आपकी प्रतिरक्षा या दाखिल/मुजराई को दावा का प्रतिदावा आधारित है। साथ ही यदि आप किसी अन्य दस्तावेज पर चाहे वह आपके कब्जे व शक्ति में न हो, अपनी प्रतिरक्षा, मुजराई के दावे या प्रतिदावे के समर्थन में साक्ष्य के रूप में निर्भर करते हों, आप ऐसे दस्तावेज उल्लिखित समय के मय उपाबद्ध की जाने वाली सूची में प्रविष्ट करें। आपको यह भी निर्देशित किया जाता है कि आप अपने प्रतिरक्षा के और जवाब के साथ उन सभी साक्षीगण के एवं स्वयं का शपथ पत्र प्रस्तुत करें जो आपकी प्रतिरक्षा का समर्थन करते हैं तथा उन दस्तावेजों का और उस साक्ष्य का ब्यौरेवार वर्णन शपथ पत्र में किया जावें। साथ ही जिन दस्तावेजों को न्यायालय में प्रदर्शित कराना हो उन पर लाल स्याही से प्रदर्श डालकर प्रस्तुत करें और शपथ पत्र पर ए से बी, सी से डी हस्ताक्षर इत्यादि या लिखावट आदि जिसको भी प्रमाणित कराना है, का उल्लेख भी किया जावें ।आपको पुनः आगाह किया जाता है कि उक्त नोटिस की तामील होने के 30/45 दिन के भीतर आप अपना प्रतिरक्षा उपरोक्त प्रवास में न्यायालय में अंकित करें या उक्त तारीख पेशी पर प्रस्तुत कर दें। अन्यथा आपकी प्रतिरक्षा राजस्थान किराया नियंत्रण अधिनियम 2001 के तहत समाप्त हो जायेगी। आपको यह भी आगाह किया जाता है कि तारीख पेशी से पूर्व यदि आप द्वारा प्रतिरक्षा हेतु जवाब अर्जी शपथ पत्र तथा अन्य दस्तावेज प्रस्तुत किए जाते है तो न्यायालय में प्रस्तुत करने से पूर्व प्रार्थी के अधिवक्ता श्री---- को उक्त प्रतिरक्षा की और जवाब दावा शपथ पत्रों की, दस्तावेजों व अन्य साक्ष्यों की प्रति उपलब्ध करा दें। आपको सूचित किया जाता है कि यदि आप ऊपर बताई गई तारीख को इस न्यायालय में उपसंजात नहीं होंगे तो वाद की सुनवाई और उसका निपटारा आपकी अनुपस्थिति में किया जाएगा। नोटिस आज दिनांक 22/11/ 2024 को मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा से जारी किया गया है।
(मुहर) आज्ञा से,रीडर

आम सूचना मेरे अभिभाष्य पंकज कोठारी द्वारा सूचित किया जाता है कि प्लॉट नम्बर 65, उत्तरी भाग, जगन्नाथपुरी द्वितीय, त्रिवेणी के पास, गोपालपुरा बाईपास रोड, जयपुर कुल क्षेत्रफल 100 वर्गगज का मूल विक्रय पत्र 27.02.2013 मोहम्मद ईदी खान बहक श्रीमती संतोष देवी के हक में उप पंजीयक कार्यालय जयपुर षष्टम के यहां तथा मूल विक्रय पत्र 03.04.2014 को श्रीमती संतोष देवी बहक श्रीमती अनिता यादव के हक में उप पंजीयक सांगानेर प्रथम एवं मूल विक्रय पत्र 11.06.2014 को श्रीमती अनिता यादव बहक रामस्वरूप साहू के हक में उप पंजीयक जयपुर चतुर्थ के यहां निष्पादित हुए हैं उक्त तीनों असल विक्रय पत्र एवं पट्टा गुम हो गये हैं, जिसकी सूचना राजस्थान पुलिस को ऑन लाईन एल.आर. नम्बर 2278663/2024 दिनांक 31.07.2024 को दी गई है, यदि उक्त दस्तावेजता असल किसी व्यक्ति को मिले तो 7 दिवस में मुझे सूचित करें।
जयपुर (एन.के.गुप्ता) एडवोकेट
दिनांक-25.11.2024 मो.न. 9828227281

आम सूचना दि. 25.11.2024
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि Plot No. II / E / 124, Scheme Jhalana Dungri, Kacchi Basti, Phase-II, Jhalana Dungri, Jaipur का असल आवंटन पत्र क्रमांक 2768 एवं कब्जा पत्र क्रमांक 571 दिनांक 20.06.1986 भवन निर्माण स्वीकृती दिनांक 20.06.1986 एवं रजिस्ट्री रसीद लेमिनेटेड एवं क्षतिग्रस्त है, जो कि श्री कल्याण के गृह ऋण में भारतीय स्टेट बैंक आरएसीपीसी जयपुर अन्य असल दस्तावेजो के साथ रहन है। भावी क्रेता श्री ओमप्रकाश डोबोड़िया द्वारा उक्त प्लाट को पुनः भारतीय स्टेट बैंक आरएसीपीसी जयपुर में गृह ऋण हेतु रहन रखने के लिए आवेदन किया गया है उक्त यदि किसी को आपत्ति हो तो सात दिवस में संपर्क करे, बाद मियाद आपत्ति स्वीकार नही होगी। **(दीपक पारीक) अधिवक्ता, मो. 9414238509**
Email: deepakpareekadvocate@gmail.com

हैतुक दर्शित करने के लिए सूचना
(साधारण प्रारूप)
(व्यवहार प्रक्रिया संहिता पहली अनुसूची संख्यांक 4)
न्यायालय MM-18 मु.आमेर स्थान जयपुर द्वितीय
मोहम्मद हमजाह विरुद्ध इन्द्र कुमार व अन्य
वाद/प्रार्थना पत्र T.I.
प्रार्थना-पत्र संख्या - 52 सन् 2024
नाम शक्ति देवी अरविन्द गुनारी पत्नी अरविन्द विरधा गुनारी पता 170/70 सेक्टर 17, जोन 170, प्रताप नगर, सांगानेर, जयपुर
उक्त प्रार्थी ने इस न्यायालय में यह आवेदन किया है कि-
अतः आपको चेतावनी दी जाती है कि आप उस आवेदन के विरूद्ध हैतुक दर्शित करने के लिए दिनांक 28 माह 11 सन् 2024 को 10.30 ए.एम. पूर्वान्ह में स्वयं या अपने प्लीडर द्वारा जिसे सम्यक रूप से अनुदेश किया गया हो, उपसंजात हो। यदि आप ऐसा करने में असफल रहेंगे तो उक्त आदेश को सुनवाई और उसका निपटारा एक पक्षीय रूप से किया जाएगा।
यह आज दिनांक 07 माह 11 सन् 2024 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय कीमुद्रा लगाकर दी गई।
मोहर अदालत रीडर शरिस्तेदार अपर सिविल न्यायालय एवं महानगर मजिस्ट्रेट क्रम सं. 18, जयपुर महानगर द्वितीय मुख्यालय आमेर

हैतुक दर्शित करने के लिए सूचना
(साधारण प्रारूप)
(व्यवहार प्रक्रिया संहिता पहली अनुसूची संख्यांक 4)
न्यायालय MM-18 मु.आमेर स्थान जयपुर द्वितीय
मोहम्मद हमजाह विरुद्ध इन्द्र कुमार व अन्य
वाद/प्रार्थना पत्र T.I.
प्रार्थना-पत्र संख्या - 52 सन् 2024
नाम इन्द्र कुमार पुत्र कन्हैया लाल जाति...पता 120, गिरनार कॉलोनी, स्कीम नम्बर 6, मंदिर मार्ग, वैशाली नगर, जयपुर
उक्त प्रार्थी ने इस न्यायालय में यह आवेदन किया है कि- नकल संलग्न है।
अतः आपको चेतावनी दी जाती है कि आप उस आवेदन के विरूद्ध हैतुक दर्शित करने के लिए दिनांक 28 माह 11 सन् 2024 को 10.30 ए.एम. पूर्वान्ह में स्वयं या अपने प्लीडर द्वारा जिसे सम्यक रूप से अनुदेश किया गया हो, उपसंजात हो। यदि आप ऐसा करने में असफल रहेंगे तो उक्त आदेश को सुनवाई और उसका निपटारा एक पक्षीय रूप से किया जाएगा।
यह आज दिनांक 07 माह 11 सन् 2024 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय कीमुद्रा लगाकर दी गई।
मोहर अदालत रीडर शरिस्तेदार अपर सिविल न्यायालय एवं महानगर मजिस्ट्रेट क्रम सं. 18, जयपुर महानगर द्वितीय मुख्यालय आमेर

विवाद्यकों के स्थिरीकरण के लिए सम्मन
(आदेश 5 के नियम 1 और 5)
न्यायालय MM-18 मु.आमेर स्थान जयपुर द्वितीय
मोहम्मद हमजाह विरुद्ध इन्द्र कुमार व अन्य
वाद/प्रार्थना पत्र T.I.
प्रार्थना-पत्र संख्या - 49 सन् 2024
नाम शक्ति देवी अरविन्द गुनारी पत्नी अरविन्द विरधा गुनारी पता 170/70 सेक्टर 17, जोन 170, प्रताप नगर, सांगानेर, जयपुर
वादी ने आपके विरूद्ध ...के लिये वाद पंजीयत किया है। आपका इन्यायालय में तारीख 28 माह 11 सन् 24 को दिन में 10.30 एएम बजे दावे का उत्तर देने के लिये उपसंजात (हाजिर) होने के लिये वचन दिया जाता है। आप न्यायालय में स्वयं या किसी ऐसे प्लीडर द्वारा उपसंजात हो सकते हैं जिसे सम्यक अनुदेश दिए गये हों और जो इस वाद से सम्बन्धित सभी सारवान प्रश्नों का उत्तर दे सके या जिसके साथ ऐसा कोई व्यक्ति हो जो ऐसे सब प्रश्नों का उत्तर दे सके। आपको यह निर्देश भी दिया जाता है कि आप उस दिन अपनी प्रतिरक्षा का लिखित साक्ष्य दाखिल करें और उस दिन ऐसे सब दस्तावेज जो आपके कब्जे में या शक्ति में है पेश करें जिन पर आपकी प्रतिरक्षा या दाखिल/सुजराई का दावा या प्रतिदावा आधारित है। और यदि आप किसी अन्य दस्तावेज पर, चाहे वह आपके कब्जे व शक्ति में हो अपना प्रतिरक्षा या मुजराई के दावे या प्रतिदावे के समर्थन में साक्ष्य के रूप में निर्भर करते हैं तो आप ऐसी दस्तावेजों को उल्लिखित समय के बाद उपाबद्ध की जाने वाली सूची में प्रविष्ट करें।
आपको सूचित किया जाता है कि यदि आप ऊपर बताई गई तारीख को इस न्यायालय में उपसंजात नहीं होंगे तो वाद की सुनवाई और उसका निपटारा आपकी अनुपस्थिति में किया जायेगा।
यह वाद ता. 07 माह 11 सन् 24 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दिया गया है।
मोहर अदालत रीडर शरिस्तेदार अपर सिविल न्यायालय एवं महानगर मजिस्ट्रेट क्रम सं. 18, जयपुर महानगर द्वितीय मुख्यालय आमेर

विवाद्यकों के स्थिरीकरण के लिए सम्मन
(आदेश 5 के नियम 1 और 5)
न्यायालय MM-18 मु.आमेर स्थान जयपुर द्वितीय
मोहम्मद हमजाह विरुद्ध इन्द्र कुमार व अन्य
वाद/प्रार्थना पत्र T.I.
प्रार्थना-पत्र संख्या - 49 सन् 2024
नाम इन्द्र कुमार पुत्र कन्हैया लाल जाति...पता 120, गिरनार कॉलोनी, स्कीम नम्बर 6, मंदिर मार्ग, वैशाली नगर, जयपुर
वादी ने आपके विरूद्ध नकल संलग्न है के लिये वाद पंजीयत किया है। आपका इन्यायालय में तारीख 28 माह 11 सन् 24 को दिन में 10.30 एएम बजे दावे का उत्तर देने के लिये उपसंजात (हाजिर) होने के लिये वचन दिया जाता है। आप न्यायालय में स्वयं या किसी ऐसे प्लीडर द्वारा उपसंजात हो सकते हैं जिसे सम्यक अनुदेश दिए गये हों और जो इस वाद से सम्बन्धित सभी सारवान प्रश्नों का उत्तर दे सके या जिसके साथ ऐसा कोई व्यक्ति हो जो ऐसे सब प्रश्नों का उत्तर दे सके। आपको यह निर्देश भी दिया जाता है कि आप उस दिन अपनी प्रतिरक्षा का लिखित साक्ष्य दाखिल करें और उस दिन ऐसे सब दस्तावेज जो आपके कब्जे में या शक्ति में है पेश करें जिन पर आपकी प्रतिरक्षा या दाखिल/सुजराई का दावा या प्रतिदावा आधारित है। और यदि आप किसी अन्य दस्तावेज पर, चाहे वह आपके कब्जे व शक्ति में हो अपना प्रतिरक्षा या मुजराई के दावे या प्रतिदावे के समर्थन मेगं साक्ष्य के रूप में निर्भर करते हैं तो आप ऐसी दस्तावेजों को उल्लिखित समय के बाद उपाबद्ध की जाने वाली सूची में प्रविष्ट करें।
आपको सूचित किया जाता है कि यदि आप ऊपर बताई गई तारीख को इस न्यायालय में उपसंजात नहीं होंगे तो वाद की सुनवाई और उसका निपटारा आपकी अनुपस्थिति में किया जायेगा।
यह वाद ता. 07 माह 11 सन् 24 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दिया गया है।
मोहर अदालत रीडर शरिस्तेदार अपर सिविल न्यायालय एवं महानगर मजिस्ट्रेट क्रम सं. 18, जयपुर महानगर द्वितीय मुख्यालय आमेर

कार्यालय नगर परिषद, हिण्डौन सिटी, जिला करौली (राज.)

क्रमांक:-न.प.हि./2593 दिनांक: 26.11.2024

लोक सूचना

क्र.सं.	नाम	पता
1.	अशोक कुमार धाकड पुत्र श्री राधेश्याम धाकड, मोहन सिंह पुत्र श्री बीधाराम	हिण्डौनसिटी जिला–करौली (राज.)

ने कार्यालय में नीचे उल्लेखित भूमि का गैर कृषि प्रयोजन के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिवृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया हैं, अर्थात्

क्र.सं.	जिला एवं तहसील	ग्राम/कस्बा का नाम	खसरा नम्बर	क्षेत्रफल (है./ऐयर)
1.	करौली/हिण्डौन	हिण्डौन सिटी	3691/1	0.25

इसलिए इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू–राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 90–क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयाजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिघृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिवस के भीतर–2 किसी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष समर्थक दस्तावेजों के साथ अपने आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा। उपर्युक्त नियत समय के भीतर–2 किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जावेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तद्नुसार मामले का निपटारा किया जायेगा। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज दिनांक .... को जारी की गई।

आयुक्त
नगर परिषद, हिण्डौन

कार्यालय नगर परिषद, हिण्डौन सिटी, जिला करौली (राज.)

क्रमांक:-न.प.हि./2615 दिनांक: 26.11.2024

लोक सूचना

क्र.सं.	नाम	पता
1.	लक्ष्मी देवी पत्नी टीकमचंद	हिण्डौन सिटी जिला–करौली (राज.)

ने कार्यालय में नीचे उल्लेखित भूमि का गैर कृषि प्रयोजन के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिवृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया हैं, अर्थात्

क्र.सं.	जिला एवं तहसील	ग्राम/कस्बा का नाम	खसरा नम्बर	क्षेत्रफल (है./ऐयर)
1.	करौली/हिण्डौन	हिण्डौन सिटी	1794/2	0.12

इसलिए इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू–राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 90–क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयाजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिघृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिवस के भीतर–2 किसी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष समर्थक दस्तावेजों के साथ अपने आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा। उपर्युक्त नियत समय के भीतर–2 किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जावेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तद्नुसार मामले का निपटारा किया जायेगा। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज दिनांक .... को जारी की गई।

आयुक्त
नगर परिषद, हिण्डौन

'संविधान हमें अधिकारों के साथ कर्तव्य की सीख देता है'

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने ''संविधान दिवस'' कार्यक्रम में भाग लिया

जयपुर, 26 नवम्बर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार संविधान में निहित लोक कल्याण की मूल भावना को सर्वोपरि मानते हुए प्रदेशवासियों के कल्याण के लिए समर्पित भाव से काम कर रही है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने विभिन्न योजनाओं और नीतियों के माध्यम से संविधान की मूल भावना को साकार किया है।

- मुख्यमंत्री कार्यालय में आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री भजनलाल ने मंत्रियों, प्रेम चन्द बैरवा, मदन दिलावर, जोगाराम पटेल, हेमन्त मीणा, सुरेश रावत, बाबूलाल खराडी व अविनाश गहलोत तथा मुख्य सचिव सुधांश पंत, विभिन्न विभागों के अति. मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव तथा वरिष्ठ अधिकारियों के साथ भाग लिया। मुख्यमंत्री ने उपस्थित लोगों से संविधान की उद्देशिका का वाचन करवाया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने मुख्यमंत्री कार्यालय में आयोजित ''संविधान दिवस कार्यक्रम'' का दीप जलाकर शुभारम्भ किया।

शर्मा मंगलवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में आयोजित ''संविधान दिवस कार्यक्रम'' को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आज का दिन संविधान की महिमा का उत्सव और उन महान व्यक्तित्वों को याद करने का दिन है, जिन्होंने इस अद्भुत दस्तावेज का निर्माण किया। शर्मा ने कहा कि भारत का संविधान दुनिया का सबसे प्रभावी संविधान है। यह हमारे लोकतंत्र का आधार होने के साथ ही, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय का मार्गदर्शक भी है। इसमें समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के मूल्यों को प्राथमिकता दी गई है। उन्होंने कहा कि संविधान हमें अधिकार देने के साथ ही, कर्तव्यों की भी सीख देता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 26 नवंबर, 1949 को हमारा संविधान अपनाया गया था और 26 जनवरी, 1950 को ये लागू हुआ, लेकिन संविधान दिवस मनाने की शुरुआत देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने की। प्रधानमंत्री ने इस दिन को चुनकर हमें यह स्मरण कराया कि संविधान हमारे देश की आत्मा है और इसकी सुरक्षा और सम्मान हमारा प्रथम कर्तव्य है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि संविधान निर्माण में बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर और संविधान के अन्य महान शिल्पियों का अतुलनीय योगदान है

उन्होंने कहा कि संविधान दिवस पर अनुसूचित जाति, जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के कल्याण के लिए संचालित योजनाओं का अधिकतम लाभ पहुंचाने के लिए अभियान चलाने जैसे प्रयास राज्य सरकार द्वारा किए जा रहे हैं।

इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा ने कहा, हमारा संविधान केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा का प्रतिबिंब है। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने उपस्थित लोगों को संविधान की उद्देशिका का वाचन करवाया। कार्यक्रम में स्कूल शिक्षा मंत्री मदन दिलावर, विधि एवं विधिक संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल, राजस्व मंत्री हेमंत मीणा, जल संसाधन मंत्री सुरेश रावत, जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री अविनाश गहलोत, मुख्य सचिव सुधांश पंत सहित, विभिन्न विभागों के अतिरिक्त मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव, सचिव एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।

29 नवम्बर को कांग्रेस ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

नेताओं को दण्डित करें तथा हटायें तथा पार्टी को चुनावी लड़ाई के लिये उपयुक्त इकाई का रुप दें।

राहुल को आत्मनिरीक्षण करने तथा सही कदम उठाने की जरुरत है, अन्यथा पार्टी की स्थिति, वर्तमान स्थिति से भी ज्यादा खराब हो सकती है।

ऐसा प्रतीत हो रहा है कि निर्णयों को टालते जाने का समय जा चुका है तथा समय आ गया है कि पार्टी को रास्ते पर लाया जाये तता जैसा भी हो, ई.वी.एम. के मुद्द पर दो-टूक रुख अपनाया जाये।

तेलंगाना सरकार ..

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

है। पर हमने अभी तक किसी भी दानदाता से फंड हस्तांतरण के लिए नहीं कहा था क्योंकि युनिवर्सिटी को सैक्शन 80 जी के तहत आयकर से छूट नहीं मिली थी। चूंकि छूट का आदेश हाल ही में आया है, पर मुझे मुख्यमंत्री ने कहा है कि मौजूदा हालात और विवादों को देखते हुए फंड स्वीकार न किया जाए।

गौरतलब है कि 18 अक्टूबर को गौतम अडानी ने राज्य के मुख्यमंत्री रैवन्त रेड्डी को राज्य में युनिवर्सिटी बनाने के लिए 100 करोड़ रु. का चैक दिया था। तेलंगाना के मुख्यमंत्री कार्यालय ने ऐक्स पर लिखा कि ''अडानी फाउण्डेशन का एक प्रतिनिधिमंडल गौतम अडानी के नेतृत्व में मुख्यमंत्री से मिला तथा यंग इंडिया स्किल्स युनिवर्सिटी के लिए उन्होंने 100 करोड़ रु. का चैक दिया।''

इस पर राज्य में विपक्षी बी.आर.एस. ने और केन्द्र में भाजपा ने कांग्रेस पर दोहरे मानदंड का आरोप लगाया।

बी.आर.एस. के कार्यकारी अध्यक्ष के.टी. रामाराव ने ऐक्स पर लिखा कि एक ओर तो राहुल गांधी और कांग्रेस प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अडानी को ''मोदानी'' कहते हैं और उनकी दोस्ती का विरोध करते हैं लेकिन तेलंगाना में रैवत और अडानी ''रैवडानी'' दिख रहा है, क्या इसे राहुल गांधी और अडानी ''रागाडानी'' कहा जाए। उनकी पार्टी ने अडानी ग्रुप के सभी निवेशों को कैंसिल करने की मांग की, जिसमें ग्रीन एनर्जी, डेटा सैंटर्स व सीमेंट उद्योग के निवेश शामिल हैं।

भाजपा आई.टी. सैल के अमित मालवीय ने कहा, राहुल गांधी के लिए शर्म की बात है कि उनकी अपनी पार्टी के मुख्यमंत्री, अडानी की बात आए तो राहुल को तवज्जो नहीं देते, भले ही राहुल गांधी दिन भर अडानी-अडानी चिल्लाते रहें।

सोरेन 28 नवम्बर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जे.एम.एम. ने राज्य के विधान सभा चुनावों में 81 में से 34 सीटें तथा कांग्रेस ने 16 सीटें जीती हैं। महागठबंधन ने कुल 56 सीटें जीती है तथा 44.33 प्रतिशत वोट हासिल किये हैं। महागठबंधन में शामिल आर.जे.डी. ने 4 तथा सी.पी.आई. (मार्क्सवादी लेनिनवादी) ने 2 सीटें जीती हैं। भाजपा ने इस चुनाव में 21 तथा उसके नेतृत्व वाले नैशनल डेमोक्रेटिक अलांयस (एन.डी.ए.) ने कुल 24 सीटें जीती हैं।

'पूर्व सी.जे.आई. चन्द्रचूड ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जबकि प्रतिद्वंदी खेमे ने जवाबी याचिका दायर की। सुप्रीम कोर्ट ने विधान सभा स्पीकर राहुल नारवेकर से ''डिस्क्वालिफिकेशन'' याचिकाओं पर निर्णय लेने को कहा। इस वर्ष जनवरी में, स्पीकर ने शिंदे घटक को ''असली शिवसेना'' घोषित कर दिया।

राउत के आरोपों पर प्रतिक्रिया देते हुए, पूर्व सी.जे.आई. ने आगे कहा, ''यह तर्क हमेशा दिया जा सकता है कि सुप्रीम कोर्ट सुनवाई के लिए महत्वपूर्ण संवैधानिक केस क्यों नहीं ले रहा है, जो बीस वर्षों से लंबित है? या, क्यों एक विशेष केस की सुनवाई नहीं की गई है। सुप्रीम कोर्ट की मैनपावर सीमित है और इसमें बैलैंस करना पड़ता हैं।''

अपने कार्यकाल के संदर्भ में बोलते हुए चंद्रचूड़ ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने इलैक्टोरल बॉण्ड्स, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी केस, इलाहाबाद हाईकोर्ट के आदेश के तहत मदरसों को बंद करने, सिटिजनशिप एक्ट के सैक्शन 6-ए की वैधता, जैसे महत्वपूर्ण केसों में फैसले दिए।'' क्या यह कम महत्वपूर्ण था।'' पूर्व सी.जे.आई. ने आगे कहा, ''हम उस एजेंडा पर नहीं चलते, जो दूसरे हमारे लिए तय करते हैं।''

बांग्लादेश में इस्कॉन ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हिंदू समुदाय के लोगों और चटगांव विश्वविद्यालय के प्रोफेसर कुशाल बरन पर भी हमला हुआ है। इस हमले में वो गंभीर रूप से घायल हो गए है। कई लोगों को अस्पताल में भी भर्ती कराया गया है।

चिन्मय प्रभु की गिरफ्तारी के बाद इस्कॉन ने एक्स पर एक पोस्ट किया। जिसमें में कहा, हमें चिंताजनक खबर मिली है कि इस्कॉन बांग्लादेश के प्रमुख नेता चिन्मय कृष्ण दास को ढ ाका पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। इस्कॉन भारत सरकार से तुरंत कदम उठाने और बांग्लादेश सरकार से बात करने की अपील करता है। हम चाहते हैं कि बांग्लादेश सरकार चिन्मय कृष्ण दास को जल्द रिहा करे।

बता दें कि, इसी साल 30 अक्तूबर को बांग्लादेश में राष्ट्रीय ध्वज का अपमान करने के आरोप में देशद्रोह अधिनियम के तहत चिन्मय कृष्ण दास प्रभु समेत 19 लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया था। इस मामले में दो लोगों को गिरफ्तार भी किया जा चुका है।

आरोप है कि 25 अक्तूबर को चटगांव के लालदीघी मैदान में सनातन जागरण मंच ने आठ सूत्री मांगों को लेकर एक रैली की थी। इस दौरान एक चौक पर स्थित आजादी स्तंभ पर कुछ लोगों ने भगवा ध्वज फहराया था। इस ध्वज पर आमी सनातनी लिखा हुआ था। इसे लेकर चिन्मय कृष्ण दास पर राष्ट्रीय झंडे की अवमानना व अपमान करने का आरोप लगाया गया है।

जे.डी.सी. आनंदी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

के गिरफ्तारी वारंट जारी किए। परिवादी की ओर से आयोग को बताया गया कि उपभोक्ता आयोग ने उसके मामले में 10 नवंबर 2023 को जे.डी.ए. को निर्देश दिया था कि वह उसकी जमा कराई गई राशि 2,02,613 रुपए व इस राशि पर नौ प्रतिशत ब्याज सहित रकम लौटाए। इसके अतिरिक्त, परिवादी को हुई परेशानी के लिए 40 हजार रुपए अलग से दे, लेकिन विपक्षी ने आयोग के आदेश की पालना नहीं की। इस पर परिवादी ने 25 जनवरी 2024 को उसे कानूनी नोटिस भी भेजा। इसके बाद भी विपक्षी ने आयोग के आदेश की पालना नहीं की है। विपक्षी का ऐसा करना आयोग के आदेश की अवमानना करना है। इसलिए आदेश की पालना करवाई जाए।

गौरतलब है कि आयोग ने पूर्व में जे.डी.सी. के जमानती वारंट जारी किए थे, लेकिन आयोग के आदेश की पालना नहीं की गई। ऐसे में अब आयोग ने जे.डी.सी. के गिरफ्तारी वारंट जारी किए हैं।

सड़कों पर उतरे ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इमरान खान की पार्टी पी.टी.आई. के समर्थक इस्लामाबाद के डी-चौक स्थल की ओर जाने वाले रास्ते में लगाए गए अवरोधों को हटा रहे हैं। 'रेडियो पाकिस्तान' ने बताया कि सोमवार देर रात इस्लामाबाद में श्रीनगर राजमार्ग पर एक वाहन द्वारा टक्कर मारे जाने से पाकिस्तान 'रेंजर्स' के चार अधिकारियों की मौत हो गई।

कनक भवन के मालिकाना हक से जुड़े ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

राज्यों के भारत में विलय होने के पश्चात सरकारी संपत्ति बन गई थी। वहीं रामबाग, लिलिपूल और उसके आसपास की संपत्ति ''कोवोनेंट'' (राजस्थान का भारत में विलय होने से जुड़ी संधि) के अनुसार राजपरिवार की संपत्ति है।

कनक भवन के मालिकाना हक के लिये रामशरण गुप्ता व अन्य द्वारा दायर विशेष अनुमति याचिका में सुप्रीम कोर्ट ने वर्ष 2017 में आदेश दिये थे कि कनक भवन के मामले में हाईकोर्ट या कोई भी अदालत किसी भी तीसरी पार्टी के आवेदन पर कोई भी मुकदमा नहीं सुनेगा। अदालत ने यह भी कहा कि बार-बार हुए मुकदमों में अदालतें कई बार कह चुकी हैं कि इस संपत्ति के बेचान के लिये अनुबंधन अमान्य है।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि रामशरण गुप्ता व अन्य ने वर्ष 2017 में सुप्रीम कोर्ट में इसी मामले में रिट याचिका भी दायर की थी, जिस पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने याचिकाकर्ताओं पर 10 लाख रुपये का जुर्माना लगाया था और स्वत: संज्ञान लेकर अवमानना याचिका भी शुरू की थी, जिसे तभी वापिस लिया गया, जब इन लोगों ने अदालत से बिना शर्त माफी मांग ली थी। वर्ष 2019 में सुप्रीम कोर्ट के 2017 के आदेश पर दायर रिव्यु याचिका भी खारिज कर दी गई।

हैरानी की बात है कि सुप्रीम कोर्ट के इतने आदेशों के बावजूद वर्ष 2022 में हाईकोर्ट में आवेदन प्रस्तुत कर कनक भवन के मूल मालिक, ब्रिगेडियर सवाई भवानी सिंह के उत्तराधिकारियों को केस में जोड़ने का आग्रह किया गया, जिसे हाईकोर्ट ने 3000 रुपए का विलम्ब शुल्क लगाकर स्वीकार कर लिया। मामले को जानने वाले वकीलों का कहना है कि यह आवेदन रामशरण गुप्ता व अन्य की ओर से इसलिये दायर किये गये, क्योंकि ब्रिगेडियर भवानी सिंह के निधन के बाद यह मामला निष्फल हो गया था।

इस वकील का यह भी कहना था कि आवेदन दायर करने का कारण यह भी था कि राजपरिवार के सदस्यों या राज्य सरकार से किसी तरह का मुआवजा ऐंठा जा सके। महाराज पदमनाभ ने सुप्रीम कोर्ट में एस.एल.पी. हाईकोर्ट द्वारा आवेदन स्वीकार करने के खिलाफ दायर की थी।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908